मूल्य : ₹ 25

तीरभुक्ति

वर्ष : 2, अंक : 1, जुलाई-सितंबर 2019

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

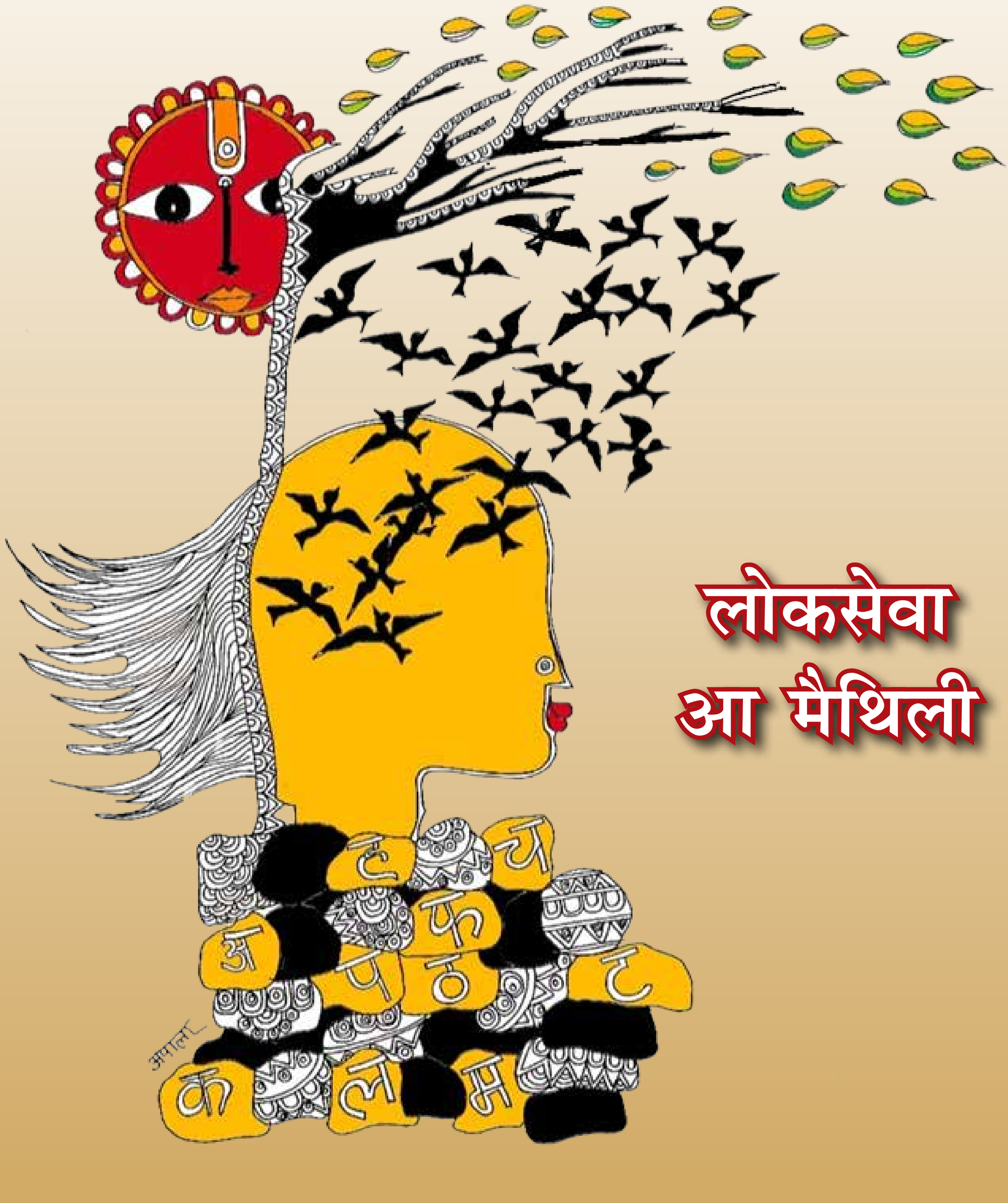

लोकसेवा आ मैथिली

बाढ़ पीड़ितों के बीच वस्त्र व सूखा राशन का किया गया वितरण

बाढ़िपीड़ित लोकनिक सेवामे अखिल भारतीय मिथिला संघ

संपूर्ण मिथिलामे आयल बाढ़ि सं मैथिलजन के भेल कष्टक प्रति संवेदनशील *अखिल भारतीय मिथिला संघ* एहि विपदाक घड़ी मे सब बंधु-बांधवक संग ठाढ़ अछि। एहि लेल संघक कार्यकारिणी सदस्यगण आर्थिक सहायता देलनि अछि आ आमजन सं सेहो सहयोगक अपील कयल गेल अछि। प्रमुख सहयोगकर्ता सबहक सूची एतय देल अछि।

अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्ली आ दरभंगा, शाश्वत मिथिला (गुजरात) आ किछु आन संस्था सभ संग मिलि, सीतामढ़ी सं सुपौल धरि विभिन्न स्थान पर राहत सामग्री सबहक वितरण कयलक, बाढ़िपीड़ित लोकनिक बीच भोजन सामग्री, वस्त्र इत्यादि वितरित कयल गेल। प्रमुख आयोजन निम्नलिखित स्थान सभ पर कयल गेल। (चित्र पछिला आवरण पृष्ठ पर देखि सकैत छी)

दरभंगा : लहटा, तुमौल, ओरिगामा, बाउर, सुहथ, अन्दौली, मिल्की, पकड़ी, कुमरौल इत्यादि।

मधुबनी : खड़क

सीतामढ़ी : कोरियाही, भिट्ठा मोड़

सुपौल : भपटियाही, बनेनिया

बाढ़िपीड़ित जन केर सहायता निमित्ते निर्धारित कोष सं राहत सामग्री वितरण पश्चात् बचल राशि मुख्यमंत्री बाढ़ राहत कोष मे सेहो समर्पित कयल जाएत। संघक किछु कार्यकारिणी सदस्यगण गोपलखा आ आन स्थान सभ पर स्थिति केर निरीक्षण सेहो कयलनीक अछि। संबंधित रिपोर्ट बादमे प्रकाशित कयल जायत।

एहि प्रयासमे अपूर्व योगदानक लेल अ.भा.मि. संघ दिल्ली आ दरभंगा शाश्वत मिथिला (गुजरात) आ आन सभ सहयोगकर्ता कें हृदय सं आभारी अछि।

–विजय चन्द्र झा
अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.

आर्थिक सहयोग केनिहार लोकनिक सूची

क्र.	नाम		राशि
1.	अखिलेश मिश्र, महासचिव, अ.भा.मि.सं.		85000
2.	शाश्वत मिथिला, गुजरात		40000
3.	एसएलएम कान्ट्रैक्टर्स प्रा.लि.	द्वारा राधानाथ झा, महासचिव, अ.भा.मि.सं.	30000
4.	जिओन प्रोमोटर्स एंड डेवलपर्स		11000
5.	प्रदीप मलिक		5000
6.	धीरेन्द्र झा, बुराड़ी, दिल्ली		11000
7.	ऋषि झा मलंगिया, दिल्ली		11000
8.	विद्यानंद ठाकुर, महासचिव, अ.भा.मि.सं.		5100
9.	विजयचंद्र झा, अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.		5100
10.	डॉ. प्रकाश झा, महासचिव, अ.भा.मि.सं.		5100
11.	अनिल झा, पटना द्वारा जितेन्द्र कुमार झा, रायपुर		5100
12.	जगन्नाथ झा, दिल्ली		5100
13.	रंजीत कुमार झा, कोंडली, दिल्ली		2500
14.	प्रभाष चन्द्र झा, दिल्ली		2100
15.	आशुतोष झा, दिल्ली		2100
16.	अमरनाथ झा, फरीदाबाद		2100
17.	शीतलकान्त झा, कोषाध्यक्ष, अ.भा.मि.संघ		2100
18.	अनिल झा, कोटला, दिल्ली		2100
19.	गणेश झा, बदरपुर, दिल्ली		2100
20.	हरिशंकर मिश्र उर्फ ललन जी, दिल्ली		1100
21.	भोला झा गुरुजी		1100

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

मूल्य : ₹ 25

वर्ष : 2, अंक : 1

जुलाई-सितंबर 2019

संरक्षक
प्रभात झा
सांसद, राज्य सभा

संस्थापक
विजयचन्द्र झा
अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.

संपादक
विनीत कुमार झा उत्पल*
ऋतेश पाठक

संपादक मंडल
रौशन झा, भास्कर ज्योति, स्वाती शाकम्भरी, डॉ. प्रवीण कुमार झा, त्रिपुरारी ठाकुर

उप संपादक
गोविन्द कुमार झा

प्रबंध संपादक
विद्यानंद ठाकुर

प्रबंधन मंडल
पं. कौशल झा, अंजनी कुमार झा, ओम चौधरी, शंकर कुमार झा

आवरण चित्र
अपाला वत्स

डिजाइनर
मणिशंकर कुमार

स्थायी पता
म.नं.-435-ई, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062

पत्राचार पता
20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001

फोन: सं.: 9911364316
प्र.: 9650461788, 9717539000
ईमेल: teerbhuktimaithili@gmail.com

*प्रेस आ पोथी अधिनियमक अधीन

(उपरोक्त सभ टा पद मानद आ अवैतनिक अछि)

विषय सूची

- संपादकीय 5

आवरण कथा
- लोक सेवा परीक्षामे मैथिलीक यात्रा / *भास्कर ज्योति* 7

पड़ताल
- मैथिल समाज, साहित्य, लैंगिक समानता आ यूपीएससीक सिलेबस / *डॉ. राजीव कुमार वर्मा* 15

विस्तार
- हमर शिक्षा पद्धति, यूपीएससी आ मैथिली भाषा / *डॉ. शेफालिका वर्मा* 18

यूपीएससी विशेष
- संघ लोक सेवा आयोग परीक्षामे मैथिली : अनुभव ओ सुझाव / *अमित कुमार झा* 23
- यूपीएससीमे मैथिली विषय कम चुनौतीपूर्ण नहि / *रतन कुमार झा* 29
- समकालीन कविताक विषय वस्तु एवं प्रवृत्ति / *सुरेन्द्र राउत* 31
- समसामयिक मैथिली कथा / *डॉ. शेखर झा* 34

वाद-विवाद-संवाद
- केहन भुलक्कड़ समाज थिकहु हम / *रमण कुमार सिंह* 36

व्यक्ति विशेष
- कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास / *अशोक कुमार झा* 37

कविता
- *शम्भुनाथ मिश्र, नीरज कुमार 'नीरज', मैथिल प्रशांत, अमरनाथ झा* 41
- *अशोक झा 'भोलीबाबा', गिरिजा नन्द मिश्र* *50*

हम किएक लिखैत छी?
- आत्मसंतुष्टि हेतु लिखैत छी / *आभा झा* 43

सोशल मीडिया
- प्राथमिक शिक्षामे मैथिली : दिल्ली सरकारक घोषणा 45

अनुवाद
- बथान (एनिमल फार्म) / *जॉर्ज ऑर्वेल*, अनुवाद : *विनीत कुमार झा* 51

पत्रिकामे प्रकाशित आलेख आ रचनामे व्यक्त विचार आ दृष्टिकोण लेखक केर छनि। संपादक अथवा प्रकाशक कें ओहिसं सहमत होयब आवश्यक नञ अछि।

दलान

आशाक किरण अछि तीरभुक्ति

मैथिली त्रैमासिक 'तीरभुक्ति' केर नव अंक प्राप्त भेल। अखिल भारतीय मिथिला संघ एकरा प्रकाशित करैत अछि। ऋतेश पाठक आ विनीत उत्पल के मेहनति देखा रहल अछि। एखन पूरा नहिं पढ़ि पयलहुं अछि, लेकिन रमाकांत राय 'रमा', सत्यनारायण प्रसाद यादव आ प्रो. अभिलाषा के लेख नीक लागल। बड्ड छोट रही त' 'मिथिला महिर' बन्न भय गेलैक, ओकर किछु अंक हमरो घर मे रहय। पप्पा सेहो मैथिली मे लिखथि रहथि, त' बहुत रास मैथिली पोथी सेहो घर मे रहय।

मुदा ओकर बाद स्तरीय मैथिली पत्र-पत्रिका के अकाले जकां पड़ि गेल। कहियो काल कोनो पत्रिका भुक्क द' अभरय ते मोन आनंदित भय जाए। लगैये बीसो बरख पहिने 'आरंभ' निकलैत छल, साइत पटना सं. तकर बाद त' ओहो नहि देखायल। हमहूं पढ़ाई आ नौकरी मे बाझि गेलौं।

एहेन मे 'तीरभुक्ति' आशा के किरण जकां सामने आयल अछि। पत्रिका एखन मुख्य रूपे सब्सक्रिप्शन आधारित अछि, ओना दसेक जगह एहनो अछि, जतय ई उपलब्ध अछि।

हमर शुभकामना -

सुशांत झा

(फेसबुक पर)

भूल सुधार

तीरभुक्तिक अप्रैल-जून 2019 वला अंकमे लिखल हमर पहिल आलेख "समकालीन मैथिली कथाक परिदृश्य'' मे अनुभवहीनताक कारणें संदर्भ-सूचीमे किछु त्रुटि रहि गेल छल, जकर गलत संदेश जाएबाक भान होइत अछि। एकर सुधार करैत हम व्यक्तिगत रूपें क्षमाक आकांक्षी छी। संशोधित संदर्भ-सूची निम्नवत अछि:-

1. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. दिनेश कुमार झा, मैथिली अकादमी, पटना 1979, पृष्ठ सं-278
2. मैथिली कथाक विकास, (सं.) डॉ. बासुकीनाथ झा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2003, मे संग्रहित आलेख *'मैथिली कथाक समकालीन स्वर'*, डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास, पृष्ठ सं. 116-121 आ 130-133).
3. मैथिली कथा संग्रह, (सं.) मोहन भारद्वाज आ अमरेश पाठक, मैथिली अकादमी, पटना, 1977, पृष्ठ सं. 84, 95, 98, 103, 113, 119, 121, 145 आ 201.
4. मैथिली गद्य गौरव, (सं.) शरदिन्दु चौधरी, शेखर प्रकाशन, पटना, 2007 मे संग्रहित आलेख *मैथिली कथाक विकासक्रम*, डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास, पृष्ठ सं. 86-89.
5. नालंदा ओपेन यूनिवर्सिटीक एम.ए. मैथिलीक सामग्री।

– सत्यनारायण प्रसाद यादव

ग्राम+पो-भौर (राजग्राम), भाया-लोहट,

जिला-मधुबनी (बिहार)

अखिल भारतीय मिथिला संघ कें अपन प्रयास सभमे अपने सभक सहयोगक अपेक्षा अछि। संस्था कें प्रदत्त वित्तीय सहयोग आयकर अधिनियमक धारा 80जी के तहत करमुक्त रहत। संघक सहयोगक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि-

बैंक खाता विवरण

नाम	:	**अखिल भारतीय मिथिला संघ** (**Akhil Bhartiya Mithila Sangh**)
खाता संख्या	:	**11084229861**
आईएफएससी कोड	:	SBIN0000691
एमआईसीआर कोड	:	**110002087**
बैंक	:	**स्टेट बैंक ऑफ इंडिया**
शाखा	:	**पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली**

संपादकीय

समाज सशक्त होयत अछि परिवार सं, परिवार सशक्त होयत अछि स्त्री सं। एहन स्थिति मे कोनो स्त्री अपन परिवार के देखय वा अपन मोन के? हुनका लग घरक जिम्मेदारी। मिथिलाक भौगौलिक स्थिति ते ई अछि जे बाढ़ि आ रौदी अलगे कोनो परिवारक स्थिति के स्थिर नहि होय दैत अछि। तकर बादो मैथिली भाषा मे स्त्री साहित्यकार अपन रचनाधर्मिता के जीवित राखने अछि, ई पैघ गप अछि। मुदा आय जे स्त्री रचनाकार मैथिली मे लिख रहल अछि, ओहि मे सं बेसी मिथिला सं बाहर रहैत छथि। हुनकर रचना मे घर-परिवार, समाज, वर्गवादी चेतना, जाति-उपजाति विखंडन आदि बहुलता सं पाओल जायत अछि।

वरिष्ठ लेखिका शेफालिका वर्माक पांति अछि, “कखनो काल आंखिमे शमशानक शून्यता उतरि जाइत अछि। ह्रदयक रक्त जमि अहिल्या बनि जाइत अछि। भूखक जंगलमे रक्त रंजित शतदल बिहुंसैत अछि। तथाकथित सभ्यता आ संस्कृतिसं अंतर क्षत-विक्षत भ' उठैत अछि।” जाहिर सन गप अछि जे एकटा स्त्रीक वेदना अहिल्या बनि के आगू आबैत अछि एही कलयुग मे सेहो आ एकटा स्त्री कोना सभ्यता आ सांस्कृतिक अवमूल्यन पर चिंतित अछि, जे देखाह द' रहल अछि।

मैथिल स्त्री रचनाकार समाज आ समाजक दशा पर व्यंग्य करहि मे कत्तो कोनो कमी नहि राखैत अछि। नंदिनी पाठक मैथिली मंच आ संगठनक दुर्दशा पर लिखैत छथि, “दस टा मैथिल मंच-मंच पर दस टा साक्षी आ एकटा झख पहिने हम बाजी, हमर मंच हिलैत अछि हम घरहि बिराजी मैथिल राज लेल चिकरू भोकरू मुल्ला-काजी।” समाज पर एना सीधा प्रहार कोनो आसान गप नहि अछि। कोनो रचनाकार अपना रचना मे यदि माइलेज लैत अछि जे हुनकर रचना के विशिष्ठ बनाबैत छैथ।

तखने सुष्मिता पाठक अपन मनक गप शब्द मे पिरो के कहैत छथि, “कल्पना आ सपना मोनमे उगैत अछि उगैत रहैत अछि सपना आ कल्पना नहि होइ जीवनमे तं जीवन आ तीमनमे की अंतर रहि जायत बदलाबक अछि एही निष्ठुर आ क्रूर समयकें निश्चये बदलबाक अछि सुरक्षित रहि सकय मनुक्खमे सपना आ लालसा अ कल्पना ते समयक बदलब आवश्यक अछि।” एकटा स्त्री रचनाकार कोना आपन समाजकें देखैत छथिन, समाज के ल' के कोन तरहे चिंतित छैथ, इ सुष्मिता पाठकक शब्द सं पता चलैत अछि।

निवेदिता झाक कविता विवरण आ प्रलापसं दूर स्त्रीक दैनिक जीवनक सन्दर्भ सं अर्थ ग्रहण करैत शब्दक जालक रूप मे आबैत अछि, जेकरा सं बाहर निकलब पाठकक लेल मोश्किल होयत अछि। “जखन प्रेममे होइत छथि तं हुनक आभासं भ' जाइत अछि इजोत समस्त संसारक आभामंडल जें कि स्त्री प्रेममे छथि कर्तव्यक पांजरसं निकालि अपना अस्तित्व सांझक आस छोडि पृथ्वीक कानमे किछु फुसफुसाइत ओढ़ी लै छथि धानी चुनरी माथ मे ललका टोप।”

ताहिना मुन्नी कामतक काविता मे मिथिलाक बेटीक जीवन, दहेजक आगि मे जरैत करेज, गर्भेमे ओकर हत्या, जन्मोपरांत ओकर उपेक्षाक दरदकें भाषा भाव देखा पड़ैत अछि। हुनकर कविता मे युग-युग सं संचित आगि के वेदना स्पष्ट होयत अछि। “बाहरबलासं नै आब घरबलासं खतरा अछि मूस बाघ बनल गीदर बनल अवारा अछि दुश्मनक डेरा ओइ पार नै घर-घर ओकर बसेरा अछि पांच सालक बेटी बेइज्जत हुअए की यएह हमर परंपरा अछि?”

एही बात सं इनकार नहि कयल जा सकैत अछि जे मैथिली मे भले मुट्ठी भरि महिला रचनाकार छैथ, मुदा हुनकर शब्द लोक, परिवार, समाज आ देश के बदलैक क्षमता राखैत अछि, बशर्ते हुनका सभके पढ़ल जाय।

• • •

अप्रैल, 2010 मे मधुबनी सं एकटा दू मासिक मैथिली पत्रिका बहार भेल छल, जेकर संपादकीय मे युवा संपादक पहिलुक पांति लिखने छल, ‘जनकवि यात्रीजीक आह्वान ‘नवतुरिये आबओ आगां’ व्यर्थ नहि सिद्ध हेबाक चाही। नवतुरियाकें आगां बढिक’ अयबाक चाही आ समयक संग कदमताल मिलबैत बदलावक जीहतोड़ प्रयास करबाक चाही। जीवकांतजीक ओसार सेहो मैथिली भाषाकें सहित्यकारे जियाक’ रखने अछि आ तें अपन मातृभाषा मैथिलीक जियेबाक लेल नब साहित्यकारक बेगरता अछि।” ओ संपादक ओही पत्रिका के दोसर अंकक संपादकीय मे लिखैत छथि, “भाषा सं संस्कृतिक निर्माण होयत अछि। जखन कोनो समाजक अपन भाषे नहि रहतै तखन ओकर सांस्कृतिक रक्षा कोना भ' सकैत छथि।” ओही पत्रिका के जुलाई-अगस्त, 2011 अंकक संपादकीय मे समाजक स्थिति पर चिंता व्यक्त करैत लिखैत छथि, “एखुनका स्थिति ई अछि जे सब रीति रेबाज आ संस्कार बजारक ईशारा पर तय कएल जा रहल अछि। बच्चासं ओकरा, बचपना, ओकर निश्छलता, सहज संकोच, विनम्रता सबकें ख़त्म क' क' हम सब ओकरा

की बना रहल छी? ...बच्चाकें जनमिते ओकरा पैघ बनेबाक सबटा प्रयास शुरू क' दैत छी, से शारीरिक आ मानसिक दुनू रुपें। परिणाम होइत अछि जे ओ धूर्तता आ ठकपनी सीखि जाइत अछि।"

ओही पत्रिका के सभटा संपादकीय पढि के मन मे ई गप उठैत अछि जे कतेक रास लोक अपना छोड़ि समाज के ल' क' सोचैत अछि? सोचबे टा नहि एकटा विचार सेहो राखैत अछि आ समाज के दिशा दैत अछि। ई बात अलग अछि जे ओ पत्रिका दीर्घजीवी नहि बनल आ दू बरखक बाद बाजार मे कत्तो देखार नहि पड़ल। ओ पत्रिका छल 'मिथिला सृजन' आ ओकर संपादक छल 'ऋषि वशिष्ठ'। हुनकर दायरा सिर्फ संपादकीय धरि नहि अछि, बल्कि 'संध्या-गोष्ठी' के अक्टूबर, 2013 अंक मे 'उन्नत ललाट पर मेटायत रेख: मधुबनी रंगमंच' नामक लेख मे जहि तरहे रंगमंच के लेल चिंता व्यक्त करैत छथिन, से विरले अछि। नाटक दिस हुनकर समर्पणक अंदाजा एही गप सं लागायल जा सकैत अछि जे ओ अपने सुपुत्री के सेहो नाटक दिस आबैक लेल प्रोत्साहित करहि मे कोनो संकोच नहि केलाह। परिणाम किछु बरख पहिने 'अछिंजल इंडिया' के कार्यक्रम मे हुनकर सुपुत्री राष्ट्रीय राजधानी मे एकल नाटक प्रस्तुत क' अपन अभिनय के धौंस जमैली।

ऋषि वशिष्ठक दुनिया कथा मे सेहो अछि आ हुनकर कथा मे गाम के जे दृश्य उपस्थित होयत अछि, से हुनका आन कथाकार सं फएक करैत अछि। चाहे हुनकर कथा 'सुभा' मे शिवशक्ति मंदिर वा फूलहसन हुए, 'गाम सं जाइत रेलगाड़ी' मे झोटैला हुए, 'जुट्टीवाली देवी' कथाक बेलीदेवी, राजू आ आकाशक चित्रण, 'एकबीत जग्गह' के रूप चौधरी आ भूप चौधरी के चित्रण पाठक के एक असल गाम आ दुनिया सं परिचय कराबैत अछि। ऋषि वशिष्ठ 'कखनी होतै मीटिन', 'सांझक सुख', 'बुल्कीवाली' आ 'जाड़-ठाढ़मे' जेहन कथा मे पूर्ण कथाकारक तौर पर उभरि के आगू आबैत छथि। हुनकर कथा मे मिथिला अछि, मिथिलाक गाम अछि। बिना कोनो तामझाम के कथा कहैक संस्कार जे ऋषि मे अछि ओ शायद कोनो समकालीन कथाकार मे अछि। मैथिलीक पारंपरिक शब्द सं ल' के परिवार, समाज के देखाबैक दृष्टि हुनका समकालीन से फराक करैत अछि। परिवार मे कोना सभक मत अलग होयत अछि, जीवनक संघर्ष की होयत अछि, जेहन सवाल हुनकर कथा मे फरिछा के आबैत अछि। ताहि सं ई कहल जा सकैत अछि जे जौ अहां ऋषि वशिष्ठक साहित्य नै पढ़लहूं, ते किछु नहि पढ़लहूं।

ऋषि वशिष्ठ के 2019 केर बाल साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटबाक घोषणा भेल अछि, मुदा हुनकर रचनात्मकता बाल साहित्य धरि नहि अछि, हुनकर रचनाधर्मिता सम्पूर्ण समाज अछि, बाल साहित्य सं ल' क' मूल साहित्य धरि आ ओकरो सं आगू अछि। पुरस्कार लेल शुभकामना।

● ● ●

प्राथमिक स्तर पर मैथिली के पढ़ायबाक मांग अरसा सं बिहार सरकार सं कयल जा रहल अछि, मुदा एही बेर बाजी मारलक दिल्ली सरकार। 15 जुलाई, 2019 मैथिल भाषाक ओ ऐतिहासिक दिन छल जहिया दिल्लीक उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया मैथिली भाषाक लेल अहम निर्णयक घोषणा केलक। एकर अनुसार मैथिली भाषा दिल्लीक स्कूलमे वैकल्पिक भाषाक तौर पर कक्षा 8 सं ल' के कक्षा 12 धरि पढ़ाओल जायत। सिविल सेवाक परीक्षा मे मैथिली भाषा रखबाक इच्छुक अभ्यर्थीक तैयारी कराबैक लेल मैथिली एकेडमी के स्थापना कयल जायत। 'सी-डैक' के संग मिलिके दिल्ली सरकार मिथिलाक्षर फॉण्ट बनैबाक काज करत। दिल्ली सरकार लाइफ टाइम अवार्ड के तहत 2.5 लाख के पुरस्कारक संग कुल 12 लोक के सेहो विभिन्न क्षेत्र मे एक-एक लाख रुपया सं सम्मानित करत। एकर अलावे, नवम्बर मे पांच दिनक कल्चरल हेरिटेज फेस्टिवल सेहो दिल्ली के कनाट प्लेस मे मनाओल जायत।

सरकार के एहि घोषणा सं मैथिली जगत मे एक अलगे हर्षक माहौल अछि मुदा एहि सभटा अहम निर्णय के अमलीजामा कोना पहिरायल जायत, एकर कोनो प्रारूप एखन धरि बाहर नहि आयल अछि। सवाल उठैत अछि, स्कूल मे मैथिली शिक्षा के बहाली कहिया होयत वा कोना होयत? आठम कक्षा सं बारहम कक्षाक सिलेबस की होयत? अंगरेजी शिक्षाक दिस उन्मुख समाज, की अपन नेना सभके मैथिली पढ़ाबय लेल आगू आयत? ओना दिल्लीक स्कूल मे एहि सालक नव सेशन शुरू भ' गेल, तखन की ई घोषणा अगिला बरख सं लागू होयत? जौं दिल्ली मे आन पार्टी के सरकार आबैत अछि ते की ओ मैथिली के ल' क' पूर्ववर्ती सरकार जेना काज करत? आशा अछि जे दिल्ली मे रहय बला मिथिलाक लोक एहि घोषणा के सफल बनाबय मे सरकार के सहयोग करत, जाहि सं मैथिली भाषा के प्रचार-प्रसार हुए आ नव कीर्तिमान स्थापित करय। ऐना नहि हुए जे दिल्लीक उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदियाक घोषणा, सिर्फ आ सिर्फ घोषणा बनि के रहि जाय।

● ● ●

चूंकि आब भारतीय संघ लोक सेवा आयोग मे बहुत रास अभ्यर्थी मैथिली भाषा क' ल' के परीक्षा द' रहल अछि आ सफल भ' रहल अछि, ताहि सं 'तीरभुक्ति' के ई अंक सिविल सेवा परीक्षा पर आधारित अछि। प्रख्यात विद्वान सभक लेख एहि अंक मे अछि, जाहि सं लोक बुझि सकय जे सिविल सेवा परीक्षा मे मैथिली भाषाके पैटर्न की रहैत अछि। नियमित कॉलम ते एही अंक मे अछिये। पाठकक प्रतिक्रिया जेना आबि रहल अछि, ताहि सं संपादकीय विभाग आओर मेहनत क' रहल अछि। आशा अछि जे 'तीरभुक्ति' अहां के अकांक्षा पर खरा उतरय। ■

– विनीत उत्पल

लोक सेवा परीक्षामे मैथिलीक यात्रा

✍ भास्कर ज्योति

भास्कर ज्योति, जेएनयू केर अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान मे डाक्टरल रिसर्च फेलो छथि।

जनक जननी मां जानकी केर भूमि मिथिला सदैव सं न्याय, सेवा आ दर्शन केर भूमि रहल अछि। सेवा केर भाव एतय शुरू सं एत्तेक प्रबल रहल अछि, जे कतेको उच्च आय बला लोक नौकरी छोड़ि-छोड़ि कें समाज सेवा कें पूर्णकालिक कार्य केर रूपमे अपनौलनि, ओहि ठाम नवतुरिया सभक मध्य सिविल सेवामे जाकें समाजक लेल किछु करबाक भाव सेहो शुरू सं देखल जायत रहल अछि। ओहि सभ नवयुवक कें प्रेरित करबा लेल मिथिलाक भूमि पर अनेको सिविल सेवक एहेन भेलाह जे अपन कार्यकालमे एहेन उत्कृष्ट कार्य कयलनि जे देश विदेशमे हुनक नाम गर्व सं लेल जायत अछि। ओहि सूचीमे चाहे एल के झा केर नाम लेल जाय जे ब्रिटिश कालमे इंडियन सिविल सेवामे सफल भ' आजाद भारतमे रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया केर गवर्नर रहलाह, एकमात्र महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी केर निजी सलाहकार रहलाह वा श्री आदित्य नाथ झा केर नाम लेल जाय जिनक नाम पर आइ लाल बहादुर शास्त्री सिविल सेवा संस्थानमे केफेटेरिया केर नाम अछि आ जिनका एलबीएसएनए केर पहिल निदेशक हेबाक गौरव प्राप्त छनि वा वर्तमानमे गुजरातक डीजीपी श्री शिवानंद झा होथि वा बिहारक पूर्व सचिव अंजनी कुमार सिंह वा पूर्व डीजीपी श्री पीके ठाकुर, नामक सूची बड्ड पैघ अछि। मिथिलामे कतेको गाम एहेन अछि जतय कहल जायत अछि जे हर दोसर घरमे एक गोट सिविल सेवक भेलाह अछि। कतेको एहनो घर अछि जाहिमे पीढ़ी दर पीढ़ी लोक आईएएस, आईपीएस होयत रहलाह।

सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण करब जतबे गौरवमयी उपलब्धि थिक, ओतबे कठिन साधना सेहो। प्रचलित शब्दमे कहल जायत अछि जे आईएएस बनबा लेल कठोर तपस्या कर' पड़ैत अछि। एहि परीक्षाक सबसं महत्वपूर्ण भाग होयत अछि मुख्य परीक्षा, जाहिमे लिखित परीक्षा होयत अछि आ इतिहास भूगोल सं ल' क' अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन आ चरित्रक उत्कृष्टता धरिक परीक्षण होयत अछि। एहि परीक्षामे एक गोट वैकल्पिक विषय सेहो लेबाक रहैत अछि, जाहिमे अभ्यर्थी अपन पसंद केर कोनो विषय राखि सकैत अछि, मुदा कठिन प्रतिस्पर्धा केर दौरमे वैकल्पिक विषयकेर महत्व बड्ड बेसी होयत अछि। अभ्यर्थी सभक मध्य सटीक वैकल्पिक विषयक चुनाव सर्वदा एकगोट चुनौती रहल अछि। मैथिली कें 2003 मे संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटबाक उपरान्त ई कठिनता कने कम भ' गेल। संविधानमे जगह भेटतहि संघ लोकसेवा आयोग द्वारा मैथिली कें सिविल सेवा परीक्षामे एक गोट वैकल्पिक विषय केर रूपमे उपलब्ध कराओल गेल आ तकरा बाद मिथिला आ मिथिलेत्तर क्षेत्रमे मैथिली कें छात्र सभ द्वारा वैकल्पिक विषयक रूपमे अपनाओल

संपर्क : *कृष्णा नगर, वार्ड नं.-23, बटराहा, सहरसा, बिहार*
***230, पेरियार हॉस्टल, जेएनयू, नई दिल्ली*
मो. : 9015753660, **ईमेल :** bhaskar_jyoti@yahoo.com

गेल। श्री अनुज झा जे एखन फैजाबाद (अयोध्या) केर डिस्ट्रिक्ट कलक्टर छथि से मैथिली सं पहिल आईएएस बनलाह। मुदा मैथिली कें सिविल सेवा परीक्षामे वैकल्पिक विषयक रूपमे स्थान भेटबाक संघर्ष बड्ड दुरूह रहल। अनेको मैथिल अभियानी सभक सार्थक प्रयास सं ई संभव भ' सकल। पहिने मैथिलीकें बिहार लोक सेवा आयोगमे वैकल्पिक विषय केर रूपमे स्थान देल गेल आ तेकर बाद संघ लोक सेवा आयोगमे एकरा स्थान देबाक मांग तेज भेल।

मैथिलीक आविर्भाव सं अनेको ग्रामीण छात्र सब जे अंग्रेजीमे ओतबा प्रवीण नहि छलाह, तिनका बल भेटलनि। मैथिली कें खाली वैकल्पिक भाषाक रूपमे स्थान नहि भेटल। मुदा कोनो अभ्यर्थी मैथिली भाषा सं सम्पूर्ण सामान्य अध्ययन केर परीक्षा सेहो लिख सकैत छथि। अनेको रिपोर्ट कहैत अछि जे बच्चाक पहिल भाव मातृ भाव होयत अछि आ पहिल भाषा मातृ भाषा होयत अछि। जखन गाम सभक अभ्यर्थी सबकें अपन गाम घरक भाषामे संघ लोक सेवा आयोग एहेन महत्वपूर्ण परीक्षा देबाक अवसर भेटलनि त' एकरा प्रति जागरूकता आ उत्साह बढ़िते चल गेल आ मैथिली सं सफल होम' बला अभ्यर्थी सभक बढ़ैत संख्या कें देखैत राजस्थान, हरियाणा आ उत्तर प्रदेश सभक गैर मैथिल छात्र सभ सेहो मैथिली कें वैकल्पिक विषय केर रूपमे अपनाबे लगलाह।

लोकसेवा आयोगमे मैथिलीक संघर्षक गाथा

मैथिली कें साहित्य अकादमीमे बतौर भाषा चिन्हित करब मैथिली अस्मिताक संघर्षक प्रथम जीत छल, तत्पश्चात दिल्लीमे 1963 मे मैथिलीक पुस्तक प्रदर्शनी लगाओल गेल छल, जेकर उद्घाटन स्वयं प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी कयने छलाह। कालक्रमेण भारत सरकार द्वारा मैथिली भाषाक समृद्धि सं जनमानस कें अवगत करेबाक दृष्टि सं विद्यापति पर डाक टिकट सेहो जारी कयल गेल। एहि तरहें आधुनिक भारतमे स्वतंत्रता पश्चात् मैथिलीक कद बढ़' लागल। एहि दिशामे आब अगिला डेग छल मैथिलीकें बिहार लोक सेवा आयोग केर परीक्षामे बतौर वैकल्पिक विषय शुरू करेबाक, एहि उद्देश्य सं 19 मार्च 1967 कें छात्रक एकटा प्रतिनिधि मंडल ओहि समयक शिक्षा मंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर सं भेंट कयलक। हुनका ई गप्प सं अवगत कराओल गेल जे श्री कृष्ण सिन्हा द्वारा बनाओल गेल एक्सपर्ट कमिटी मैथिली कें बिहार लोक सेवा आयोगमे वैकल्पिक विषयक रूपमे अनुशंसित कयने छल, मुदा एहिमे भ' रहल विलम्ब सं मैथिली विषय सं स्नातक छात्र सभक मध्य अतिशय हताशा आ क्रोध अछि।

> **मैथिलीक आविर्भाव सं अनेको ग्रामीण छात्र सब जे अंग्रेजीमे ओतबा प्रवीण नहि छलाह तिनका बल भेटलनि। मैथिली कें खाली वैकल्पिक भाषाक रूपमे स्थान नहि भेटल मुदा कोनो अभ्यर्थी मैथिली भाषा सं सम्पूर्ण सामान्य अध्ययन केर परीक्षा सेहो लिख सकैत छथि।**

एहि बीच बिहारमे उर्दू कें द्वितीय भाषा केर दर्जा देबाक गप्प पर विवाद उठि गेल आ जनसंघ सहित मैथिली संगठन सब एहि बात पर जोर देलनि जे मिथिला अथवा भोजपुर क्षेत्रमे रह' बला मुसलमान मैथिली-भोजपुरी बजैत छथि उर्दू नै, एहि लेल मैथिली प्रचारक संघ द्वारा राजेंद्र भवन दरभंगामे मैथिलीकें द्वितीय भाषाक दर्जा, दरभंगामे रेडियो स्टेशन आ बिहार लोक सेवा आयोगमे मैथिली कें वैकल्पिक भाषा बनेबाक प्रण दोहराओल गेल।

13 अगस्त 1967 कें मिथिला छात्र संघ, मुजफ्फरपुर द्वारा मैथिली भाषा विकास सम्मलेनक आयोजन मुजफ्फरपुर केर थिओसोफिकल हॉलमे कयल गेल जकर अध्यक्षता कुमार रत्नेश्वरी नंदन सिन्हा द्वारा कयल गेल छल। एहि सम्मलेनमे मैथिलीक विशेषता कें उल्लेख करैत एकरा संविधानक अष्टम अनुसूचिमे जगह देबाक लेल मांग उठाओल गेल जाहि सं संघ लोक सेवा आयोगमे सेहो मैथिली कें वैकल्पिक विषय बनेबाक मार्ग प्रशस्त हेतियैक। पटनामे 27 जुलाई 1967 कें चेतना समिति द्वारा आयोजित एक गोट सम्मेलनमे मैथिली भाषी 100 विधायक द्वारा मैथिली कें अष्टम अनुसूचिमे स्थान देबाक प्रतिवेदन पर समर्थन जताओल गेल। एहि सम्मेलनक अध्यक्षता बिहार विधानसभाक अध्यक्ष श्री धनिक लाल मंडल स्वयं कयने छलाह। एहि सम्मेलनमे दोसर प्रतिवेदनमे मुख्यतया मैथिली कें वैकल्पिक विषय बनबे पर जोर देल गेल छल।

एवंक्रमेण आंदोलन चलैत रहल, राजेंद्र भवनमे मिथिला सेवा संघक भोलानाथ मिश्रा द्वारा आयोजित सम्मलेनमे सरकार कें चेताओल गेल, जं मैथिली कें अष्टम अनुसूचिमे स्थान, बिहारमे वैकल्पिक विषय आ प्राथमिक शिक्षामे बतौर एक गोट भाषाक रूपमे स्थान नहि देल जायत त' सरकारक विरुद्ध जनआंदोलन कयल जायत। आचार्य रमानाथ झा, जे ओहि समय साहित्य अकादमीमे मैथिलीक प्रतिनिधि छलाह से ई गप्प सं बड्ड क्रोधित छलाह जे भारत सरकारक तत्कालीन शिक्षा मंत्री प्रोफ़ेसर शेर सिंह द्वारा भारतीय भाषा समितिमे मैथिली कें स्थान नहि देल गेल छल, कारण जे मैथिली अष्टम अनुसूचीमे नै छल। एहि लेल रमानाथ झा द्वारा 13 सांसद सं अनुमोदित आ साहित्य अकादमी सं समर्थित प्रतिवेदन सौंपल गेल जाहिमे मैथिलीकें अष्टम अनुसूचीमे स्थान देबाक गप्प कयल गेल। अखिल भारतीय मैथिली महासंघ द्वारा 9 अगस्त 1968 कें अपन 11 सूत्री मांगक लेल एक लाख मैथिली भाषीक हस्ताक्षर बिहार सरकारकें सौंपबाक लक्ष्य राखल गेल।

1970 केर दशकमे मैथिली आंदोलन आ मैथिली कें वैकल्पिक विषय बनेबाक मांग कोन तरहें चलि रहल छल से राजनंदन लाल दास द्वारा लिखित नाटक "संतो'' मे देखाओल गेल अछि। एहि नाटकमे देखाओल गेल अछि, जे कोना एक गोट मैथिली भाषी छात्र कें जेकरा हिन्दीक शब्द सभक ज्ञान नहि अछि, मोश्किलक सामना कर' पड़ैत अछि। ओ हिंदीमे मैथिली शब्द सभकें फेंट कें बजैत अछि। एहने चरित्रक चित्रण हरिमोहन झाक उपन्यास कन्यादानमे झारखंडी केर पात्रमे सेहो भेल अछि। एहि नाटकमे संतो जे मुख्य पात्र अछि, से मैथिली सं फर्स्ट डिवीजन सं स्नातक करैत अछि, मुदा ओकरा सब ठाम हेय दृष्टि सं देखल जायत अछि। ओ परीक्षामे बैसि कें उच्च स्तरीय नौकरी पयबाक स्वप्न देखैत अछि मुदा बिहार लोक सेवा आयोगमे मैथिली वैकल्पिक विषय नहि रहबाक कारणें ओ परीक्षा नहि द' सकैत अछि। बादमे ओ कोलकाता केर रेखा सं प्रेरित भ' कें मैथिली कें जन भाषा बनेबाक प्रण लैत अछि आ ताहि लेल ओ गाम-गाम भ्रमण करैत अछि। अनेको आंदोलन, सम्मलेन आ दबाबक उपरान्त मैथिली कें बिहार लोक सेवा आयोगमे वैकल्पिक विषयकेर रूपमे 1972 ईस्वीमे शामिल कयल गेल, मुदा ई उपलब्धि कतेको लोक आ राजनैतिक दल कें पसिन्न नहि आयल आ मैथिली कें फेर बाहर केर रास्ता देखाओल गेल, मुदा फेर अथक प्रयास सं 2006 मे शामिल कराओल गेल। शामिल आ बाहर करबाक ई यात्रा उठा-पटक सं परिपूर्ण रहल अछि जकर संक्षिप्त इतिहास जानब मैथिल अभ्यर्थी सबकें जरूरी थिक, तखनहि ओ बुझताह जे आजुक उपलब्धि कत्तेक संघर्षक उपरान्त प्राप्त भेल अछि।

मैथिली कें बिहार लोक सेवा आयोगमे वैकल्पिक विषयकेर रूपमे 1972 ईस्वीमे शामिल कयल गेल मुदा ई उपलब्धि कतेको लोक आ राजनैतिक दल कें पसिन्न नहि आयल आ मैथिली कें फेर बाहर केर रास्ता देखाओल गेल मुदा फेर अथक प्रयास सं 2006 मे शामिल कराओल गेल।

तालिका-1 : संघलोक सेवा आयोग वार्षिक रिपोर्ट 2015-16

क्र.	वैकल्पिक विषय	छात्रक संख्या		सफलता प्रतिशत
		बेसल	चयनित	
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1	सिंधी	3	2	66.7%
2	बांग्ला	3	1	33.3%
3	मणिपुरी	17	4	23.5%
4	चिकित्सा विज्ञान	356	71	19.9%
5	उर्दू	31	6	19.4%
6	विधि	235	40	17.0%
7	सांख्यिकी	6	1	16.7%
8	मनोविज्ञान	373	59	15.8%
9	मैथिली	95	14	14.7%
10	तमिल	95	14	14.7%
11	शुपालन विज्ञान	28	4	14.3%
12	गुजराती	87	12	13.8%
13	अर्थशास्त्र	214	26	12.1%
14	मराठी	25	3	12.0%
15	जन्तु विज्ञान	79	9	11.4%
16	प्रबंधन	176	20	11.4%
17	मानवशास्त्र	619	68	11.0%
18	कृषि	65	7	10.8%
19	मलयालम	65	7	10.8%
20	तेलुगु	122	13	10.7%
21	समाजशास्त्र	1819	193	10.6%

मैथिलीक प्रति राजनैतिक प्रतिक्रिया

संविधानक अनुच्छेद 347 केर प्रयोग करैत सांसद सभक एकटा प्रतिनिधिमंडल श्री भोगेन्द्र झा, हुकुम देव नारायण यादव आ ज़िआउर रहमानक नेतृत्वमे राष्ट्रपति सं भेंट क' हुनका मैथिली कें बिहारक राज्य भाषा बनेबाक ज्ञापन सौंपलनि, वैह ठाम दोसर दिस चतुरानन मिश्रा (सांसद) मैथिली कें उच्च जाति केर भाषा बतबैत मैथिली कें हिन्दीमे विलय क' देबाक गप्प कयलनि, जेकर दुष्परिणाम बिहार लोक सेवा आयोगमे 1992 मे देखबामे आयल। हालांकि चतुरानन मिश्रा ई मांग कयलनि जे मैथिली जेकरा साहित्य अकादमीमे स्थान प्राप्त अछि, तेकरा संघ लोक सेवा आयोगमे वैकल्पिक विषयक रूपमे स्थान भेटबाक चाही।

एहेन तरहक द्विअर्थी मतक परिण ाम ई भेल जे 12 अगस्त 1988 केर एकटा आदेश सं बिहार सरकार मैथिली कें माध्यमिक आ उच्च शिक्षा सं मातृ भाषा केर दर्जा समाप्त क' देलक। ओहि समय प्रोफ़ेसर नागेश्वर झा बिहारक शिक्षा मंत्री छलाह, मैथिल सबकें लागलनि जे मैथिल भ' क' मंत्री जी एहेन निर्णय लेलनि मुदा बादमे पता चलल जे बिना हुनका सं संपर्क कयने बिहार सरकार ई निर्णय अपने सं ल' लेलकैक। ई एकटा झांकी बस छल, आगां बिहार सरकार द्वारा इहो सं बेसी आश्चर्यजनक कदम उठाओल गेल।

1992 मे लालू प्रसाद यादवक नेतृत्व बला राष्ट्रीय जनता दलक सरकार मैथिली कें बिहार लोकसेवामे वैकल्पिक विषय सं हटा देलकैक मैथिली माध्यम सं परीक्षा लिखबा पर सेहो रोक लगा देल गेल। लालू

तालिका - 2 : 2015 मे सिविल सेवा परीक्षामे विभिन्न वैकल्पिक विषय सं उत्तीर्ण होम' बला छात्र सभक विश्लेषण

क्र.	वैकल्पिक विषय	छात्रक संख्या		सफलता प्रतिशत
		बैसल	चयनित	
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1	संथाली	2	2	100.0
2	सिंधी भाषा एवं साहित्य (अरबी)	2	1	50.0
3	देवनागरी	3	1	33.3
4	ओड़िया भाषा एवं साहित्य	7	2	28.6
5	तमिल भाषा एवं साहित्य	93	20	21.5
6	चिकित्सा विज्ञान	327	66	20.2
7	मणिपुरी भाषा एवं साहित्य	20	4	20.0
8	सांख्यिकी	5	1	20.0
9	विधि	245	41	16.7
10	बांग्ला भाषा एवं साहित्य	6	1	16.7
11	भौतिकी	128	20	15.6
12	मानव शास्त्र	641	95	14.8
13	वाणिज्य	152	21	13.8
14	कृषि	86	11	12.8
15	मैथिली भाषा एवं साहित्य	106	13	12.3
16	मैकेनिकल इंजीनियरिंग	115	14	12.2
17	प्रबंधन	91	11	12.1
18	गणित	258	31	12.0
19	रसायन विज्ञान	92	11	12.0
20	मनोविज्ञान	238	28	11.8
21	समाजशास्त्र	1479	173	11.7

प्रसाद यादव कहलनि जे मैथिली खाली ब्राह्मणक भाषा अछि आ एकरा संविधानमे स्थान नहि प्राप्त अछि, एहि लेल बिहार लोकसेवामे ई वैकल्पिक विषय नहि भ' सकैत अछि। हुनका अनुसारें मैथिली विषय सं मैथिली क्षेत्रक छात्र कें दोसर छात्रक तुलनामे अनुचित लाभ भेटैत अछि आ एहि सं सामजिक न्यायक अवहेलना होयत अछि।

सरकारक एहेन निर्णयक विरोधमे 27 मार्च 1992 कें विभिन्न जाति/क्षेत्र/सम्प्रदाय केर लोक 25 हजार सं बेसी संख्यामे उपस्थित भ' कें पैघ रैलीक आयोजन कयलनि। नेतागण सब कहलनि जे मैथिली कोनो ख़ास जातिक भाषा नहि अछि, अपितु जन सामान्यक भाषा अछि। संथाली, नेपाली सेहो संविधानक अष्टम अनुसूचीमे नहि अछि, मुदा बिहार लोक सेवा आयोगमे संथाली एक गोट विषय अछि, तखन मैथिली कें कियैक हटाओल जा रहल अछि? बिहार लोक सेवा आयोग बांग्ला, ओड़िया, उर्दू आदि भाषा कें स्थान देने अछि जं ओ भाषा सबसं सामाजिक न्यायक अवहेलना नहि भ' रहल अछि त' मैथिली सं कोना भ' जायत? हुनका सभक लेल ई बस मैथिली भाषा केर अपमान करबाक एक गोट तरीका अछि।

श्री ताराकांत झा जे पटना उच्च न्यायलय केर एकटा प्रतिष्ठित वकील छलाह आ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ सं जुड़ल छलाह आ बादमे 1976 मे महाधिवक्ता सेहो बनलाह, ओ मैथिली आंदोलन केर पैघ प्रणेता छलाह। हुनक नेतृत्वमे लालू जीक फैसलाक विरोधमे विभिन्न पार्टी केर सहयोग सं बिहार बंद बजाओल गेल। जखन सरकार द्वारा मैथिली कें पुन: बिहार लोक सेवा आयोगमे जगह देबा सं मना क' देल गेल, तखन पटना उच्च न्यायालयमे अनेक केस कयल गेल, जाहिमे पंडित ताराकांत झा अग्रणी भूमिका निभौलनि। 1995 केर बिहार विधान सभा चुनावमे भारतीय जनता पार्टी द्वारा ई प्रतिज्ञा लेल गेल, जे बिहारमे भाजपा केर सरकार बनबा पर मैथिली कें बिहार लोक सेवा आयोगमे पुन: बहाल कयल जायत आ अष्टम अनुसूचीमे स्थान सुनिश्चित कराओल जायत, जाहि सं संघ लोक सेवा आयोगमे सेहो मैथिली कें शामिल करबाक मार्ग प्रशस्त होयत।

पटना उच्च न्यायालय दिस सं बिहार सरकार कें डांटलगेल आ न्यायालय कहलनि जे बिहार सरकार पटना उच्च न्यायलयमे केस लंबित हेबाक बहाना सं बिहार लोक सेवा सं मैथिली विषय कें निकालि कें राजनीति क' रहल अछि। न्यायालय कहलक जे सरकारक उदासीनता सं कोनो भाषा मृत प्राय भ' जायत, एहि तरहक कदम सं कोनो मुख्य भाषा सेहो हाशिया पर जा सकैत अछि। आ न्यायालय द्वारा सरकारक 29 फरबरी 1992 केर आदेश कें निरस्त क' देल गेल आ आदेश देल गेल जे मैथिली कें पुन: बिहार लोक सेवा आयोगमे शामिल कयल जाय आ संविधानिक दायरामे रहैत एकर संवर्धनक अन्य प्रयास कयल जाय। पटना उच्च न्यायलय केर ओ फैसला कें चुनौती दैत बिहार सरकार सर्वोच्च न्यायलयमे याचिका दायर कयलक। सर्वोच्च न्यायलयमे विषय लंबिते छल ता ताराकांत झाक प्रयास सं नीतीश कुमारक नेतृत्व बला बिहार सरकार मैथिली कें पुन: बिहार लोक सेवा आयोगमे 2006 ईस्वीमे बहाल क' देलक।

तालिका - 3 : बिहार लोक सेवा आयोग
53-55म संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा,
विषयवार चयनित छात्र

क्र.	विषय	लिखित परीक्षा में चयनित	चयनित
1	कृषि	11	7
2	पशुपालन विज्ञान	11	7
3	मानव शास्त्र	303	90
4	वनस्पति विज्ञान	17	10
5	रसायन विज्ञान	17	13
6	सिविल इंजीनियरिंग	–	–
7	वाणिज्य	11	3
8	अर्थशास्त्र	105	42
9	इलेक्ट्रीकल इंजीनियरिंग	7	5
10	भूगोल	701	287
11	भूगर्भशास्त्र	1	–
12	इतिहास	1035	340
13	एलएसडब्लू	1061	323
14	विधि	22	7
15	प्रबंधन	–	–
16	गणित	47	29
17	मैकेनिकल	2	1
18	दर्शनशास्त्र	46	14
19	भौतिकी	29	16
20	राजनीति विज्ञान	69	24
21	दर्शनशास्त्र	26	15
22	लोक प्रशासन	730	317
23	समाजशास्त्र	148	63
24	सांख्यिकी	2	–
25	जंतु विज्ञान	25	14
26	हिंदी भाषा एवं साहित्य	587	237
27	अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य	1	–
28	उर्दू भाषा एवं साहित्य	26	10
29	संस्कृत	31	12
30	फारसी	38	12
31	अरबी	38	17
32	पाली	73	23
33	मैथिली भाषा एवं साहित्य	73	23

अष्टम अनुसूची आ संघ लोकसेवा आयोग

झारखण्ड कें जखन पृथक राज्यक दर्जा भेट गेल, तखन मैथिली, बोडो, संथाली, आ डोगरी कें अष्टम अनुसूचीमे शामिल करबाक मांग जोर पकड़ि लेलक। मैथिली के शामिल करबाक विरोधमे जखन तृणमूल कांग्रेसक सांसद सुदीप बंदोपाध्याय आवाज उठौलनि, तखन जाति आ क्षेत्रक भेदभाव सं ऊपर उठि कें मिथिला क्षेत्रक सभ सांसद मैथिलीक समर्थनमे आवाज़ बुलंद कयलनि। 15 दिसंबर 2003 कें रोसराक सांसद रामचंद्र पासवान शून्य कालमे आवाज़ उठबैत कहलनि जे मैथिलीक मुद्दा 4.5 करोड़ मैथिली भाषी लोक केर समस्या अछि, सभक समवेत प्रयास सं 22 दिसंबर 2003 कें संसद संविधान बिल पास क' मैथिली कें अष्टम अनुसूचीमे स्थान द' देलक। अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटबाक बाद मैथिली कें संघ लोक सेवा आयोग द्वारा सिविल सेवा परीक्षामे स्थान देल गेल।

लोक सेवा आयोगमे मैथिलीक प्रदर्शन

लोक सेवा आयोगमे शुरू सं मैथिलीक प्रदर्शन नीक रहल अछि। बहुत लोक एकर प्रदर्शन केर उत्कृष्टता कें छोट पाठ्यक्रम सं जोड़ैत अछि, मुदा असली विषय ई थिक जे घर द्वारक साहित्य आ भाषा सहज रूप सं अभ्यर्थी सब आत्मसात करैत छथि। कंठहार कवि विद्यापति लिखने छलाह

सक्कय वाणी बहुअन भावय
पावय रस कों मम्मन ना पावय
देसिल बयना सब जन मिट्ठा
तैं तइसन जम्पयों अवहट्ठा

जैह लोरिक लोरिकायिन केर कथा, सलहेशक कथा, गोनू झाक कथा, विद्यापतिक गोसाउनिक गीत, महेशवानी आ नचारी लोक सब घर द्वारमे उठैत बैसैत सुनैत छथि वैह जं परीक्षामे आयत त' अपनत्वक एक गोट भाव अवश्यम्भावी थिक। एहि भावक कोनो ख़ास जाति वा समुदाय सं लेबा देबाक नहि थिक, लोकसेवामे बिहारक अनेकानेक कोना सं अनेकानेक जाति-सम्प्रदायक लोकक चुनाव मैथिली विषय सं भेल अछि। संघ लोकसेवा आयोगमे मैथिलीक प्रदर्शन बिहार लोक सेवा आयोग सं बेसी नीक रहल अछि। कतेको लोक एकरा परीक्षकक क्षेत्रवादी मनोवृत्ति सं जोड़ैत छथि, मुदा ई हुनक संकीर्ण मानसिकताक परिचायक मात्रे अछि। आब संघ लोक सेवा आयोग सं पाली कें हटा देल गेल अछि, जा धरि पाली छल ता धरि पाली सं कतेको चयन होयत छल। एखनो धरि दक्षिणी भाषा साहित्य सबसं जत्तेक अभ्यर्थी सफल होयत छथि ओत्तेक मैथिली सं होयतो नहि अछि मुदा तैय्यो ओहि भाषा सभक तुलना कहियो हिंदी सं सफल होम' बला अभ्यर्थी सं नहि कयल जायत अछि। 2013 बैचमे हरिथा वी कुमार मलयालम भाषा सं पहिल रैंक प्राप्त कयने छलीह, हर वर्ष टॉप 10 मे कोनो नै कोनो भाषाक अभ्यर्थी छात्र देखार पड़ि जायत अछि, मुदा मैथिलीक छात्र कें आय धरि एत्तेक नीक रैंक कहियो नहि प्राप्त भेल, कारण जे एहि विषय पर राजनीति बड्ड होयत अछि। शिक्षक डेरायल रहैत छथि जे बेसी अंक द' देब त' पता

तालिका - 4 : बिहार लोक सेवा आयोग
56-59म संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा
परीक्षा में बेस बला छात्र सभक विषयवार सूचि

क्र.	विषय	विषय कोड	लिखित परीक्षामे शामिल होय बला छात्रक संख्या		साक्षात्कार भेल बनाओल गेल	चयनित
			पेपर-1	पेपर-2		
1	कृषि	04	55	55	17	08
2	पशुपालन विज्ञान	05	28	28	05	03
3	मानव शास्त्र	06	2622	2608	194	59
4	वनस्पति विज्ञान	07	84	83	09	03
5	रसायन विज्ञान	08	79	78	03	02
6	सिविल इंजीनियरिंग	09	32	30	04	00
7	वाणिज्य	10	33	33	08	04
8	अर्थशास्त्र	11	495	495	71	38
9	इलेक्ट्रीकल इंजीनियरिंग	12	61	60	07	03
10	भूगोल	13	3159	3142	598	250
11	भूगर्भशास्त्र	14	09	09	00	00
12	इतिहास	15	7411	6598	532	175
13	एलएसडब्लू	16	11674	11624	1101	398
14	विधि	17	219	219	03	01
15	प्रबंधन	18	19	19	03	01
16	गणित	19	219	217	29	14
17	मैकेनिकल	20	47	46	07	05
18	दर्शनशास्त्र	21	771	765	88	41
19	भौतिकी	22	111	108	21	10
20	राजनीति विज्ञान	23	589	586	50	17
21	दर्शनशास्त्र	24	92	92	09	05
22	लोक प्रशासन	25	3189	3182	351	137
23	समाजशास्त्र	26	753	751	131	60
24	सांख्यिकी	27	09	09	00	00
25	जंतु विज्ञान	28	97	96	07	05
26	हिंदी भाषा एवं साहित्य	29	1427	1422	424	169
27	अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य	30	17	17	01	01
28	उर्दू भाषा एवं साहित्य	31	137	137	19	08
29	संस्कृत	33	155	155	32	08
30	फारसी	34	77	77	32	09
31	अरबी	35	01	01	01	01
32	पाली	36	102	101	25	08
33	मैथिली भाषा एवं साहित्य	37	403	403	84	29

नहि की होयत, मुदा एकर सभक पश्चातो संघ लोक सेवा आयोगमे मैथिलीक छात्र सबकें नीक अंक भेटैत अछि, 300 अंक धरि भेटल अछि जे सेलेक्शन लेल पर्याप्त अछि, एतबा अंकमे अभ्यर्थी आईएएस बनि जायत, मुदा बिहार लोक सेवा आयोगमे मैथिलीक स्थिति ओहेन नीक नहि अछि। तालिका संख्या 3 या 4 सं बुझल जा सकैत अछि जे मैथिली विषय सं उत्तीर्ण होम' बला छात्रक संख्या आ प्रतिशत कत्तेक कम अछि। एकर कतेको कारण भ' सकैत अछि, एक त' बिहारक भाषा थिक मैथिली, एहि लेल एत्त' गुणवत्ताक बेसी अपेक्षा भ' सकैत अछि, दोसर गप जे बेसी महत्वपूर्ण बूझि पड़ैत अछि, जाहि राज्यमे मैथिलीकें एकबेर लोक सेवा आयोगमे शामिल क' कें निकालि देल गेल ई कहि कें जे एकरा सं सामाजिक अन्याय होयत अछि, ओहि ठाम ई एखनो मुश्किल नहि जे ओहि लॉबी केर लोक मैथिली विषय केर प्रोफ़ेसर पर दबाब बनबैत हेताह। बिहार लोक सेवा आयोग केर 60-62म परीक्षामे टॉपर कें अर्थशास्त्र विषयमे 243 अंक छल, टॉप 100 मे लगभग सबकें वैकल्पिक विषयमे 200 सं बेसी अंक छल, मुदा मैथिली विषयमे एक गोट कोनो छात्र कें 190 अंक आयल छल वैह ठाम हिन्दी-अंग्रेजी जे सेहो साहित्य थिक, ओहिमे कतेको छात्र कें 200 सं बेसी अंक छल। वैकल्पिक विषयक 50-60 अंकक क्षतिपूर्ति सामान्य अध्ययन सं करब असंभव थिक, एहि लेल मैथिलीक लोकप्रियता बिहारमे कम भेल जा रहल अछि।

तालिका संख्या 1 आ 2 सं देखि सकैत छी जे 2015-16 आ 2016-17 मे संघ लोक सेवा आयोगमे मैथिली सं सफल होम' बला अभ्यर्थी केर प्रतिशत लगभग 15 प्रतिशत अछि। मुदा वैह ठाम तालिका 3 आ 4 मे बिहार लोक सेवा आयोगमे सेहो मैथिली सं सफल होम' बला अभ्यर्थीक प्रतिशत देख सकैत छी।

पहिल तालिका बिहार लोक सेवा

आयोगक 53-55म परीक्षाक अछि जाहिमे ई नहि दर्शाओल गेल अछि, जे मुख्य परीक्षामे मैथिली विषय सं कत्तेक छात्र बैसल छलाह, मुदा साक्षात्कार दय बला 73 अभ्यर्थीमे 23 गोट केर अंतिम चयन भेल। 56-59म परीक्षामे आंकड़ा स्पष्ट अछि, जाहिमे मैथिली सं 403 गोट छात्र मुख्य परीक्षा देने छलाह आ 29 गोट छात्रक अंतिम चयन भेल, जे लगभग 7 प्रतिशत अछि। अपने राज्यमे मैथिली सं जं एत्तेक कम चयन हेतैक त' दोसर राज्यक छात्र मैथिली कियैक अपनौताह?

चयनक अलावा किछु आओर जे समस्या मैथिल छात्र सभकें उठबैत पड़ैत अछि से अछि पाठ्य सामग्री केर। हालांकि दिल्लीमे श्री सुरेंद्र राउत जी आ श्री शेखर झा जी अपन कोचिंग संस्थानक माध्यम सं पाठ्यक्रम आ पुस्तक उपलब्ध करवा दैत छथि, मुदा दूर दराज रह' बला छात्र कें आइ धरि मैथिलीक सामग्री सुलभता सं नहि भेटत अछि। हालांकि आओर वैकल्पिक विषयक तुलनामे मैथिलीक कोचिंग सभ बड्ड सस्ता अछि, तैय्यो ग्रामीण परिवेश सं अबे बला कतेको छात्र कोचिंग लेब'मे अक्षम रहैत हथि, एहि मामलामे हालांकि साधुवाद अछि मैथिलीक शिक्षक सभक जे ओ छात्र सबकें पाय लेल कहियो ओतबा तंग नहि करैत छथि, मुदा एकर सभक बावजूदो सामग्री सुलभता सं भेटब आवश्यक थिक।

निष्कर्ष

पिछला 5-6 सालमे संघ लोक सेवा आयोग लेल मैथिली छात्र सभक बीच बड्ड लोकप्रिय वैकल्पिक विषयक रूपमे उभरल अछि वैह ठाम बिहार लोक सेवा आयोगमे औसत अंक भेटबाक कारणें मैथिलीक लोकप्रियता कम भ' रहल अछि। जतय भूगोल आदि विषय सं 4000 छात्र 56-59म बीपीएससी केर परीक्षा देने छलाह वैह ठाम मैथिली सं मात्रे 403 टा। बिहारक प्रोफ़ेसर सबकें एहि बातक संज्ञान लेबाक चाही जे मैथिल छात्र सभक प्रतिस्पर्धा खाली मैथिल छात्र सं नहि अछि वरण दोसर वैकल्पिक विषय बला छात्र सभ सं अछि, आन राज्यक लोक हिंदी अंग्रेजी साहित्य वा भूगोल ल' क' चयनित होइत छथि मुदा अपने राज्यमे अपने भाषामे हम सब पाछू भेल जा रहल अछि। जाहि अथक परिश्रम आ संघर्षक बदौलत मैथिली कें लोक सेवा आयोगमे स्थान भेटल छल ओ व्यर्थ नहि जेबाक चाही। एत्तेक परेशानी केर उपरान्तो एलएसडब्लू, इतिहास, राजनीति विज्ञान आदि विषयक तुलनामे मैथिलीक प्रदर्शन बेसी नीक अछि तें मैथिली ईहो स्थितिमे एकटा लोकप्रिय वैकल्पिक विषय अछि, मुदा जरूरत अछि एकर लोकप्रियता कें आओर बढ़ेबाक'।

सन्दर्भ

- बिहार लोक सेवा आयोग रिपोर्ट http://www.bpsc.bih.nic.in/
- संघ लोक सेवा आयोग रिपोर्ट https://upsc.gov.in/annual&reports
- The Maithili movement by Mohammad Sajjad https://frontline.thehindu. com/books/article24200882.ece
- Origin and growth of Maithili movement, Shodhganga https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/14857/9/09_chapter»204.pdf
- Maithili language and the movement – II , chapter 5
- Jha, Ayodhyanath, 'Pt. Tarakant Jha O Mithila Rajya Abhiyan', In Mithila Tradition and Change, p. 73
- Searchlight, Aug 17, 1967.
- Searchlight, Aug 12, 1967
- Searchlight, (unclear Aug 15, 1967_ but Paul Brass has written Aug 18, 1967)
- Indian Nation, Aug 4, 1968.
- Mithila Darshan, 1&3, May – July, 1967, p. 20 cited in The Maithili Language Movement in North
- Bihar A Sociolinguistic Investigation, an unpublished project report undertaken by Udaya Narayana
- Singh, Pradip Kumar Bose and N. Rajaram, Department of Linguistics, South Gujarat University,
- Surat, Apr, 1985
- Mishra, Uday Shankar, ^Mithila Putra Pt. Tarakant Jha*, in Mithila Tradition and Change Essays in
- Honour of Pt. Tarakant Jha, ed., Sureshwar Jha, Darbhanga, Tarakant Jha Felicitation Committee, 2008,
- p. 58, A letter to the effect of removal of Maithili from the BPSC was written by Harsha Bardhan, Joint
- Secretary of the Government to the Secretary of the BPSC dated Feb 29, 1992, in which it was claimed
- that a case against Maithili was filed in the Patna High Court by Rakesh Kumar and others in which it
- was claimed that in the census of 1990&91 the speaker of Maithili were lesser than the speakers of
- Bhojpuri, Tribal and Magahi language, therefor it was not proper to include Maithili as an optional paper
- in BPSC exam. Hence the government of Bihar took the decision to remove Maithili from the BPSC.
- The letter was included in the Memorandum May 07, 2003.
- C.W. J.C. No. 2263 of 1992, Binay Kumar Mishra Versus State of Bihar and others_ C.W. J.C. No. 3379 of 1992,
- Praveen Kumar Jha and others Versus The state of Bihar and others_ C.W. J.C. No. 3624 of 1992 Indra Kumar
- Thakur Versus the state of Bihar and others_ C.W. J.C. No. 3669 of 1992 Chetana Samiti Versus the state of Bihar and others_ C.W. J.C. No. 5160 of 1994, Narayan Jha and others Versus the state of Bihar and others_ C.W. J.C.No. Navchetna through its secretary Satish Chandra Jha Versus the state of Bihar and others, Patna High Court Judgement dated October 30, 2000.

लेखक / प्रकाशकगण केर ध्यानार्थ

'तीरभुक्ति' मे समीक्षा प्रकाशनार्थ अपन नव पुस्तक अथवा पत्रिका केर कम सं कम दू प्रति समीक्षा अनुरोधक संग संपादकीय कार्यालय पठाओल जा सकैछ। विशेष जानकारी वास्ते 9911364316 अथवा 9213152822 पर संपर्क कएल जा सकैत अछि।

– संपादक

तीरभुक्ति मे विज्ञापन द' प्रबुद्ध मैथिल समाज तक पहुंचाउ अपन सनेश

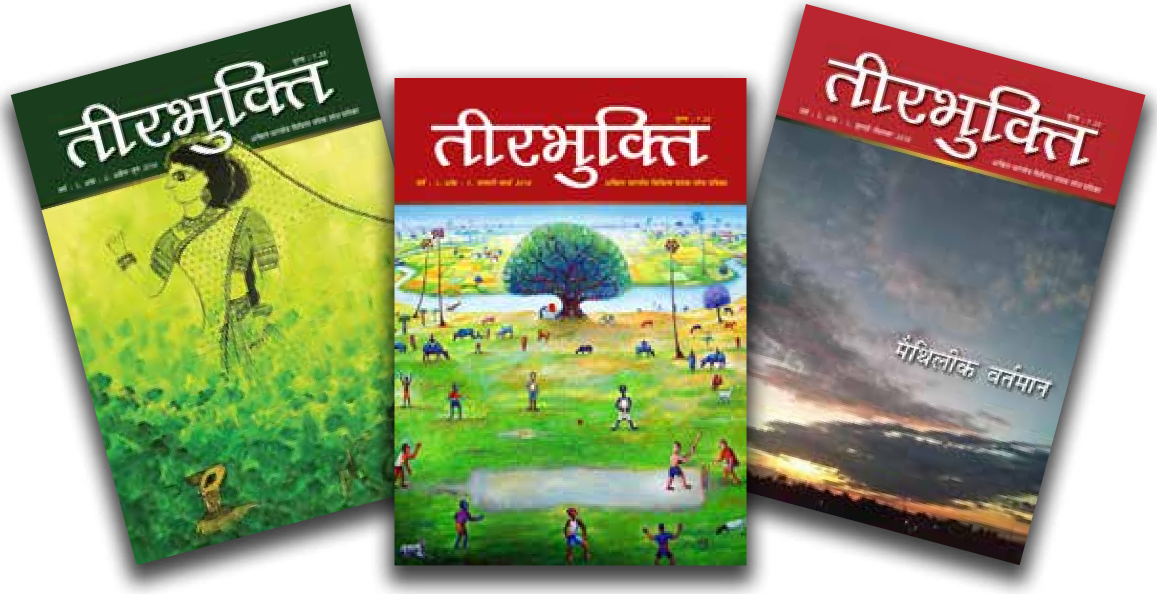

विज्ञापनक दर

बैक कवर पेज (कलर)	:	50,000
फ्रंट कवर इनसाइड पेज (कलर)	:	30,000
बैक कवर इनसाइड पेज (कलर)	:	30,000
डबल स्प्रेड पेज (कलर)	:	40,000
इनर पेज (श्वेत/श्याम)	:	20,000
हाफ पेज (श्वेत/श्याम)	:	10,000

विज्ञापन राशि अखिल भारतीय मिथिला संघ केर नामे चेक/डिमांड ड्राफ्ट/एनईएफटी कएल जाए। संघक बैंक विवरण निम्नलिखित अछि-

बैंक खाता विवरण

नाम	:	अखिल भारतीय मिथिला संघ (A khil Bhartiya Mithila Sangh)
खाता संख्या	:	11084229861
आईएफएससी कोड	:	SBIN0000691
एमआईसीआर कोड	:	110002087
बैंक	:	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
शाखा	:	पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

मैथिल समाज, साहित्य, लैंगिक समानता आ यूपीएससीक सिलेबस

✍ डॉ. राजीव कुमार वर्मा

शिक्षा : बीए, एम.ए (हिन्दू कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय), एम फिल, पीएचडी (इतिहास), राष्ट्रीय मेधा स्कॉलरशिप आ यूजीसी स्कॉलर। पेशा : एसोसिएट प्रोफेसर, सत्यवती कालेज सांध्य, दिल्ली विश्वविद्यालय। प्रकाशित कृति : नागफांस (मैथिलि सं अंग्रेजी अनुवार), फ्यूडल सोशल फोर्मेशन अंडर कलचुरी वंश, रिलिजन एंड सोसायटी, भक्ति आंदोलन। नेशनल आ इंटरनेशनल पत्रिका मे 40 सं ऊपर शोध आलेख, मैथिली मे किछु प्रकाशित लेख आ कविता। प्रधान संपादक, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिस्टॉरिकल इंसायट एंड रिसर्च। अकादमिक डायरेक्टरक रूप मे अनेक नेशनल आ इंटरनेशनल सेमिनारक आयोजन। निर्वासित सदस्य, अकादमिक काउंसिल, दिल्ली विश्वविद्यालय, निर्वाचित सदस्य, दिल्ली यूनिवर्सिटी शिक्षक संघ। शोध पर्यवेक्षक, दिल्ली विश्वविद्यालय पीएचडी स्कॉलरक।

मैथिली, संथाली, डोगरी आ बोडो 2004 सं संविधानक अष्टम सूचि मे अछि। भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा मे मैथिली एक नव विषय अछि। प्रत्येक बरख 15 सं 20 अभ्यर्थी मैथिली सं एहि परीक्षा मे सफल होयत अछि। किछु मैथिली भाषी आ किछु मिथिला-मैथिली दुनू सं बाहर, मुदा परीक्षा मे सफल। उत्तर प्रदेश आ राजस्थान सं ग़ैर-मैथिली भाषी सेहो सफल भेल छल। किछु परीक्षार्थी क' अनुसार मैथिलीक सिलेबस छोट अछि आ हिन्दी पर पकड़ि अछि तं सोन मे सुगन्ध।

मैथिली मे दुटा पेपर अछि।

प्रथम पेपर मे मैथिली भाषाक विकास, एकर विभिन्न बोली, बंगाली, असमी आ उड़िया भाषा सं सम्बन्ध, तिरहुता लिपिक उत्पत्ति आ विकास, मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि, विद्यापति, मैथिली नाटक (कीर्तनिया नाटक, अंकीया नाट), नेपाल मे प्रचलित नाटक, लोक साहित्य (लोक कथा, लोक नाटक, लोक गीत), आधुनिक काल मे विभिन्न साहित्यिक विधाक विकास (प्रबंध काव्य, मुक्तक काव्य, उपन्यास, लघु कथा, नाटक, निबन्ध, आलोचना, संस्मरण, अनुवाद), मैथिली मैगजीन आ जर्नलक विकास।

दोसर पेपर मे निम्नलिखित विद्वान आ ग्रन्थ सं सवाल पूछल जाइत अछि:

विद्यापतिक गीत शती, गोविन्द दासक भजनावली, मनबोधक कृष्णजन्म, चन्दा झाक मिथिला भाषा रामायण, लाल दासक रमेश्वरम चरित मिथिला रामायण, तन्त्रनाथ झाक कीचक-वध, सुरेन्द्र झा सुमनक दत्त-वती, यात्रीक चित्रा, समकालीन मैथिली काव्य, ज्योतिरिश्वरक वर्ण रत्नाकर, हरीमोहनझाक खट्टर काकाक तरंग, मणिपद्मक लोरिक विजय, ललितक पृथ्वी पुत्र, सुधांशु शेखर चौधरीक भफैत चाहक ज़िन्दगी, कीर्ति राजकमलक कथा-संग्रह।

आब २०१८ मे पूछल प्रश्न देखू:

प्रथम पेपर

फ़ॉरमेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज, अर्थ-संकोचक प्रकृति, मैथिली आ उड़िया पारस्परिक सम्बन्ध, मगधी प्राकृत, मिथिला अक्षरक महत्व, भाषाक परिवर्तनशीलता, भरोपीय भाषा-परिवार, मैथिलीक पांच बोलीक परिचय, मैथिली सर्वनाम, भाषाक पारिवारिक वर्गीकरण, डॉ. ग्रियर्सनक योगदान, मैथिली व्याकरण आ पंडित गोविन्द झा, वर्णरत्नाकर, शंकरदेव, वैदेही, जट-जटिन, डाक-वचनावली, आदिकाल, आसामक अंकीया नाट, मणिपद्मक योगदान, विद्यापति, करूण रस आ मनमोहन झा, आधुनिक मैथिली उपन्यास, मनबोधक कृष्णजन्म, सुंदर-संयोग नाटक, मैथिली पत्र-पत्रिका।

दोसर पेपर मे काव्य व्याख्या: 1. बागमति-कमला कोसिक धारा... तेना बहाओल शान्तिक सुरसरि, 2. चांद सार लए मुख घटना करु... त्रिबलिलता अरुझाइ, 3. गान विशद जानथि लयताल... रामचरित सुनि भेलाविरागी, 4. गुरुजन सरुचि समापि सकल अविकल जत शिक्षा... सत्य तथा श्रमसं सभ अर्थक सिद्ध सफलता,

***संपर्क** : 27, दाताराम सोसायटी, सेक्टर-18, रोहिणी, दिल्ली-110009*
***मो.**: 9811783860, **ईमेल:** drrajivverma@hotmail.com*

5. जूड़क-चूड़ मयूर-शिखंडक, मंडित मालति-माले... नागरि-नारि मरम मह हांनए लखएन पारए आन, यात्रीक चित्रा, मायानन्द मिश्र आ समकालीन मैथिली कविता, लालदास आ रमेश्वर चरित मिथिला रामायण, कीचक-वध, मनबोध आ कृष्णजन्म, मिथिला भाषा रामायण, गोविन्ददास भजनावली, विद्यापति आ जन साहित्य, सुरेन्द्र झा सुमन आ दत्त-वती।

दुनू पेपरक सिलेबस आ प्रश्नपत्र कें अवलोकन सं ई बात स्पष्ट अछि जे मैथिल समाज जकां सिविल सेवा सिलेबस आ प्रश्नपत्र सेहो पितृसत्तात्मक भावना सं ग्रस्त अछि। एतेक विद्वान लोकनिक कें मध्य एकोटा महिला विदुषी आ हुनक रचनाक चर्च नहि।

1966 सं मैथिली मे साहित्य अकादमी सं पुरस्कृत विद्वान लोकनि मे निम्नलिखित महिला साहित्यकारक नाम अछि:

1982	लीली रे	मरिचिक (उपन्यास)
1986	सुभद्रा झा	नातिक पत्रक उत्तर
2003	नीरजा रेणु	रितंभरा
2010	उषा किरण खान	भामती (उपन्यास)
2012	शेफालिका वर्मा	किस्त-किस्त जीवन (आत्मकथा)
2019	वीणा ठाकुर	परिणीता (लघु कथा)

1982 सं 2018 धरि छ: टा महिला साहित्यकार कें साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल अछि। मुदा 21म सदीक मैथिली सिलेबस मे हुनकर नामो-निशान नहि अछि। मैथिल लोकनि भगवतीक महान भक्त छथि। महिला सशक्तीकरण, लैंगिक समानताक युग मे साहित्यिक विषमता देख मोन मे कचोट होत अछि। 1982 मे पहिल महिला कें साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल। 36 बरख बीत गेल, मुदा सिलेबस आ प्रश्न पत्र मे नै तं नाम आ नै कृति- ई विकृति आब सहन नहि करब। की सीता जकां प्रत्येक युग मे मिथिलाक महिला के एहिना अग्नि परीक्षा देमय पड़त, की महिला साहित्यकार सब दिन एहि स्थिति मे रहतीह? दुख तं ईछथि साहित्य मे महिला आ पुरुष के भिन्नता कोना, जखन सभ विद्वान साहित्यकार छथि। की मैथिली साहित्य मे भगजोगनी जकां इजोत पुरुखक हिस्सा अन्हारक भागीदारी स्त्री? तनिक सोचू।

मिथिला समाज आ साहित्य कें समक्ष स्त्री संबंधित अनेक प्रश्न अछि। संविधान मे लिंग समानताक बावजूद लैंगिक समानता मिथिला भूमि मे छलावा अछि। भारत मे नारीवादी संगठनक विकास भेल मुदा मिथिला भूमि एहि सं वंचित अछि। मिथिला मे एखनो नारीशक्ति कें राष्ट्रनिर्माता कें रूप मे, सीता जकां आत्मिक शक्ति आ सहनशक्ति संपूर्ण आदर्श स्त्रीक रूप मे,

मिथिला समाज आ साहित्य कें समक्ष स्त्री संबंधित अनेक प्रश्न अछि। संविधान मे लिंग समानताक बावजूद लैंगिक समानता मिथिला भूमि मे छलावा अछि। भारत मे नारीवादी संगठनक विकास भेल मुदा मिथिला भूमि एहि सं वंचित अछि।

रक्षा करै वाली उग्र रूप धारिणी महाकाली कें रूप मे आ गांधीवादी विचारधारा वला कष्ट सहै वाली मां कें रूप मे देखल जाइत अछि। "याद राखू जे हाथ पालना झुलावैत अछि उएह दुनिया पर राज करैत अछि" एहि विचारक मिथिला मे अभाव अछि। मैथिली साहित्य मे एहि तरहक लेखनीक अभाव अछि, जाहि मे कामकाजी महिला कें पत्नी-माता-शक्तिक बजाय आर्थिक रूप सं आत्मनिर्भर होबा लेल प्रेरित कयल गेल अछि, वर्ग-चेतना पैदा क' महिला कें संगठित आ एकजुट भ' अपन स्वर प्रखर करबाक उल्लेख कतो भेल अछि। एखनो मैथिला साहित्य महिला आ लड़कीक लाचारी आ पीड़ा व्यक्त क' रहल अछि: यौन-उत्पीड़नक चिंता, शिक्षाक अभाव, लैंगिक भेदभाव, दहेज, अकेलापन, विवाह उपरान्त निजताक समाप्ति, लड़की पैदा करैक पीड़ा, विधवा जीवनक त्रासदी, सम्पत्तिक अधिकार सं वंचित। महिला सशक्तीकरण 'देवी' धरि सीमित अछि। मिथिला मे भूमिहीन महिला मजदूर वर्ग आ श्रमिक वर्ग पर रचनाक अभाव अछि।

स्त्री-पुरुष मे तं असमानता एक व्यापक प्रश्न अछि मुदा मैथिली साहित्य मे स्त्री-स्त्री कें बीच असमानता कें उजागरक अभाव अछि। जाति, भाषा, धर्म, क्षेत्र आ वर्ग पर आधारित लेखनीक आवश्यकता अछि। एकटा आर ज्वलंत प्रश्न अछि: की मैथिली साहित्य मे स्त्री कें अपन निजी जीवन पर नियंत्रण सं संबंधी लेख अछि, की स्त्री कें अपन देह पर नियंत्रणक अधिकार अछि या स्त्रीक देह सामाजिक नियंत्रणक वस्तु थीक? तनिक सोचू?

विद्यापति

लोक सेवा आयोगक सिलेबस मे विद्यापति आ विद्यापतिक गीत शतीक उल्लेख अछि। प्रश्नपत्र मे विद्यापति आ जन-साहित्य सेहो दृष्टिगोचर अछि।

जन-साधारण विद्यापतिक नाम सं परिचित अछि। ओ शृंगार-परम्परा आ भक्ति-परम्पराक स्तंभ छथि। हुनक 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' मिथिलाक जनमानस कें आंदोलित केलक।

हुनक प्रमुख रचना अछि:

संस्कृत: भूपरिक्रमा, पुरुषपरीक्षा, लिखनावली, विभागसार, शैवसर्वस्वसार, दानवाक्यावली, गंगावाक्यावली, दुर्गाभक्तितरंगिणी, गयापत्तलक, वर्षकृत्य, मणिमंजरी, गोरक्षविजय।

अवहट्ठ: कीर्तिलता, कीर्तिपताका।

मैथिली: पदावली।

सिलेबस मे मात्र विद्यापति आ विद्यापतिक गीत शतीक सं हम हुनक योगदान सं न्याय नहिं क' रहल छी। हुनक समकालीन महत्व आ योगदान पर चर्च आवश्यक अछि। जन-मानस कें आंदोलित करै वला देसिल बयना सब जन मिट्ठाक समीक्षा आजुक सन्दर्भ मे ज़रूरी अछि। तनिक सोचू?

तहिना मैथिली सिलेबस मे नागार्जुनक योगदान आ पत्रहीन नग्न गाछक उल्लेख नहि पाबि आश्चर्यचकित छी। तनिक सोचू?

अंत मे लोरिक गाथा गीतक माध्यम सं हम साहित्य सं जुडल विद्वान सभ कें मैथिली साहित्य आ संस्कृतिक प्रचार-प्रसार लेल आग्रह करैत छी।

लोरिक गाथा गीत

सहरसा जिलाक हरदी सं भेटल कांस्य प्लेट सं लोरिक गाथा गीतक साक्ष्य मिलल छल। ओना त' गया, शाहाबाद आ दरभंगा मे ई गाथा गीत प्रचलित अछि मुदा एकर मूल स्थान सहरसा जिला अछि। 13म-14म सदी मे ई गीत बड़ लोकप्रिय छल। ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मे लोरिकनाचक चर्चा अछि। तुग़लक़ वंश क' शासनक़ालीन समय कें चंदाबन मे लोरिक आ छेनैनक कथाक चर्चा अछि। ग्रियर्सन सेहो एकर उल्लेख करलैथ। आश्चर्य भ' रहल अछि जे गाथा सूफ़ी संत धरि कें सेहो प्रभावित केलक ओकरा पर बेसी खोज नहि भेल अछि।

तमिल ग्रन्थ पर बहुत लिखल गेल आ इतिहासक विद्यार्थीक ज़ुबान पर तमिल महाकाव्यक नाम रहैत अछि। तमिल महाकाव्य शिल्पादीकरम आ मणिमेगलै कोवकन आ माधवीक प्रेमकथा आ बेटी मणिमेगलैक प्रेममे असफल भ' के बौध धर्म अपनेनाय एहि पर आधारित अछि।

लोरिक गाथा गीत मैथिली साहित्यक अमूल्य धरोहर अछि, मुदा अधिकांश मिथिलावासी ई महान गाथा गीत सं अनभिज्ञ छथि।

लोरिक गौड़ केर निवासी छल आ भगवती दुर्गाक' परमप्रिय। हुनक ज्योतिष विद्या मे पारंगत पत्नी मंज़र कें भानि भेल जे लोरिक परस्त्री छेनैन केर संगे राति मे पड़ेबाक फ़िराक़ मे छथि। ओ अपन सासु के कहलैथ आ सासु अपन बेटा कें रोकै के प्रयास करलैथ। रातिमे गंतव्य स्थान पर लोरिक कें नहि पाबि कें छेनैन भगवती दुर्गा सं मददक गोहार करलक। दुर्गाक मदद सं हरदी नामक स्थान पर दूनु पावन परिणय मे बन्हा गेला। एक राति छेनैन कें सांपक दंश सं मृत्यु भ' गेल। वियोग मे लोरिक छेनैन केर संग अपना के चिता मे आगिके झोंकि देलैथ। दिव्यशक्तिक कारण आगि मिझा गेल। भगवतीक कृपा सं छेनैन ज़िन्दा भेल मुदा लोरिक हाथों जुआ मे हारि, एकटा राजाक अधीन भ' गेल। भगवतीक आशीर्वाद सं छेनैन राजा कें पराजित करलक। राजाक संगे संयुक्त राजा भ' कें लोरिक हरदी पर बारह बरीख धरि राज कयलैथ। एक राति लोरिक कोनो स्त्रीक कानब सुनलैथ आ छेनैन कें पता करबाक कहला। बूढ़ि औरतक बच्चा तीन दिन सं घर नहि लौटल छल। मूदा छेनैन औरत कें बच्चा क' लुप्त होय के बजाय ग़लत बर्तावक शिकायत करै लेल कहल। लोरिक छुपि कें सभ सुनैत छल आ ओ छेनैन कें झूठ बजवाक दोषी पेलैथ। छेनैन कें कहलैथ जे मात्र तीन दिन सं बेटाक हेरेला पर माय एतेक कनैत अछि तं बारह बरीख सं हमर माय कतेक कनैत हेती। पश्चात्तापक कारण छेनैन केर संग लोरिक वापस घर घुरला आ अपन पड़ोस मे छेनैन लेल घर बनौलैथ।

कोवलन, कण्णगी आ माधवीक' कथा विद्यालय आ विश्वविद्यालय मे तमिल साहित्य पढय कारण सभ कें पता अछि, मुदा लोरिक, मंज़र आ छेनैनक गाथा गीत मैथिली साहित्यक सीमित पठन-पाठनक अभाव कें कारण लोकप्रिय नहि भेल।

लोरिक गाथा कथा 13म-14म सदी मे लोकप्रिय रहितों एहि पर ज्यादे नहि लिखल गेल अछि। लोरिक कथा आ तमिल महाकाव्य शिल्पादिकरम (बहुमूल्य बाजूबंद) मे बहुत समानता अछि। शिल्पादिकरम केर नायक विवाहित कोवलन माधवी नामक एक स्त्री से प्रेम करलाह आ ओहि सं मणिमेगलै नामक पुत्रीक' जनमि भेल। अपन पतिव्रता पत्नी कण्णगीक कारण कोवलन कें पछतावा भेल आ ओ माधवी केर छोड़ि क' कण्णगीक पास लौटि एलाह। कण्णगी कें संग मदुरै पहुंचला आ पायक तंगीक कारणें कण्णगीक बहुमूल्य बाजूबंद बेचवा लेल जौहरीक पास गेला। ओहि समय रानी कें बाजूबंद कोय चोरैलक। कण्णगी आ रानीक बाजूबंद हुबहू मिलै क' कारण चोरिक अपराध मे कोवलन कें मृत्युदंड देल गेल। कन्नगी पूरा राज कें शाप देलैथ आ असलियत पता लगलाक बाद दुख सं राजाक मृत्यु भ' गेल।

कोवलन, कण्णगी आ माधवीक' कथा विद्यालय आ विश्वविद्यालय मे तमिल साहित्य पढय कारण सभ कें पता अछि, मुदा लोरिक, मंज़र आ छेनैनक गाथा गीत मैथिली साहित्यक सीमित पठन- पाठनक अभाव कें कारण लोकप्रिय नहि भेल।

लोक सेवा आयोग परीक्षाक मैथिली सिलेबस मे मणिपद्मजी क' लोरिक विजय रहितो मैथिल भाषी एहि महत्वपूर्ण गाथाक जानकारी सं वंचित छथि। हालक सरकारी आदेश के बाद पूरा भारत मे स्कूल मे मैथिली साहित्यक पढ़ाई कें बाद उगना आ लोरिक कथा सभक ठोर पर होयत। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा अपन एडमिशन मे मैथिली भाषा स्वीकार करनाय आं दिल्ली सरकार द्वारा आठवां वर्ग तक एच्छिक विषय कें रूप मे मैथिली भाषा कें स्वीकृति देनाय मीलक पत्थर साबित होयत। तनिक सोचू?

सन्दर्भ

1. भारत 2018 : प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली
2. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' : लोरिक विजय
3. देवशंकर नवीन : गीतिकाव्य और विद्यापति पदावली, 2015
4. शोभाकांत मिश्र, नागार्जुन : चुनी हुई रचनाएं, वाणी प्रकाशन, 2012
5. राजीव कुमार वर्मा : भगजोगनी, कखनो इजोत आ कखनो अन्हार, 2019
6. राधा कुमार : स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन, 2004
7. मैथिली आई.ए.एस. सिलेबस
8. मैथिली आई.ए.एस. प्रश्नपत्र (विविध वर्ष)

हमर शिक्षा पद्धति, यूपीएससी आ मैथिली भाषा

✍ डॉ. शेफालिका वर्मा

शेफालिका वर्मा मैथिली साहित्यक प्रख्यात नाम। साहित्य अकादेमी सम्मान, फर्स्ट वर्ल्ड वीमेन अवार्ड, लाइफटाइम वीमेन एक्सीलेंस अवार्ड, इन्डो यूरोपियन चैम्बर, भारत सरकार, यात्री चेतना सम्मान, मिथिला विभूति, स्वजन सम्मान, मिथिला रत्न, अटल मिथिला सम्मान, मैथिली की महादेवी, काव्य विनोदिनी, मुरलीधर शेखर सम्मान, मैथिली कि मीरा आदि अनेको सम्मानसं सम्मानित। हिन्दी आ मैथिलीमे दर्जनों पोथी प्रकाशित। साहित्य अकादेमी, मैथिली भोजपुरी अकादेमी, दिल्ली सरकार आओर बहुत रास संस्थामे से संबद्ध।

अपन देश मे शिक्षा आइ धरि सतत प्रयोगशाला मे रहल अछि सदिखन किछु ने किछु प्रयोग होइतहि रहैत अछि।

हमरा सभक जमाना सं पहिने मैट्रिक छल जाहि मे विद्यार्थी के सब विषय यानी विज्ञान आ कला दुनू पढनाई आवश्यक छल।

हमर जमाना मे मैट्रिक मे विज्ञान आ कला दुनू मे सं कोनो एक पढवाक प्रावधान भ' गेल, एकर बाद दुइ वर्षक इंटरमीडिएट, दुइ वर्षक बीए, दुइ वर्षक एमए के पढ़ाई।

एकर बाद अचक्के 1981 मे थ्री इयर्स डिग्री कोर्स भ' गेल, कतहु बच्चा स्कूल मे इंटर पढ़ लागल, कतहु कॉलेज में। सिलेबस के अनुसार मास्टर नै भेटैत छल। सेट थ्योरी हिसाब ककरो नै अवैत छल, ओकर ट्रेनिंग होम लागल.... मुदा ढाक के वैह तीन पात....

मैट्रिक आगू जा क' बोर्ड भ' गेल। ऑब्जेक्टिव टाइप प्रश्न आब लागल, यानी बहुत-बहुत नवीनता।

पहिने बीए करबाक उपरान्त डॉक्टर, इंजीनियर के परीक्षा होइत छल। आईएएस लेल से मारामारी होइत छल।

आब बोर्ड के बाद डॉक्टर, इंजीनियर, वकील आदि कतेको कम्पीटिशन देवा के प्रावधान भ' गेल मुदा यूपीएससी जहिना के तहिना....

जेना तीन बरीस ग्रैजुएशन तकर बाद सिविल सेवा के तैयारी, प्रक्रिया पहिने पीटी, फेर मेन, अंतिम साक्षात्कार ....

परीक्षा देवैक आयु बढ़ल जायत छथि, बच्चा सब हारि नै मानैत अछि, लागल रहैत अछि, कतेको निकलि जायत छथि तं कतेको लागल रहैत छथि, आंखि मे सपना सजोने...। सीबीएसई के परीक्षा जकां यूपीएससी के परीक्षा के ओहि ढर्रा पर ल' चलथि। सीबीएसई के बाद पीटी, मेन साक्षात्कार आदि के प्रावधान भ' जाय। एहि तीन प्रक्रिया सं गुजरैत बच्चा परिपक्व होयत जायत। देश के युवा अधिकारी भेटत, ऊर्जा भेटत, नव सोच भेटत।

एहि लेल एक बेर हल्ला उठल छल जे बोर्ड के बाद यूपीएससी सेहो लेल जाय, एक दुइ कमिटी सेहो बनल छल कोनो पीसी होता आ वाय के अलघ केर कमिटी छल जे कहलनि बोर्ड के बाद यूपीएससी के परीक्षा होइ, संगहि एकर आयु घटा देल जाय, चांस कम क' देल जाय। ओहि समय एकर विरोध मे बड्ड लोग ठाढ़ भेलाह, बहुत तरह सं बहुत विरोध भेल आ फेर सब शांत, एकटा हिलकोर उठल, हलचल भेल, फेर सबटा जहिना तहिना। परीक्षार्थी सब स्वयं आकुल व्याकुल, हुनका सब के मोने एहि परीक्षा के अधिकृत नौकरी जकां नेशनल डिफेन्स अकादमी आ रेलवे, इंजीनियरिंग जकां एससीआरए के जरिये हेवाक चाही संगे जॉब ओरिएंटेड रहवाक चाही। कतेक तरहक हल्ला उठल फेर सोडावाटर के बुलबुला जकां शान्त। प्रो. नलिनी रंजन सिंह, प्रसिद्ध शिक्षाविदक कहब छलैन्ह... एहि परीक्षा मे आमूल चूल परिवर्तनक आवश्यकता छथि, जे योजनाबद्ध तरीका

संपर्क : ए, 103, सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट्स, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
मोबाइल : 9311661847, *ईमेल :* shefalika1943@gmail.com

सं हेवाक चाही। देशक प्रत्येक राज्य सं विद्वान, निष्पक्ष शिक्षाविद के कमिटी बनाय एकरा मे परिवर्तन आनल जाय।

एहि मे दुइ राय नै जे कोनो सरकार होइ मात्र एहि अधिकारी वर्ग सं चलैत अछि। हिनक सोच, दिशा निर्देश पर राजनेता सब चलैत छथि। यानि देश के विकास लेल युवा अधिकारी अत्यंत आवश्यक। एहि लेल कतेक लोक गाम से मोटरी बान्हि, जर जमीन बेचि दिल्ली आबि तैयारी करैत बुढ़ा जायत छथि, ते कियेक ने कतेक घरक पाई बचि जायत, देशक खर्च कम होयत, मातापिता शिक्षाक बोझ सं हल्लुक भ' जेताह।

बीए एमए के पढ़ाई दू-दू बरस के राखि जहिना चलैत छल तहिना चलैत रहतैक मुदा, हिनका नौकरी देबाक जिम्मेदारी विश्वविद्यालय के दायित्व रहय, जाहि सं रिक्शा नै चलव पड़त, आकि बेरोजगारी के डांग नै लगैक।

शिक्षा मे आमूल चूल परिवर्तनक आवश्यकता अछि, प्राथमिक शिक्षा मे देश, देश भक्ति सम्बन्धी आलेख सब रहय जाहि से बच्चे सं ओकर संस्कार मे देश भक्तिक भावना के जागरण होइ, आइ बच्चा देश माने भारत जनैत अछि आकि इंडिया, एहि सं बेसी किछु नै, चरित्र निर्माण ककरा कहैत छथि बच्चा तं बच्चा पैघ लोक सेहो नै बुझैत छथि। कतेक बच्चा भारतमाता नै बुझैत अछि, अहां पूछब तं तुरत गूगल खोलि ओकर अर्थ देख' लागत।

माता, मातृभूमि, मातृभाषा एहि सब सं ओकरा कोनो सरोकार नहि, ने आवश्यकता बुझैत अछि... अपन प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था कमजोर भ' गेल आ छोट छोट बच्चा के कान्हा पर बैग भारी भ' गेल, आठ दस किलो सं बेसिये जे कम नै, पानि के बोतल, लन्च बॉक्स.... कालांतर मे रीढ़ के बीमारी कोनो ने कोनो रुपें आगू जा क' भारी पड़ि जायत अछि।

की सरकार कहियो एहि दिसि ध्यान देलनि जे देश के कर्णधार कोना बीमार आ कमजोर भेल चलल जा रहल अछि। देशक भविष्यक कोना दुर्गति भ' रहल अछि आ मात्र शिक्षा व्यवस्थाक निष्क्रियता, लकीर के फकीरी सं।

एम्हर... अपन-अपन मातृभाषा सौंसे देश बिसरि रहल छथि। जाहि ठाम माय, मातृभूमि आ मातृभाषा के केओ अपमान नै क' सकैत छल, ओहिठाम अपन मैथिली भाषा के साथ सेहो लगातार अन्याय भ' रहल अछि। कतेक विद्वान तं मैथिली मे विद्यापतिक अस्तित्व नकारि देलनि, वो अवहट्ठ के कवि छलाह, यदि विद्यापति अवहट्ठ भाषाक कवि छलाह तं विद्यापति पदावली निश्चित रूप सं अवहट्ठ मे होयत, तखन चानन भेल विषम सर रे... पुनि दरसन होइ पुनमति गंगे... एकर मैथिली अनुवाद के कयलनि?

कतेक विद्वान तं मैथिली मे विद्यापतिक अस्तित्व नकारि देलनि, वो अवहट्ठ के कवि छलाह, यदि विद्यापति अवहट्ठ भाषाक कवि छलाह तं विद्यापति पदावली निश्चित रूप सं अवहट्ठ मे होयत, तखन चानन भेल विषम सर रे... पुनि दरसन होइ पुनमति गंगे... एकर मैथिली अनुवाद के कयलनि?

कतेक भ्रामक गप्प सप्प छिरिया गेल अछि।

केओ कहलनि जे ई सामन्ती भाषा छी, विशिष्ट जाति के, गाम घरक यानी आम ग्रामीणक भाषा नै छी। आश्चर्य छथि गाम घर मे छोट पैघ सब मैथिली बजैत छथि सांच पुछु ते हमरा सब सं नीक मैथिली वो सब बजैत छथि। ठेठ मैथिली के एहेन एहेन शब्द आ मुहावरा हुनका सब लग छथि जे चकित भ' जायत छी-जकरा छोटका लोग-बड़का लोग कहै छी भाषाक अनुरूप सब बराबर छी, 19 छी हम सब हुनका सं मुदा, 21 नै। चाहे दरभंगा रहय वा कि सहरसा, पूर्णिया मूल लोकक भाषा मैथिली रहल।

मुदा एहि मे कोनो दुइ राय नै बजैत मैथिली ओ सभ अपना के मैथिल नै बुझैत छथि जखन कहलौं जे अहुं सब ते मैथिल छी, मैथिली बजैत छी ते मुंहे लागल जबाब देत - हम सब की कोनो बाभन छी जे मैथिल हैब...

ई हुनकर सभक दिमाग मे कोना ढुकल से हमरा नै पता, हम कोनो भाषा विद्वान नै छी - सत्ताईस बरस सहरसा मे रहलौं, सौंसे सहरसाक व्यापारी, मारवाड़ी दोकानदार ठेला, रिक्शा वाला, तरकारी वाला, बड़का-बड़का राजनीतिज्ञ सब सं हमरा सबके मैथिली मे गप्प होयत छल ओ सब आपस मे सेहो मैथिली बजैत छल - बाहर सं आयल सरकारी अधिकारी छोड़ि। मुदा केओ अपना के मैथिल नै बुझैत। एतेक धरि कर्ण कायस्थ तक नै बुझैत - कैथ माने कायथ। ...ई सब गवेषणा के विषय भ' जायत अछि। सब ठाम जोर जबरदस्ती के ज़माना थिक। बीच मे आरक्षण लागू करि लोक के लोक सं तोड़ि देल गेल। पैघ छोटक बात हवा मे नै, लोकक मन मे घर कय गेल। जाहि अम्बेडकर के लिखल संविधान पर देश चलि रहल अछि, कानून चलि रहल अछि, ओ ककरा सं कम अछि, ओहि अम्बेडकर के आरक्षणक कोन आवश्यकता? ई एकटा बड़का अवरोधक विकास मे रहल। भुसकोल विद्यार्थी बडको लोक मे अछि तं छोटको लोग में... आरक्षण ककरो दिमाग नै दैत छथि। ओहिना मिथिला राज्य सेहो खाली दरभंगा आ दिल्ली मे अछि मुदा राजक विस्तार की देखाओल जाय, कोनो नुकायल अछि की?

हम टेक्स्ट बुक कमिटी मे बिहार सरकार मे छलौं, मैथिलीक पांच छह गोटे विद्वानक संग। स्कूल मे मैथिली पढयबा लेल सिलेबस तैयार क' सब क्लासक

पाठ्य पुस्तक तैयार करैत रही। हमरा मन अछि दुइ टा पुस्तक मे हमरो आलेख छल। वर्ग नओ आ वर्ग छह मे शायद। हप्ता मे दुइ तीन दिन टेक्स्ट बुक कमिटी के मीटिंग होयत छल। कहल गेल लेखकीय प्रति देल जायत। पुस्तक छपि गेल छल। कमिटी के ऑफिस के पाछा एकटा छोट सन दोकान छल सरकारी ओ पाठ्य पुस्तक बेचैत छल। हम सब ओहि ठाम सं पाई दय पुस्तक किनने छलौं। पता नै की भेल सिलेबस, कतय गेल ओ पोथी सब?

सब सं दुखद जे आइ हमरा सब के सोझा झारखंड मे मैथिली के द्वितीय भाषा बनाओल गेल, हमर सीताक नगरी, आ किछु नै... मिथिला आ मैथिलीक संग शुरुए सं दुइ तरहक व्यवहार होइत रहल। जेना एक दिस नारी के स्वर्ग सं ऊपर स्थान दैत छी, दोसर दिस ओकरा संग अत्याचार होइत रहल। संविधान मे मैथिली अनवा लेल कतेक संघर्ष भेल छल, ओहि समय संघर्ष मे सेतु बांधक लुक्खी जकां देह मे माटि लगा छिरियाव मे हमहुं रही।

मैथिलीके संविधानमे स्थान देबाक लेल डॉ जयकान्त मिश्र सक्रिये टा नहि छलाह वरन् आंदोलनक नेतृत्व सेहो क' रहल छलाह। एक बेरि हमरा अचानक हुनक फोन आयल जे फलां तारीखकें राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा सं भेंट करबा लेल मैथिलीक डेलीगेशन जा रहल अछि। अहां तुरत दिल्ली चलि आऊ, परिस्थिति हमर विपरीत छल, हम नहि जा सकलहुं किंतु, हुनक अनुमतिसं हम अपन पुत्र राजीवकें जे दिल्ली विश्वविद्यालयमे प्राध्यापक छलाह, डेलीगेशनमे पठा देलहुं। राष्ट्रपति संग मैथिली लेल राजीवक गप सुनि जयकांत जी बड़ आनंदित आ संतुष्ट छलाह।

एक दिन जयकान्त जीक फोन आयल वर्मा जी के – 'हम चाहैत छी अहींसं ड्राफ्टिंग कराबी। हम हाइकोर्टमे मैथिली लेल मोकदमा कर चाहैत छी।' वर्माजी अकचका गेल छलाह। पटना हाइकोर्टमे एकसं एक ओकील छलाह। कतेको तं हुनक अपन आत्मीय सभ रहथि। मुदा ओ कहलनि हमरा सब कहलनि जे ललन कुमार वर्मा सं ड्राफ्टिंग कराबी, वर्मा जी किछु नहि बजलाह। कतेको शोध कय, अपन जूनियर अशोक वर्मा, अनिल मिश्रा, संजीव वर्मा के संग मिथिला मैथिली के कानूनी जामा पिन्हाय जे ड्राफ्टिंग तैआर देखलनि तं जयकांत जीक मुंहसं अनायास बहरा गेल, 'ई तं ऐतिहासिक दस्तावेज भ' गेल।' बड़ा खुश भ' गेल छलाह। ओना वर्माजीक केसक ड्राफ्रिटंगक बड़ चर्च छल। सहरसा, पूर्णिया आदि सभ ठामसं ओकिल सभ पटना आबि वर्माजीसं अपन केसक ड्राफ्रिटंग करबैत छलाह।

मिथिलांचल मे सब ठाम मैथिलीक उच्चारण, स्वराघात, बाजवाक तरीका सभक अलग अलग छल – सब सं पैघ गलती तखने भेल जे ओहि स्वराघात के आधार पर अंगिका आ बज्जिका के जन्म भ' गेल, यानी मैथिली के अंग काटल गेल एखनो दरभंगा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, सहरसा, खगड़िया, पूर्णिया, कटिहार सब केओ मैथिली बजैत छथि मुदा, बलाघात, स्वराघात, स्वरोच्चारण सब ठामक अलग अलग अछि – स्थिति सभक सोझा अछि...

यूपीएससी मे एतवे नै किछु आर परेसानी एक बेर विश्व पुस्तक मेला मे यूपीएससी के किछु परीक्षार्थी सब हमरा सं पूछ लगलाह – मैडम किस्त किस्त जीवन हम सब खोजि रहल छी, दिल्ली सं पटना धरि कतहु नै भेटल, कोना भेटत, हम सब मैथिली सं यूपीएससी क' रहल छी, हमर असमर्थता देखि ओ सब कहलनि – मैम एहि पोथीक विषय मे कतहु किछु समीक्षा भेटत की?

हम जतेक जे जनैत छलौं फुटकर किछु समीक्षा के चर्च क' देलौं, किछु हुनक प्रश्न सभक उत्तर सेहो देलौं।

फेर दिल्ली विश्वविद्यालय के गेस्ट हाउस मे बीपीएससी मे जे सब फाइनल पोस्टिंग मे जा रहल छलाह, हुनक भव्य स्वागत समारोह छल। सांसद मनोज तिवारी, मनोज झा दुनूक संग हमहुं छलौं।

स्वाभाविक जे बहुत मैथिल युवा छलाह जे सब परीक्षा द' रहल छलाह – हमरा घेरि लेलनि – अहांक किताब सब हमरा सबके कतय भेटत?

मन मे सोचलौं हमरा ते अपन थाहे नै अछि, यायावरी मन–यायावरी तन; पोथी सब एकबेर प्रकाशित भेलाक बाद कतय चलि जायत अछि – कहियो सोचबो नै केलौं। ओहि मे सं एकटा परीक्षार्थी बाजल – अहां लग यदि ओहि पोथी सभक समीक्षा अछि तं ओकरा एक ठाम निकालि दियो ने; हम चौंक गेलौं कारण, जे सब हमर साहित्य पर शोध क' रहल छल, ओ सब सेहो एकबेर बनारस मे हमरा घेरि पूछने छलाह – हमरा सबके अहांक जीवनी, अहांक पोथी सभक सामग्री कतय भेटत मैडम...,

मैथिलि मे नंबर आहौ

तखन ध्यान मे हम चौंकि उठलौं – कतेक नीक बात – तखन खियाल मे आयल एहि सभक संकलन ते निकालि सकैत छी। आ प्रयास मे छी, चारि कोस पर पानी बदले पांच कोस पर बानी...

एहि अनुसार मिथिलांचल मे सब ठाम मैथिलीक उच्चारण, स्वराघात, बाजवाक तरीका सभक अलग अलग छल – सब सं पैघ गलती तखने भेल जे ओहि स्वराघात के आधार पर अंगिका आ बज्जिका के जन्म भ' गेल, यानी मैथिली के अंग काटल गेल एखनो दरभंगा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, सहरसा, खगड़िया, पूर्णिया, कटिहार सब केओ मैथिली बजैत छथि मुदा, बलाघात, स्वराघात, स्वरोच्चारण सब ठामक अलग अलग अछि – स्थिति सभक सोझा अछि...

बीपीएससी मे मैथिली छल, ओहि अनुसार कतेक आलोचनात्मक पोथी सब छपि गेल, यूपीएससी मे मैथिली आइयो अछि, हम स्वयं कतेक बेर प्रश्नपत्र तैयार करवा लेल यूपीएससी ऑफिस जायत छलौं, जे सही मे बड़का देवार सं घेरल, हवो के नै पता चलय, कोन कोन गलियारा सं अंत मे एकटा हॉल मे बैसैत छलौं, ओहि मे सब भाषा के अपन अपन दुइ गोटे, हम मैथिली मे असगरे, पांच पांच वर्षक प्रश्न पत्र हमरा सब के देल जायत छल - सरिपों, मैथिली के सरल प्रश्न के एतेक घुमा के पूछल जायत छल जे खाली मैथिल टा बुझि सकैत छलाह, आन भाषा भाषी नै! किएक ते एकटा भ्रम पसरल छल जे मैथिली मे बड्ड नंबर अवैत छथि... भोजन लेल धौलपुर हाउस के भीतर मे होटल तकर एक कोठरी मे खाली हम सब, कोनो शक नै पूर्ण गोपनीयता रहैत छल।

आई वैज्ञानिक क्रांति आ वैचारिक क्रांति सं समस्त विश्व विकासक बात पर उन्मादित अछि। मानव चान-तारा पर घर बनेवाक कल्पना करए लागल अछि। विचार मे, पुरूष तं की, आई नारियो समस्त श्रृंखला के तोड़ि अपन अस्तित्वक लेल अपन बाट स्वयं चुनि रहलीह अछि। विकासक एहि प्रक्रिया सं विश्वक कोनो भाषा कोनो साहित्य अप्रभावित नहिं रहल।अंग्रेजी कें विश्वभाषा कहल जाइत अछि किन्तु अंग्रेजी भाषा अपना मे कतेक ठामक रूप, कतेको ध्वनि उच्चारण आदि समाहित कय विश्वभाषा बनबाक प्रयास क' रहल अछि। राष्ट्रभाषा हिंदीक परिवर्तित रूप ठामे-ठाम देखाइ पड़ैत अछि-छत्तीसगढ़ी हिन्दी, राजस्थानी हिन्दी लखवी हिन्दी, हरियाणवी आदि-आदि। राष्ट्रभाषा हिन्दी एहि सब रूप कें अपना मे समाहित केने अछि। तें राष्ट्रभाषा हिन्दीक विपुल शब्द भंडार अछि। आइ मैथिली भाषा संक्रमण काल मे अछि। मैथिलीक इतिहास मे जखन मिथिलाक क्षेत्र नक्शा मे देखाओल जाइत अछि, तं मुजफ्फरपुर, सहरसा, पुर्णियां, कटिहार, भागलपुर सं ल' क' दरभंगा, मधुबनी समस्तीपुर, सीतामढ़ी आदि कें सेहो देखाओल जाइत अछि। जानल बात छथि जे सभ ठामक बोली उच्चारण ध्वनि मे भिन्नता छथि।

मुदा हम सब भाषाक उच्चारण विभिन्नता के अलग नै क' सबटा अपना मे समाहित क' ली ते मैथिली के सेहो विश्व भाषा मे स्थान भेटत।

अन्तमे, किछु दिन पहिलुका गप्प अछि, दक्षिण के एकटा लड़का बाजल - मैडम मैं यूपीएससी मे मैथिली रख सकता हूं? हमरा अचरज लागल - आप तो दक्षिण के हैं, ...बहुत निश्छल स्वरे वो बाजल - मुझे कुछ लोगों ने कहा - मैथिली मे कुछ नहीं है - तुम बोलते हो मैं जा रहा हूं - "हूं" नहीं लिख कर सब मे "छी" लगा देना मैं जा रहा छी - हरेक वाक्य मे छी लगा देना - हो गई मैथिली - अंक अच्छे आएंगे।

पहिल बेर जखन मैथिली भाषा मैट्रिक के परीक्षा मे, 50 नम्बर मैथिली आ 50 नम्बर हिन्दी सिलेबस मे आयल छल, शायद पचासक दशक होयत तखनहि सं हवा मे बात पसरि गेल जे मैथिली मे बहुत अंक अबैत अछि। आबितो छल, छात्र मे मैथिली के लोकप्रिय बनयवा लेल। वैकल्पिक विषय मे एक सय नम्बर के या ते हिन्दी लिय या मैथिली या किछु आर भाषा सब छल। तखन मैट्रिक मे लहरि उठि गेल

हम बुझि नै सकलौं ओकर बात पर कानि कि हंसी।

मुदा तखन बुझलौं, जे कियेक आन भाषा भाषी सब मैथिली प्रतियोगिता परीक्षा मे राख चाहैत छथि। एकटा मानसिकता बनि गेल प्रतियोगी परीक्षार्थी के डोगरी, राजस्थानी, तमिल, तेलगु सब भाषी अपन भाषा छोड़ि मैथिली लेवा लेल....

एकर जड़ि सुदूर अतीत मे अछि, पहिल बेर जखन मैथिली भाषा मैट्रिक के परीक्षा मे, 50 नम्बर मैथिली आ 50 नम्बर हिन्दी सिलेबस मे आयल छल, शायद पचासक दशक होयत तखनहि सं हवा मे बात पसरि गेल जे मैथिली मे बहुत अंक अबैत अछि। आबितो छल, छात्र मे मैथिली के लोकप्रिय बनयवा लेल। वैकल्पिक विषय मे एक सय नम्बर के या ते हिन्दी लिय या मैथिली या किछु आर भाषा सब छल। तखन मैट्रिक मे लहरि उठि गेल, अमैथिल सब सेहो मैथिली लिय लागल, कारण हिन्दी के प्राध्यापक, अध्यापक कतबो सुन्दर अहां लिखी, केओ हिन्दी मे पचास सं बेसी अंक नै दैथि। हम 59 मे मैट्रिक केने छलौं, तकर पहिने से शायद ई सिलेबस छल। चूंकि हमरा मैथिली नै छल, हिन्दी मे सपना देखैत छलौं बच्चे सं।

जखन हम कॉलेज मे हिन्दी पढ़ब लगलौं, तखन कारण बुझलौं एहि मानसिकता केर। हम सहरसा के सर्व नारायण राम कुमार सिंह कॉलेज मे हिन्दी विभागक अध्यक्ष रही, मिथिला विश्वविद्यालय के अंदर। एकबेर कॉपी जंचबाक लेल सेंटर पड़ल सी एम साइंस कॉलेज दरभंगा, जे हमर सभक हेड छलाह बेर बेर घुमि एतवे बजैत छलाह, यदि आप किसी को 60 अंक देते हैं तो पहले कॉपी मुझे दिखा दें...

हम अकच्छ भ' कहलौं, सर जो अच्छा लिखेगा, उसे भी नहीं?

नहीं, हिन्दी मे विरलों को ही 60 परसेंट मिलता है,

हमरा ध्यान मे आयल पटना साइंस कॉलेज के प्रोफेसर लेल वर्मा जी कहैथ, फलां प्रोफेसर एतेक बेसी अंक दैत अछि, फलां एतेक कम, असल मे जकरा जतेक अंक अपना भेटल रहै छथि, ओहि से बेसी ककरो देव' लेल नै चाहैत अछि

जकरा खूब अंक अबैत अछि ओ विद्यार्थी के कनिको नीक देखला पर अंक उझलि दैत छथि।

हमरा ते आब कोनो प्रोफेसर के नामो नै मन अछि।

हमहुं एकरत्ती नीक कॉपी देखि 65 धरि नम्बर द' दैत छलौं, कहिते नै छलौं हुनका। हमर बगल मे अंग्रेजीक ग्रुप छल ओ सब दुनू हाथ सं अंक लुटा रहल छलाह आ खूब खुश, मुदा ई हिन्दी विषय के मानसिकता सौंसे भारत मे जे अंक कम अबैत छल शायद, अंग्रेज सब अपन पूंछरी छोड़ि गेल।

आ यैह कारण बनल जे मैथिलीक लोकप्रियता अदृश्य रूपे विद्यार्थी वर्ग मे बढ़ैत गेल।

70 या 80 के दशक छल, हम सहरसा गंगजला मे रहैत छलौं। मैट्रिक के परीक्षा चलि रहल छल, बगल मे रह' बाला एकटा परीक्षार्थी दौड़ल आयल, चाची चाची, आय अहां पर लेख लिखबा लेल आयल, हम अकचका गेलौं, की छल प्रश्न, तीन चारि टा लेखकक नाम संग अहूंक नाम छल, कोनो एक पर लेख लिखू, बस हम ते अहां पर लिखलौं। जिज्ञासा वश पुछलौं, की सब लिखलौं बाबू .... हुलसैत ओ बाजल, अहां हमर घर के बगल मे रहैत छी, रोज भोरे चाचा जीक संग टहल' जायत छथि, हमरा सब के बड्ड मनैत छथि .... हम किछु नै बजलौं, अपन कपार ठोकलौं, जो रे बौआ तू जेहन पास करे। ओना विद्यार्थी नीक छल, फर्स्ट डिवीजन सं मैट्रिक पास केलक।

मैथिली भाषा कतेक जद्दोजहद के बाद आइ शीर्ष पर पहुंचल, लेकिन कियेक आन भाषा भाषी एखनो मैथिली लेबा लेल जान दैत छथि, ई ते विद्वान वर्ग जनताह, सुधि समीक्षक जनताह, आलोचक प्रवर जनताह, हम ते किछु नै, जे लिखलौं मात्र हमर अप्पन अनुभूति अछि अप्पन संस्मरण।

सबके सहयोगें होइत अछि भाषाक संवर्द्धन

सुदूर अतीत सं हिंदी भाषाक दुर्भाग्य रहल अछि जे हिन्दी के मठाधीश लोकनि कहियो हिन्दी के संग न्याय नै केलनि। हिन्दी भाषाक पत्र मे अंक देवा मे एतेक कंजूसी जेना हुनक अप्पन जेब सं जा रहल हो। उत्तर पुस्तिकाक मूल्यांकन मे आरम्भहि सं अंक कम देल जायत छल। ओ लोकनि कहियो हिन्दी के मुक्त हवा मे विहुंसय नै देलनि। आय ओहि संकीर्ण मानसिकताक परिणाम अछि।

बाइस वैकल्पिक भाषा मे हिन्दी सेहो एकटा भाषा अछि, ओ कियेक नै ओतेक अंक दय छथि जे हिन्दी के छात्र अन्य अन्य भाषा मे घुसपैठिया भ' जायत छथि? ई गम्भीर समस्या सभक सोझा अछि।

मैथिली विषय सं जे आईएएस बनैत छथि, मैथिलीक विकास मे हुनको योगदान रहैत अछि। विद्यापति मात्र कियेक, नागार्जुन छथि, आरो कतेक साहित्यकार छथि, टैगोरक जन गण मन आइ राष्ट्रीय गान बनि गेल। बौद्ध साहित्य प्राचीन इतिहासक अंग थिक मुदा, ओकरो अलग अस्तित्व अछि। एहि विषय सं सेहो कतेको आईएएस बनैत छथि, एहि सं खाली बौद्ध धर्महि नै वरन प्राचीन इतिहास सेहो ज्योतित होइत अछि।

संघक वैकल्पिक भाषा मे जानल अछि जे ओहि भाषाक विद्वान लोकनि उत्तरपुस्तिकाक मूल्यांकन करताह, जेना, डोगरी के डोगरीक विद्वान, पंजाबी के पंजाबीक विद्वान तं मैथिली के मैथिलीक विद्वान। संघ तं संथाली भाषा के छात्र कें सेहो एतेक अधिकार देने अछि जे ओ चाहैत तं देवनागरी लिपि मे लिख सकैत छथि या अपन लिपि ओलचिकी मे लिखैत।

आइ लोगक आरक्षणक नियमन के समीक्षा मे लागल अछि, मुदा, एहिठाम ते भाषा सभक अंकन केर प्रश्न ठाढ़ कयल गेल।

मैथिली विषय सं जे आईएएस बनैत छथि, मैथिलीक विकास मे हुनको योगदान रहैत अछि। विद्यापति मात्र कियेक, नागार्जुन छथि, आरो कतेक साहित्यकार छथि, टैगोरक जन गण मन आइ राष्ट्रीय गान बनि गेल। बौद्ध साहित्य प्राचीन इतिहासक अंग थिक मुदा, ओकरो अलग अस्तित्व अछि। एहि विषय सं सेहो कतेको आईएएस बनैत छथि, एहि सं खाली बौद्ध धर्महि नै वरन प्राचीन इतिहास सेहो ज्योतित होइत अछि।

मैथिली भाषाक साहित्यकारक योगदान के मात्र किछु सुविधाक संग जोड़नाय अपमानजनक अछि। भारत विभिन्न भाषा भाषीक देश अछि, तं फेर खाली मैथिली भाषा सं भय कथीक... जे सर्वथा असत्य अछि। ई हुनका सब ले चिन्तनक विषय थीक।

हुनका सोचबाक चाही जे आखिर हम हिन्दी के उत्तरपुस्तिका मे प्रचुर अंक कियेक ने दैत छी, जे विद्यार्थी आन आन भाषा दिस, खास कय मैथिली भाषा दिस भागैत छथि, हम कियेक ने एतेक अंक छिरिया दैत छी जे हिन्दी भाषा सेहो मुक्त उन्मुक्त हवा मे सांस ल' सकय... एहि कारण हिन्दी आइ धरि पूर्ण राष्ट्रभाषा नै बनि सकल। दक्षिण बाला मैथिली ल' लैत छथि परीक्षा मे, मुदा, हिन्दी नै, जखन कि ओ देवनागरी मे लिखैत छथि...।

एहि मे कोनो शक नै मैथिली भाषा साहित्य के अनुवाद हिन्दी अंग्रेजी मे त्वरित गति सं होम लागत ते मैथिली साहित्यक गणना विश्व साहित्य मे भ' जायत।

कोनो एक नक्षत्र सं अकास नै भरैत अछि, कोनो एक फूल सं उद्यान नै बनि जायत अछि, कोनो एक भाषा सं देश नै समृद्ध होयत अछि... ई सर्वथा विचारणीय विषय थीक संगहि ज्वलन्त समस्या, आबो हिन्दी के मठाधीश चैति जाथि... ■

संघ लोक सेवा आयोग परीक्षामे मैथिली : अनुभव ओ सुझाव

✍ अमित कुमार झा

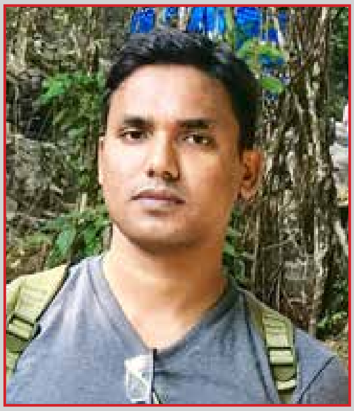

लेखक संघ लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित वर्ष 2015 बैच के भारतीय डाक सेवा अधिकारी छथि। पूर्वमे ओ आईआईटी, कानपुर सं इंजीनियरिंग विषयक पढ़ाई कयने छथि।

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) लोक सेवा परीक्षामे मैथिली विषय बहुत साल पहिनहि सम्मिलित कयल गेल। एहि प्रतियोगिता मे मैथिली विषयक प्रदर्शन ओ एहि विषयसं तैयारी कोना कयल जाय, एहि पर समर्थन चलितहि रहत आ चलबाको चाहिए। एहि क्रममे हम अपन एहि आलेख मे मैथिली विषय पर अपन अनुभव आ अनुभवजनित विचार ओ सुझाव लोकनिक सोझां राखब।

अभ्यर्थी सभक ऐच्छिक मे कोन आधार पर मैथिली चयन करताह?

हमर अपन अनुभव ई छल जे मैथिली हमर मातृभाषा थिक आ घर-परिवार मे सदिखन मैथिलीये मे वार्तालाप करबाक कारण ई ऐच्छिक विषय रूप मे यूपीएससी मे हमर सहज विकल्प छल। संगहि ईहो बात हमरा आकृष्ट कयलक जे मैथिलीक साहित्यक अध्ययन सं ओहि मिथिला समाणक बारे मे विस्तृत जान थेरत जाहि समाजसं विद्यार्जनक विवशतावश नहि चाहितहुं दूर रहय पड़ल। आइआईटी कानपुरसं स्नातक उपाधि भेटलाक बाद विज्ञान संबंधित विषय यथा भौतिकी, रसायनशास्त्र वा गणित विषयकें ऐच्छिक विषयक रूपमे राखबाक दुविधा सेहो कनेक छल मोनमे। मुदा ओहि समय मे अपन सीनियर सभ मैथिलीक किछु जानकार लोकनि सं बात कयल आ मातृभाषाक प्रति अनुराग सेहो रहय' आ तैं हम मैथिली विषयक चयन कयलहुं।

नव अभ्यर्थी लोकनिक लेल हमर विचार जे जाहि विषयसं अहांक स्नातकक उपाधि भेटल, ताहिमे जों अहांक आत्मविश्वास अहि, ता हमर स्पष्ट सुझाव होयत जे स्नातक वला विषय लय क' यूपीएससी मे आगू बढ़ू। जौं ओहि विषयमे आत्मविश्वास ओतेक नहि हो, तखने मैथिली वा कोनो आन नवविषय दिस बढ़ू।

कोनो विषय एहि आधार पर नहि लिय जे लोकसभ कहैत छथि जे फलां विषय आसान छैक वा फलां विषयमे बेसी नंबर भेटैत छैक। अहां यूपीएससी मे अंक निर्भर करत ओहि विषयसं अहांक लगाव आ ओहिपर अहांक ज्ञान पर। ई मोनमे स्पष्ट कय लिय जे मैथिली विषय ओतवे आसान वा मुश्किल छैक जतेक कोनो आओर ऐछिक विषय।

मैथिलीसं लोक सेवा परीक्षाक तैयारी मे सहजता, दुर्गता ओ समस्याक आंकलन

जनिकर मातृभाषा मैथिली छन्हि, तनिक लेल ई विषय सहज ओ दुर्गम दुनू अछि। सहज किएक त' मैथिली भाषासं अहां पूर्णत: परिचित ही त' मैथिली भाषा साहित्यक इतिहास वा मैथिलीक पोथी सभ पढ़िके बुझबामे कोनो विशेष असौकर्म नहि होयत। मुदा यैह सुगमता मैथिली भाषा लोकनिकें अति आत्मविश्वास सेहो दय दैत छन्हि, परिणामत: ओ मैथिली विषयकें कनेक हल्लुक तरीकासं लय लैत छथि आओर यैह मनोवृत्ति हुनकर सफलताक पथकें दुर्गम बना दैत छन्हि।

संपर्क : फ्लैट नं.-302, कैलाश अपार्टमेंट, जगदेवपुरी, पटना-800014
मो. : 8789217062, ईमेल : iitkamitj@gmail.com

सिविल सेवा व लोक प्रशासनमे मैथिली विषय : दिशा व दशा

✍ रूपेन्द्र कुमार झा
प्रखण्ड विकास पदाधिकारी
परिहार, सीतामढ़ी

मैथिली भाषा उत्तर बिहारक लोक संस्कृतिक प्राण अछि। एहि भाषा सं संपूर्ण मिथिला क्षेत्र अच्छादित अछि। संगहि शेष बिहारक दोसर भाषा आ बोलीक लेल संपर्क भाषाक काज मैथिली सं सिद्ध होयत अछि।

हम सब गोटे ई बात बुझि रहल छी जे सिविल सेवाक' सपना शिक्षित युवा के होयत अछि। केंद्रीय सेवा (यूपीएससी) केर प्रतिष्ठित परीक्षा मे ई विषय मैथिलीक आठवीं अनुसूची मे जुड़लाक बाद शुरू भ' गेल। ओहि वर्ष (प्रथम वर्ष सं) आइ धरि लगभग सब वर्ष ई विषय लेबाक लेल मिथिला/मैथिली पृष्ठभूमि सं युवकगण चुनैत छैथि। आ अंतिम रूप सं सफल भ' लोक प्रशासन मे अहम भूमिकाक निर्वाह करैत छथि। एहि भाषाक लोक प्रशासन व सिविल सेवामे महत्व देबाक आवश्यकता अछि।

बिहारक परिदृश्य मे देखल जायत मैथिली भाषाक वैकल्पिक भाषाक रूप मे सूचीबद्ध कयल गेल अछि। किंतु दुर्भाग्यवश किछु समय (वर्षक लेल) एहि भाषाक वैकल्पिक भाषाक रूपमे उपेक्षा सेहो राजनैतिक कारण सं पूर्वमे भेल अछि। मिथिला, मैथिली संघर्षक प्रतिफल जखन एहि भाषाक आठवीं अनुसूची मे सूचीबद्ध कयल गेल ओहि वर्षक बाद यूपीएससी सन प्रतिष्ठित परीक्षामे एहि विषयक वैकल्पिक/ऐच्छिक विषयक' दर्जा भेटल।

वर्तमान समयमे बीपीएससी एवं यूपीएससी दुनू केंद्रीय व राज्य सिविल सेवामे एहि विषय के चुनिक युवा लोकनि (परीक्षार्थी) सफल भ' मैथिली भाषा व मिथिला क' गौरवान्वित करैत छथि।

विषय-वस्तुक समीक्षा कयल जायत तं एहि विषयमे दू पेपर होयत अछि। पहिलुक भागमे भाषा विषयक परीक्षण व दोसर भागमे साहित्य आ व्याख्या संबंधी प्रश्न पुछल जायत अछि। किछु वर्ष पहिने परीक्षार्थीक दुटा वैकल्पिक/ऐच्छिक विषय रखबाक अनिवार्यता छल मुदा बीपीएससीमे (62वीं बीपीएससी) सं एकटा विषय वैकल्पिक रखबाक अनिवार्यता क' देल अछि। यूपीएससी सेहो एक भाग वैकल्पिक विषयक अनिवर्यता रहि गेल। ई स्पष्ट केनाय आवश्यक अछि जे सिविल सेवामे सामान्य अध्ययन क' पेपर सब परीक्षार्थीक लेल अनिवार्य अछि। वैकल्पिक विषयमे लगभग सब विषय सूचीबद्ध अछि। एखनि धरि सामान्य अध्ययन (बीपीएससी) मे दू पेपर होयत अछि। पेपर-1 300 व पेपर-2 300 अंक आ वैकल्पिक विषय 300 अंक। साक्षात्कार 120 अंक। एहि संयुक्त मेधा पर आधारित अभ्यर्थीक चयन होयत अछि। यूपीएससी मे मुख्य परीक्षामे सात पेपर होयत अछि (निबंध पेपर सहित)। एहिमे दू पेपर वैकल्पिक विषयक 250-250 अंकक होयत अछि। आ साक्षात्कार 275 अंक।

मुख्य परीक्षाक लेल मैथिली विषयक अवलोकन कयल जाय तं बीपीएससीमे पाठ्यक्रम अछि।

पेपर-1

(1) मैथिली भाषाक इतिहास, यूरोपीय भाषा परविार मे मैथिली भाषाक स्थान, मैथिली भाषाक उद्‌गम, मैथिली भाषाक ऐतिहासिक विकास क्रम, हिंदी, बांगला, भोजपुरी, मगही एवं संथाली भाषाक संग मैथिलीक संबंध, मानक मैथिली भाषाक विशेषता।

दोसर गप्प जे मैथिली बाजब आ लिखब म कनेक अंतर छैक आ ओहि अंतरकें बुझि अपन लेखन शैलीक परिष्कार करब परमावश्यक।

गैर मैथिलीभाषी अभ्यर्थी लोकनिक लेल हमर सुझाव जे मैथिली एकटा सुगम भाषा थिक जकर अन्यान्य उत्तर, परझी ओ पूर्वी भारतीय भाषासं बहु समानता। तें अहां मैथिलीक कुशल शिक्षकलोकनिक मार्गदर्शनमे मैथिली भाषा ओ साहित्यकें पढ़बाक ओ लिखबाक खूब अभ्यास करू। अहांक लेल नीक बात ई अछि जे मैथिली एकटा नव भाषा थिक अहांक लेल आ तैं अहांसभ अति आत्मविश्वास मे जल्दी नहि आयब आ सैह मनोवृत्ति अहांक अपन लेखन ओ अभिव्यक्ति शैलीक परिष्कृत करबामे सहायक होयत।

मैथिली विषयक पाठ्यक्रम, पाठ्यसामग्री ओ मार्गदर्शन

मैथिली विषयक पाठ्यक्रम (सिलेबस) कोनो आन भाषाक पाठ्यक्रमे जकां बनाओल गेल अछि। अहां सभक ज्ञात अछि जे एहिमे दूटा पत्र होइछ। पहिल पत्रमे मैथिली भाषा-साहित्य इतिहास, क्रमगत विकास, व्याकरण ओ लिपिक अध्ययन अपेक्षित अछि। द्वितीय पत्रमे गद्य ओ पद्यक रूपमे मैथिलीक विशद साहित्य सागर मे, एक-दू टा डुबकी लगयबाक अबसर भेटैह।

मैथिलीक विषयक अभ्यर्थीक रूपमे हमर अनुभव ई अछि जे मैथिलीक प्रथम पत्रमे उपलब्ध पठन सामग्रीक गुणवत्तामे सुधारक बहु गुंजाइश छैक। अनेक शिक्षकसभ अपन कोचिंगक मे अध्ययन सामग्री उपलब्ध करबाक भरिसक प्रयास करैत छथि, मुदा उपलब्ध पठन सामग्री

(2) मैथिली साहित्यिक इतिहास - मैथिली साहित्यक काल-विभाजन, कालक प्राकृतिक विशेषता।

आधुनिक मैथिलीक कविताक इतिहास।

आधुनिक मैथिलीक उपन्यासक इतिहास।

मैथिली-निबंध एवं आलोचनात्मक विकास।

पेपर-2

(1) विद्यापति पदावली

(2) गोविंददास भजनावली मैथिली अकादमी।

(3) कृष्ण जन्म-मनबोध

(4) मिथिला भाषा रामायण (सुंदरकांड मात्र)

(5) चित्रा-यात्री

(6) सूर्यमुखी-आरसी प्रदास सिंह

(7) मिथिला नाटक

(8) कन्यादान व दुरागमन - प्रो. हरिमोहन झा

(9) प्रबंध संग्रह - प्रो. रमानाथ झा

(10) ललका पाग - (राजकमल)

एहि तरह सं यूपीएससी पाठ्यक्रम अछि।

पेपर-1 : खंड (क) मैथिली भाषाक इतिहास खंड (ख) मैथिली साहित्यिक इतिहास।

पेपर-2 : खंडक विद्यापति, गोविन्ददास, कृष्ण जन्मनबोध मिथिला भाषा रामायण-लालदास, कीचक वध-तंगनाथ झा, दत-वती - सुरेन्द्र झा 'सुमन' (प्रथम और द्वितीय सर्ग) चित्रा-यात्री, समकालीन मैथिली कविता।

खण्ड (ख) वर्णरत्नाकर, खट्टरककाक तरंग, लोरिक विजय-मणिपद्म, पृथ्वीपुत्र-ललित, मझाइत चाहक जिनगी-सुधांशु 'शेखर' चौधरी कृति राजकमल, कथा संग्रह आदि।

लोक प्रशासन (बिहारक संदर्भ) व केंद्रीय सेवामे मैथिली विषय सं चयनित अभ्यर्थीक सामाजिक विकासमे महत्वपूर्ण भूमिका छनि। संपूर्ण बिहारमे मैथिली भाषक पृष्ठभूमि वला अभ्यर्थी प्राय: मिथिला क्षेत्र सं संबंध राखैत छैथ। चयनित भेलाक बाद हुनक पदस्थापन बिहारक प्रशासनिक इकाईमे होयत अछि। ओ अपन अनुभव सं स्थानीय समस्याक नीक ढंग से बुझनिहार छथि। विभिन्न प्रशासनिक सुझाव, दायित्व निर्वहन मे एहि विषयक अभ्यर्थी अपना साथ एक सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषता क' सेहो निर्वहन करय छथि।

वर्तमान परिदृश्य मे स्थानीय प्रशासनक लेल सरकार आ आम-अवामक बीच लोक प्रशासक कड़ीक काज करय छथि। एहि सं प्रशासनिक कार्य सुगमता सं भ' जायत अछि। केन्द्रीय सेवाम मैथिली विषय सं चयनित अभ्यर्थी बिहारक समस्याक बढ़िया सं बुझैत छैथ। इंडो-नेपाल (डैम संबंधी) वार्ता लेल माननीय संजय झा जल संसाधन मंत्री बिहार द्वारा एकटा स्थानीय लोक प्रशासन प्रतिनिधि तौर पर राखय लेल विचार देलैय। निश्चित रूप सं मैथिली विषयक पृष्ठभूमि वला लोकसेवक संभवत: नीक ढंग सं योगदान द' सकैत छैथ।

किछु दिन पहिले हालेमे भोजपुरी मैथिली अकादमी व दिल्ली सरकार द्वारा आठवीं तक विद्यार्थी शिक्षा मे मैथिली क' समावेश सं उज्ज्वल भविष्यक उम्मीद करबाक चाहि। मैथिली विषय सिविल सेवा मे अंकदायी विषय व लोकप्रिय विषय अद्यतन अछि। सफलता भेटबाक संभावना बेशी अछि। ताहि सं इच्छुक विद्यार्थी एहि विषय क' युनि आ सफल भ' क' मिथिला, मैथिली आ बिहारक प्रशासनिक सेवा/सिविल सेवा मे अपन योगदान दैत छथि।

उच्च रैंक प्राप्तिक लेल मैथिली विषयक सहायक सिद्ध भ' रहलय।

अंतत: मैथिली भाषा, वैकल्पिक विषय सं सिविल सेवा आ लोक प्रशासन कारगर सिद्ध भ' जायत। ताहि सं एकर प्रचार-प्रसार आवश्यक अछि। शिक्षण-प्रशिक्षण क' लेल शिक्षित वर्गक अहम भूमिका निभाबक आवश्यकता अछि। ■

संपर्क : *ग्राम+पो.-कोर्थु,*
दरभंगा-847103
मोबाइल: 7782088518

एहि विषयमे औसतसं बेसी अनेक आनबाक लेल पर्याप्त नहि अछि। एहि लेल अभ्यर्थी लोक जौ कोचिंगक सामग्री सं आगू बढ़ि विद्वान लोकनिक भाषा ओ साहित्य विषयक पोथीक स्वाध्याय करि, अपन नोट्स का समृद्ध करताह तें परीक्षामे बेसी अंक आनि सकलाह। संगहि भाषा-साहित्यकार विद्वान लोकनिक पोथीक अध्ययनक क्रममे मैथिली विषयक द्वितीय पत्रक लेल जे सामग्री उपयुक्त पड़य तकर नोट्स अलगसं बनाय जौं द्वितीय पत्रमे ओकर प्रयोग उत्तर लेखमे करब, तं अहांक प्राप्तांक बढ़ि सकैछ।

मैथिली विषयक पाठ्यक्रमक लेल हमर ई स्पष्ट सुझाव अछि जे कोचिंग मे उपलब्ध अध्ययन सामग्री धरि सीमित नहि करू अपन ज्ञानकें। वरन् ओहि सामग्रीकें आधार जकां मानि विद्वालोकनिक पोथी सभक नियमित अध्ययन करू।

संगहि मैथिली विषय मे समसामयिक हलचल सं अपनाक अवगत रखबाक लेल मैथिलीक किछु (कमसं कम एकटा) पत्र-पत्रिका नियमित पठन अवश्य करू। एहिसं मैथिली साहित्यकारक नवाचार व नवविद्यालय ज्ञान भेटत आ संगहि अहांके मैथिली लेखन शैली सेहो परिष्कृत ओ समृद्ध होयत।

ई गप्प सत्य जे मैथिली भाषा सं यूपीएससी मे अभ्यर्थी सभक लेल उचित मार्गदर्शनक अभाव अछि। मैथिलीक विद्वानलोकनि मैथिली अकादमी आ आन मैथिली संस्थासभसं हमर विनम्र निवेदन जे मैथिली विषयसं प्रतियोगिता परीक्षासभमे छात्रलोकनिक मार्गदर्शनक लेल एकटा यथोचित प्लेटफार्म बनाओल जाय, जाहिसं अनेकानेक मैथिलीभाषाक विद्वानलोकनि

सफलताक लेल मौलिक ज्ञान जरूरी

✍ **कुमार सौम्य**
असिस्टेंट डायरेक्टर, सैन्य मुख्यालय, नई दिल्ली

हम मैथिली विषय सं सिविल सेवा परीक्षा 2017 मे 979 रैंक प्राप्त कयलक। इ सफलताक कारण मैथिली विषयक छोट सिलेवस सेहो रहल जकर कारणे हम आब विषय मे समय द' क' बढ़िया अंक प्राप्त कयलक। मुदा मैथिली विषय सिविल सेवाक लेल एकटा महत्वपूर्ण कड़ी अछि जाहि कारणे हमरा एस्से आ समाजक विषय मे बड़' मदद मिलल।

मैथिली विषय गांव सं आयल बिहार राजके छात्र लोकनिक लेल एकटा मनोबल बढ़ैबाक काज करैत अछि। इ विषय कें ऑप्सनल रूप मे चुनाव क'क छात्र लोकनि अपन मौलिक ज्ञान के बढ़ायत छथि आ अंग्रेजी मिडियम आ आन टेक्निकल फिल्ड सं जुड़ल छात्र सं कंप्लीट क' सकैत अछि।

हम आईआईटी बॉम्बे सं अपन ग्रेजुएशन पूर्ण कैल। अपन समाज सं एकटा दूरी महसूस होयत छल कारण हम ..... मुदा इ विषय हमरा परीक्षाक दृष्टि त' बाहर रहल। कारगर साबित भेल हि मुदा अपन समाज सं जुड़बाक लेल मदद सेहो केल। दिल्ली मे मिथिलाक माटिक खुशबुक अनुभव सेहो अनुभूति कएल आ बड़' नीक नीक लोगन सं जुड़बाक सौभाग्य प्राप्त भेल जाहि मे तीरभुक्तिक शोध संपादक श्री भास्कर ज्योति, मिथिलाक शिक्षकगण आ हमर मित्रगण जे मैथिली विषय सं तैयारी क' रहल छथि।

मुदा मैथिली विषय मे एकटा चिन्ता सेहो होयत अछि जे एहिमे आन ऑप्शनक अपेक्षा कम अंक प्राप्त भ' रहल अछि। (यूपीएससी-2017 एवं 2018)। एकर कारण दूटा भ' सकैछ-

1. छात्रगणक उत्तरक स्टैंडर्ड अपेक्षा अनुसार नहि अछि।

2. पर्याप्त गाइडेंस उपलब्ध नहि अछि।

हम 2017 मे खुद मैथिली विषय मे बड्ड नीक अंक प्राप्त नहि क' सकल मुदा बाद मे अपन गुरुजन, छात्रगण आ खुदक प्रयास सं 2018 मे नीक अंक प्राप्त कयल।

हमरा लगैछ जे मैथिली विषय एकटा नीक विषय अछि मुदा एहि विषयसं सिविल सर्विसेस परीक्षा मे सफलता प्राप्त क' जा सकैछ।

इ विषय आसान अछि मुदा अहां एहिमे पर्याप्त सीरियसनेस सं तैयारी आ नोटक अलावा मौलिक किताब सेहो पढ़बाक अनिवार्यता अछि। हम श्री भास्कर ज्योति जी कें हमरा तीरभुक्ति मादे अपन बात रखबाक देल लेल कृतज्ञ छथि।

संपर्क *: हाउस एएम-37बी1,*
एम ब्लॉक, राजौरी गार्डन,
दिल्ली-110027
मो. : 9619601229

छात्रसभकें विभिन्न विषय पर पढ़ाय सकैत छथि आ यथोचित मार्गदर्शन सेहो कय कसैत छथि।

उपलब्ध कोचिंग सभक बारेमे हमर अनुभव ई अछि जे शिक्षकलोकनि भरिसक प्रयास करि रहल छथि छात्रकें अध्ययन सामग्री उपलब्ध करयबाक लेल आ अध्ययन सामग्रीकें समृद्ध करबाक लेल। ई संतोषक गप्प जे प्राय: कोचिंग मे शिक्षक अभ्यर्थी पर व्यक्तिगत ध्यान दैत छथिन्ह आ विविध पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराय दैत छथि। संगहि कोचिंगमे छात्र आ शिक्षकक संबंध पूर्णता व्यवसायिक नहि अछि वरन् एकटा भावनात्मक संबंध बनि जाइछ, जे एकटा नीक गप्प अछि।

मुदा कतेक शिक्षक पढ़यबाक क्रममे एहि विषयकें आसान बनायबाक क्रममे मैथिली विषयकें एना प्रस्तुत करैत छथिन्ह जे छात्रलोनिकें ई भ्रांति भ' जाइछ जे एहि विषयमे किछु विशेष उद्यमक आवश्यकता नहि अछि आ एकर तैयारी वा एहिमे अंक आनब बड़ सरल अछि। एहि भ्रांतिक परिणामत: अभ्यर्थीलोकनि अति आत्मविश्वासक शिकार भ' अपन नुकसान करि लैत छथि। दोसर गप्प, जे यूपीएससी क बदलैत प्रवृत्तिक अनुरूप शिक्षकलोनिसं आग्रह जे अपन पाठनशैलीक सेहो (टू द प्वाइंट) यथासंभव अपटूडेट राखू।

अंतमे एकटा सभसं महत्वपूर्ण गप्प जे हम अपन अनुभवक आधार पर कहय चाहब जे एहि विषयमे बेसी अंक प्राप्त करबाक लेल व्यापक लेखनाभ्यास सरियहु सभसं उपेक्षित मुदा सभसं महत्वपूर्ण ओ आवश्यक पक्ष अछि। लेखनाभ्यासमे आलस करबाक कारण अधिकांश अभ्यर्थी परीक्षाभवन मे सभ प्रश्नक उत्तर नहि लिखि पाबैत छथि। तें मैथिली मे पढ़ू अवश्य, मुदा लिखबाक अभ्यास बेसी करू।

प्रश्नपत्रक आकलन

मैथिलीक प्रश्नपत्रमे यूपीएससी बहुत परिवर्तन कयलक, विशेषत: प्रश्नक शब्दप्रयोग मे। एहि कारणे जे प्रश्न प्रथम दृष्टया पारंपरिक लागत, ओकर उत्तरक ट्रीटमेंट अलग तरीकासं करब अपेक्षित अछि। संगहि उत्तर शब्द सीमा मे ओ टू द प्वाइंट हो, तखनहि प्रश्नपत्रक उत्तर निर्धारित समयसीमा मे लिखब संभव होयत।

मैथिली विषय मे अंक

हमर अनुभव ई अछि जे मैथिलीमे औसत अंक आननाय बड़ कठिन नहि अछि, मुदा औसत अंकसं काज नहि चलत। ई तें अभ्यर्थीलोकनि जों कोचिंगक अध्ययन सामग्री धरि सीमित नहि रखि विद्वानलोकनिक पोथीसभ आ मैथिली पत्र-पत्रिकासभक पठन सं अपन उत्तरमे नवीनता आनि सकलाह तं प्राप्तांक बढ़ि सकैछ।

इ दु:खक गप्प जे मैथिली पेपर जांचनिहार विद्वानलोकनि कें आन भाषा वा आन ऐच्छिक विष्यक तुलनामे अंक देबामे कनेक असौकर्ज होइत छन्हि। हुनका सभसं हमर हाथ जोड़ि विनम्र निवेदन जे अंक दैत काल ई विचार अवश्य करू जे एहि अभ्यर्थीक प्रतियोगिता समस्त अन्यान्य ऐछिक विषयक प्रतियोगी सभसं अछि। जौं अहां सभ अंक नहि देबय त' मैथिली भाषाक अभ्यर्थीक मनोबल कोना ऊंच रहत आ अंतत: मैथिली भाषा-साहित्यमे पठन-पाठनक विकास कोना होयत।

मैथिली विषय आ साक्षात्कार

मुख्य परीक्षाक उपरांत साक्षात्कारक चरणक लेल ई भ्रांति छैक जे मैथिली विषयक अभ्यर्थीसभकें साक्षात्कारमे कम अंक भेटैछ। हम एहिसं सहमत नहि छी। मैथिली साहित्यक अध्ययनक क्रममे मिथिला समाजक मादे देशक कोनो गरीब वा उपक्षित वर्गक समस्या ल' क' जे नवदृष्टि भेटैछ, ओकरा साक्षात्कार क्रममे इंटरव्यू बोर्डक समक्ष जों अभ्यर्थी राखि सकताह, तं अभ्यर्थीक सबन मुदा व्यापक समाजक प्रति दृष्टि साक्षात्कारसे सेहो बेसी अंक बानबामे सहायक होयत।

उपसंहार

मैथिली भाषा ओ साहित्य एकटा पूर्ण विकसित ओ विस्तृत विषय अछि, जकर तैयारी पूर्ण निष्ठा ओ परिश्रम सं करब तखनहि अपेक्षित सफलता यूपीएससी लोकसेवा परीक्षा मे भेटत। पारंपरिक पाठ्य सामग्री सं आगू बढ़ि, विद्वानलोकनि रचित पाठ्य पुस्तक स्वाध्याय ओ पत्र-पत्रिकाक पठन आवश्यक अछि। सभसं महत्वपूर्ण अछि मैथिलीमे लेखनक अभ्यास। संगहि मैथिली विद्वानलोकनिक जौं सहयोग ओ मार्गदर्शन भेटय, तं मैथिली विषय एहि कठिन प्रतियोगिता परीक्षामे कोनो विषयक समकक्ष ठाढ़ भ' सकैत अछि। ■

शीला, रामचंद्र आ मांगेराम कें श्रद्धांजलि

दिल्ली मैथिली-भोजपुरी अकादमीक पहिल अध्यक्ष आ दिल्लीक पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित, समस्तीपुर संसदीय क्षेत्रक सांसद रामचंद्र पासवान आ दिल्ली प्रदेश भारतीय जनता पार्टीक पूर्व अध्यक्ष मांगेराम राम केर निधन जुलाई मास मे भेल। अखिल भारतीय मिथिला संघ दिश सं हिनका तीनू विभूति केर समवेत श्रद्धांजलि मे एकटा शोक सभा राजधानीक गांधी शांति प्रतिष्ठान मे दिनांक 28 जुलाई 2019 कें कयल गेल। श्रद्धाजंलि सभामे पूर्व सांसदद्वय हुकुमदेव नारायण यादव आ महाबल मिश्रा संग अ.भा.मि.सं. केर अध्यक्ष विजयचंद्र झा, महासचिव विद्यानंद ठाकुर आ आन कार्यकारिणी सदस्यगण हुतात्मा सबकें श्रद्धा सुमन समर्पित कयल गेल।

उल्लेखनीय अछि जे दिल्ली मे मैथिली अकादमीक स्थापनाक घोषणा श्रीमती दीक्षित अ.भा.मि.सं. केर मंच पर एक कार्यक्रमक मध्य कयने छलीह। हुनके कार्यकाल मे एहि अकादमी केर स्थापना भेल। ताहि लेल मैथिल समुदाय हुनक ऋणी अछि। ■

मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता - 5

হে যৌ আরৌ জাগে জাউ
মিথিলা মে অলখ জগাউ
অহম গরথা কের ফঁসা
একটা পিজরা মে ঐল আউ।
হে যৌ আরৌ জাগে জাউ।1।

ছল কখনহুঁ গুমান অপন গ্যান পর
জে আএ বঁচল অহংকার অপনা শান পর
হব ডেগ পর প্রতিরোধ অছি গতিরোধ অছি
আহবঁ (যুদ্ধ) শূন্য আহ্লাদক গপ্প নহি
হে যৌ আরৌ জাগে জাউ।2।

ডাহি দিয়ো ঘর দলান অপন অছি অহাউ কে
মনুষ্যতা ক চোরি কের অপনা অছি গুমান কে
গর্মিয়োঁ কে তাপ জে বঁরখা সঁ মিসির ভেল
ফের কথিত কে সন্তাপ সঁ অহাঁ স্থির ভেল
হে যৌ আরৌ জাগে জাউ।3।

ঋষি মুনি ক ঘর ছল বাৎসল্যময়ী মিথিলাভূমি
পর অপনা সবঁ বঁচলহুঁ ওকরা কেহন ত্যাগভূমি
সম্বন্ধক মীঠ রস পিবঁ মানবতা অহাঁ জগাউ
বিঁন রাগ উপরাগ কে সংগ ভেদ হোলী অহাঁ মনাউ
হে যৌ আরৌ জাগে জাউ।4।

কৌশল কহে বাঁত এ অহর্নিশ
আএঁ বাঁএঁ ছোড়ী কে কামনা জগদীশ সঁ
স্নেহ সঁ সীঁঠ কে সবপহুঁ উদ্যোগক উদ্যান লগাউ
অপন আত্মে জ্ঞান সঁ কৌশলতা কে জগাউ
হে যৌ আরৌ জাগে জাউ।5।

©কৌশল ঝা

मिथिलाक्षर चिन्हु आ ईनाम पाबु

अखिल भारतीय मिथिला संघ समस्त मैथिल संस्कृति आ पहिचानक संरक्षण लेल सदिखन प्रयत्नशील अछि। एहि क्रममे नव प्रयास अछि मैथिलजन कें मिथिलाक्षर सं जोरबाक प्रयास।

एहि प्रयासमे तीरभुक्तिक प्रत्येक अंकमे किछु सामग्री मिथिलाक्षरमे प्रकाशित कएल जाएत। जकर देवनागरी लिप्यांतरण पाठकगण सं आमंत्रित रहत।

सर्वश्रेष्ठ लिप्यांतरण कय पठेनिहार पाठक कें अखिल भारतीय मिथिला संघ दिसि सं 500 टाका मूल्यक पुरस्कार प्रदान कएल जाएत।

लिप्यातंरण क' अपन प्रविष्टि teerbhuktimaithili@gmail.com पर ईमेल सं वा संपादकीय कार्यालय (20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001) पर डाक सं पठाओल जा सकैछ।

मिथिलाक्षर
ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक-3 केर विजेता

1. अर्चना झा
द्वारा, श्री राधा रमण ठाकुर
ग्राम+पोस्ट : धरहरवा, परिहार,
जिला : सीतामढ़ी, बिहार
ईमेल : archnajha03@gmail.com

यूपीएससीमे मैथिली विषय कम चुनौतीपूर्ण नहि

✍ रतन कुमार झा

रतन कुमार झा 2017मे भारतीय रेल यातायात सेवामे चयनित भेल छलाह। वर्तमानमे भारतीय रेलवे असिसटेंट ऑपरेशन मैनेजर छथि।

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा प्रतिवर्ष सिसिल सेवा परीक्षाक आयोजन कयल जायत अछि। जाहि माध्यमे विभिन्न पदक लेल अधिकारी लोकनिक चयन कयल जायत अछि। हिनका लोकनिकें देशक विकासमे योगदानक लेल 'स्टील फ्रेम ऑफ इंडिया' मानल जायत अछि।

ई परीक्षा एकटा कठिन एवं प्रतिष्ठित परीक्षाक रूपमे प्रख्यात अछि एवं एहिने चयन प्रत्येक छात्रक एकटा सपना होयत अछि। वर्तमानमे एहि परीक्षाक जे स्वरूप अछि ओहिमे वैकल्पिक विषयक चयन महत्वपूर्ण भ' जायत अछि। वैकल्पिक विषयमे अधिकसं अधिक अंकक प्राप्ति परीक्षामे चयनक लेल टा नहि अपितु रैंक निर्धारण एवं सर्विस आवंटनक लेल अति महत्वपूर्ण भ' जायत अछि।

वैकल्पिक विषयक सूचीमे मैथिलीकें सेहो स्थान प्राप्त अछि एवं कोनो छात्र अपन स्वेच्छासं वैकल्पिक विषयक रूपमे एकर चयन क' सकैत छथि। मैथिलीकें ई स्थान सर्वप्रथम 2006 ई. मे भेटल आ तहियासं प्रत्येक वर्ष मिथिला एवं मिथलेत्तर क्षेत्रक छात्र लोकनि सिविल सेवा परीक्षामे मैथिलीकें वैकल्पिक विषयक रूपमे चयन करैत छथि। अनुज कुमार झा (आईएएस 2009) जीकें सर्वप्रथम मैथिलीक माध्यमे सफलता भेटलनि, जाहि कड़िकें रोहण, नीरज, रजनी झा आदि लोकनि आगू बढ़ौलनि। प्रत्येक वर्ष मात्र मिथिला धरि नहि अपितु मिथिलेत्तरक छात्र लोकनि सेहो मैथिलीक माध्यमे चयनित भ' रहल छथि। संघ लोक सेवा आयोग आंकड़ाक अनुसार मैथिलीमे सफलताक अनुपात 18 प्रतिशत अछि जे उत्तम मानल जायत अछि।

वैकल्पिक विषयक रूपमे मैथिलीक चयन किएक?

सर्वप्रथम, मैथिलीक उत्तर देवनागरी लिपिमे लिखल जायत अछि एवं उत्तर लेखनमे सेहो कोनो प्रकारक समस्या नहि होयत अछि, तें मिथिलांचल एवं मिथिलेत्तर दुनू क्षेत्रक छात्र मैथिलीक चयन करैत छथि।

दोसर, मैथिलीमे औसत अंक 260-285 धरि नियमित रूपमे तैयारी क' क' आसानीसं प्राप्त कयल जा सकैत अछि, जे आन वैकल्पिक विषयमे कठिन होयत अछि। किछु वैकल्पिक विषयमे तं औसत अंक 200-220 धरि रहैत अछि। तेसर, मैथिलीक पाठ्यक्रम छोट एवं रोचक अछि, जकरा कम समयमे तैयार कयल जा सकैत अछि एवं बचल समय कें सामान्य अध्ययनक तैयारीमे लगाओल जा सकैत अछि एवं सामान्य अध्ययनमे सेहो अधिकसं अधिक अंक प्राप्त कयल जा सकैत अछि।

मैथिलीक तैयारी

सर्वप्रथम, आरंभिक अवस्थामे मैथिलीमे लेखनक प्रयास करबाक चाही। ई मिथिला एवं मिथिलेत्तर दुनू क्षेत्रक विद्यार्थीक लेल आवश्यक अछि एवं एहि लेल मैथिलीक शिक्षक एवं विद्वान लोकनिक मार्गदर्शन लेल जा सकैत अछि।

मैथिलीक प्रथम पत्रमे मैथिली भाषाक विकासक इतिहास एवं मैथिली साहित्यक विकासक इतिहास अबैत अछि। भाषाक इतिहासक लेल सिविल सेवा परीक्षाक लेल पूर्ण रूपसं समर्पित पुस्तक के

संपर्क : *ग्राम-महरैल, जिला-मधुबनी*
मो.: *9818388973,* ***ईमेल:*** *ratanjhakumar@gmail.com*

अभाव अछि, तें किछु कोचिंगक अध्ययन सामग्रीक प्रयोग कयल जा सकैत अछि। साहित्यक इतिहासक लेल जयकांत मिश्रक 'मैथिली साहित्यक इतिहास', मायानंद मिश्रक 'मैथिली साहित्यक इतिहास' एवं डॉ. दिनेश कुमार झाक 'मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास' आदि पुस्तकक मदति लेल जा सकैत अछि। पाठ्यक्रमक विभिन्न विषयकें एहि सभ पुस्तकसं जोहि क' तैयारी कयल जा सकैत अछि।

प्रथम पत्रक सम्पूर्ण पाठ्यक्रमक अध्ययनक पश्चात् उत्तर लेखन एहि पत्रक तैयारीक लेल दोसर महत्वपूर्ण बिन्दु अछि। एहिमे उत्तर प्वाइंट एवं पैराग्राफ दुनू रूपमे लिखल जा सकैत अछि। उत्तरमे भूमिका एवं निष्कर्षक होयब आवश्यक बुझल जायत अछि, किएक तं एहि दुनूक अनुपस्थिति मे उत्तर छुछुन लगैत अछि। उत्तर लेखन लेल पूर्व वर्ष मे पूछल प्रश्न पत्रक प्रयास कयल जा सकैत अछि, जकर दुइटा लाभ होयत अछि - प्रथम, सीमित शब्द संख्या मे नियंत्रित एवं सुन्दर उत्तर लेखनक अभ्यास भ' जायत अछि आ दोसर पूर्व वर्षक कतेको प्रश्न प्रश्नपत्रमे ओहिना आबि जायत अछि।

द्वितीय पत्रमे पद्य एवं गद्य अबैत अछि जाहि निमित्त पाठ्यक्रममे विभिन्न पुस्तक अछि। एहि पत्रक लेल महत्वपूर्ण भ' जायत अछि- व्याख्या लेखन एवं साहित्यिक भाषाक प्रयोग। साहित्यिक भाषाक प्रयोग गद्यक पाठ्यक्रमक विभिन्न पुस्तक पढ़लाक फलस्वरूप सीखल जा सकैत अछि। पद्यक व्याख्या लेखन लेल पूर्वमे पूछल प्रश्नक प्रयास कयल जा सकैत अछि, जाहिमे महत्वपूर्ण बिन्दु होयत अछि- रचना एवं रचनाकारक नाम, पद्यक प्रसंग, भाव, काव्य, वैशिष्ट्य (अलंकार, रस, गुण, छंद, भाषा आदि) एवं रचनाक समकालीन परिवेशमे प्रासंगिकता। एहि सभ बिन्दुक इर्द-गिर्द व्याख्या होयबाक चाही एवं व्याख्याक अंत निष्कर्षसं होयबाक चाही।

गद्यक व्याख्या लेखन लेल सेहो पूर्वमे पूछल प्रश्नक अभ्यास कयल जा सकैत अछि। गद्यक व्याख्यामे महत्वपूर्ण बिन्दु होयत अछि - रचना एवं रचनाकारक नाम, गद्यक प्रसंग, भाव, रचनाक शैली, कथोपकथन, वातावरण एवं परिवेश, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थितिक विश्लेषण, भाषाक प्रयोग एवं समकालीन परिवेशमे रचनाक प्रासंगिकता अछि। सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिसं विश्लेषण उत्तरकें समृद्ध बनबैत अछि।

मैथिलीक तैयारीमे चुनौती

जागरूकताक अभाव प्रथम चुनौती अछि। कतेको लोकनिमे एकटा भ्रम अछि जे मैथिलीमे लेखन कठिन होयत अछि, एहि प्रकारक भ्रम आधारहीन अछि। मैथिल अथवा जिनका कतेको हिन्दीक ज्ञान छनि, दुई-तीन दिनक अभ्याससं मैथिलीमे लिखनाइ सीख सकै छथि। एकर अतिरिक्त पाठ्यक्रम एवं पुस्तक संबंधी जागरूकताक सेहो अभाव अछि। कोन पुस्तक कोन विषयक लेल पढ़बाक चाही, एहि प्रकारक सटीक मार्गदर्शनक अभाव अछि।

जागरूकताक अभाव प्रथम चुनौती अछि। कतेको लोकनिमे एकटा भ्रम अछि जे मैथिलीमे लेखन कठिन होयत अछि, एहि प्रकारक भ्रम आधारहीन अछि। मैथिल अथवा जिनका कतेको हिन्दीक ज्ञान छनि, दुई-तीन दिनक अभ्याससं मैथिलीमे लिखनाइ सीख सकै छथि।

दोसर चुनौती अछि - अध्ययन सामग्रीक अभाव। मैथिली भाषाक इतिहासक लेल अध्ययन सामग्रीक अभाव अछि, जे स्वाध्यायमे बाधक होयत अछि। द्वितीय पत्रमे व्याख्या संबंधी सामग्रीक सेहो अभाव अछि, विशेष रूपसं गोविन्द दास आदि रचनाकारक पदक व्याख्या करब मार्गदर्शनक अभाव मे कठिन भ' जायत अछि। एहि कारणसं कतेको छात्र मैथिल रहितहुं मैथिलीक चयन नहि क' पबैत छथि।

तेसर चुनौती अछि - मैथिलीमे अधिकतम अंकक। मैथिलीमे अधिकतम अंक 300-320 धरि अबैत अछि, परन्तु आन साहित्यमे (जेना कन्नड़) ई अंक 350 अंक प्राप्त भ' सकैत अछि, तखन मैथिलीमे किएक नहि? मैथिलीक मूल्यांकनकर्ता लोकनिक मत छनि कि उत्तरमे गुणवत्ताक अभाव एकर कारण अछि। परन्तु उत्तरमे गुणवत्ता बिना कोनो मार्गदर्शक कोना सुधरत? उत्तरक स्वरूपक एवं शैलीक मार्गदर्शन कोना होयत?

मैथिलीक प्राध्यापक लोकनिसं आशा

सर्वप्रथम मैथिलीक पाठ्यक्रम एवं पुस्तक संबंधी जागरूकताक लेल प्राध्यापक लोकनि द्वारा प्रयास होयबाक चाही। हुनक लोकनिक प्रयाससं विभिन्न प्रकारक भ्रम टुटत एवं मैथिलीक प्रति रुचि बढ़त। एहि लेल विभिन्न प्रकारक मैथिलीक संघटनक मदति सेहो लेल जा सकैत अछि।

दोसर, अध्ययन सामग्री संबंधी जे अभाव अछि तकर पूर्ति होयबाक चाही। एहि लेल विभिन्न संस्था, प्राध्यापक एवं प्रकाशन द्वारा मिलि-जुलि क' प्रयास होयबाक चाही। पाठ्यक्रमक अनुरूप समर्पित अध्ययन सामग्रीसं मैथिलीक छात्र लोकनिकें एकटा नव दिशा भेटत।

तेसर, मैथिलीक प्राध्यापक लोकनि द्वारा उत्तरक गुणवत्ता, शैली, स्वरूप आदि संबंधी मार्गदर्शन मैथिली छात्र लोकनिमे नव आशा जगाओत जे मैथिलीमे सेहो अधिकतम अंक 350 धरि प्राप्त कयल जा सकैत अछि।

मैथिली एकटा सुरक्षित एवं सफल वैकल्पिक विषय अछि। एकर तैयारी मे किछु चुनौती सेहो अछि, जकर समाधान लेल मैथिलीक छात्र लोकनिकें मैथिलीक प्राध्यापक लोकनिसं आशा धरि। एहि दिशा मे मैथिलीक संस्था, प्रकाशन एवं प्राध्यापक लोकनि द्वारा कयल गेल प्रयासक लेल मैथिलीक छात्र लोकनि सदैव कृतज्ञ रहताह। ■

समकालीन कविताक विषय वस्तु एवं प्रवृत्ति

✍ सुरेन्द्र राउत

मैथिली भाषा साहित्य विशेषज्ञ। वर्ष 2006 मे संघ लोक सेवा परीक्षामे मैथिली सँ पहिल सहभागी, 2008 सँ मैथिलीक शैक्षणिक काजमे जुटल। संघ लोक सेवा आयोग आ बिहार लोक सेवा आयोग मे हिनक योगदान सँ 100 सँ बेसी विद्यार्थी चयनित। अहि लेल 2015 मे बिहार शिक्षा शिरोमणि पुरस्कार सँ पुरस्कृत भेलाह। एकर अतिरिक्त मैथिली आ सामान्य अध्ययन पर हिनक कतेको रास पोथी लिखल अछि।

'समकालीन' आधुनिक साहित्यक अत्यन्त प्रचलित शब्द अछि। एकर समानार्थक समकालिक, समसामयिक, वर्तमान आदि शब्द सेहो साहित्यक विभिन्न विधाक हेतु विशेषण रूप मे प्रयुक्त कयल जायत अछि। वस्तुत: समकालीन शब्दक संबंध मूलत: समय सं अछि तें एकटा खास कालखंडक रचना जाहिमे तत्कालीन समाजक प्रत्येक गतिविधिक अंकन रहय समकालीन साहित्य कहयबाक अधिकारी अछि। एहने कविता कें चुनि-चुनिक भारत सरकारक सर्वोच्य साहित्यिक संस्था साहित्य अकादमी द्वारा 'समकालीन मैथिली कविताक' नामएं संकलित कयल गेल, एहि मे 1961 ई. सं 1980 ई. धरिक 21टा कवि लोकनिक विशिष्ट कविता कें स्थान कयल गेल अछि, जकर सम्पादन प्रो. भीमनाथ झा एवं डॉ. मोहन भारद्वाज द्वारा कयल गेल अछि।

कविता आदिम मनुष्य स्वभाविक एवं आदिम उद्‌गार अछि। मैथिलीक आरंभिक काव्य श्रृंगारिक भक्ति आ मनोरंजक होइत छल, मुख्य रूपसं परम्परागत संस्कृति पर आधारित होइत छल, मुदा ब्रिटिश प्रभाव सं मानववादी दृष्टिकोणक अभ्युदय भेल, अपितु आधुनिक कविताक विषय-वस्तुमे परिवर्तन आयल। समकालीन कविलोकनि जीवन-जगतमे घटित घटना सं प्रभावित ओ प्रेरित भ' क' अपन प्रक्रिया देलनि। जाहिसं समकालीन कविताक विषय-वस्तुमे परिवर्तन भेल।

ब्रिटिश भारत मे भिन्न प्रकारक समस्या एवं शोषण छल जाहि सं मुक्ति पयबाक लेल सभ वर्ग बलिदान देलनि, तें स्वतंत्रताक पश्चात मानव मनमे भिन्न-भिन्न प्रकारक आशा-उमंग जागृत छल, जे बड्ड कम समयमे सामाजिक नैतिक पतन एवं राजनीतिक कर्तव्यहीनताक कारणें ध्वस्त भ' चुकल छल, जाहिसं मानवक मन संत्रास एवं कुंठा सं ग्रसित भ' चुकल छल। फलस्वरूप कविताक विषय-वस्तुमे परिवर्तन आयल आ समकालीन कवि लोकनि मानव अस्तित्व कें संकट मे देखि चिंतित भ' काव्य रचना कयलनि। एहि चिंताक अभिव्यक्ति समकालीन कविताक प्रवृत्ति थिक आ आक्रोश, कुंठा, जीजिविषा, संघर्ष, परिवर्तन, बदलाव आदि एकर प्रमुख स्वर। बौद्धिकताक समावेश भेलासं काव्य मे आधुनिकता आयल। समकालीन मैथिली काव्यक शिल्प, भाव, बिम्ब, प्रतीक सब दृष्टियें समकालीन समय आ समाजकें नीक जकां प्रतिबिम्बित करैत मैथिली काव्य परम्पराकें पुष्ट करैत अछि।

ई समकालीन कविता विषय-वस्तु समस्या आ प्रगतिवादी सोच दुनू पर आधारित अछि। समस्याक मध्य वैयक्तिक विषय-वस्तु जेना कुंठा, संत्रास, दमित, भावना, जीवनक हुंकार, भोगल जीवनक यथार्थ आदि उजागर होइत अछि। एहि विषय-वस्तु सं जुड़ल कविता पर तत्कालीन परिस्थिति सं उपजल समस्या, हिन्दी कविताक प्रभाव, सार्त्रक अस्तित्ववाद, सिग्मन फ्रायडक मनोविज्ञानवाद, मार्क्सवाद, गांधीवाद आदिक प्रभाव बुझि पड़ैत अछि। प्रगतिवादी समाजक विकासक लेल कविता सर्वहारा वर्गक

संपर्क : 206, तीसरी मंजिल, जैना हाऊस कॉम्पलेक्स, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
मो.: 9015277823

उत्थानक कामना करैत छथि आ एकरा लेल मार्क्सवाद सं प्रभावितउ भ' क' विद्रोहात्मक चेतना जगेबाक प्रयास कयने छथि। एहि लेल समकालीन कविता मे जाहि विषयकें धारण कयल गेल, ओ निम्न रूपमे देखल जा सकैत अछि।

यथार्थक महत्व : विषय-वस्तुक दृष्टिमे समकालीन कविता जीवनक संघर्ष आ भोगल यथार्थ कें महत्व दैत छथि। सामाजिक अथवा जीवनक यथार्थक अंतर्गत संघर्षजन्य मानसिक द्वंद्वक संग-संग मानवीय आशा-निराशा, सत्य-विडंबना, सुख-दुख, उत्थान-पतन, कुंठा-संत्रास, असंतोष-जीजिविषा, आस्था-अनास्था आदिक चित्रांकन समकालीन मैथिली कविता मे विशद रूपमे भेल अछि। जाहि भावकें सोमदेव जीक सहजतावादी कविताक एहि पांतिमे देखल जा सकैत अछि-

आब तं सभ क्यो नगरक सतमहला होटलमे / अपन शिकार भ' जपबाक इच्छा रखैत अछि / हेरा जाय चाहैत अछि उल्लासहीनतामे / भरि लेब' चाहैत अछि मनमे अर्थहीन आर्केष्टा।

संत्रास आ कुण्ठा : संत्रास आ कुण्ठा समकालीन कविताक मुख्य स्वर थिक। संत्रासक कारण अछि कवि लोकनिक संवेदनशीलता, मर्मस्पर्सी भाव आ मानवीय दृष्टि। आजुक समाज आ कवि लोकनि पूर्व कालक अपेक्षा बेसी संवेदनशील भ' गेल छथि। तें कवि लोकनि पर दूर समाज प्रभाव पड़ैत छैन्हि आ मानव जीवनक विश्वक सभ घटना सं प्रभावित होइत अछि। ओहिसं उत्पन्न समस्यासं मनुक्ख प्रभावित होइत अछि आ समस्यासं औनाइत अछि। जकरा गंगेश गुंजन जीक स्वरमे निम्न रूपसं देखल जा सकैत अछि-

एक टा दमघोंटु कोठली अछि
स्मृति सभक नाचि रहल अंधकार
आन्हर डेग पर
हाथ दुनूक वायवी संतुलन लेने
हम तकने फिरैत छी
आ देबाल सं हठोकर खाइत।

नैतिक पतन : समकालीन कविता समाजमे पसरल भ्रष्टाचार, लाल फीताशाही, नेता लोकनिक स्वार्थी प्रवृत्ति, भाई-भतीजावाद, शोषण-गबन आदिकें स्पष्टता सं उजागर करैत अछि; जाहिसं समाजमे गिरि रहल समाजक नैतिक मूल्य कें देखार करैत छथि। संगही समाजमे मूल्यहीनताक स्थिति सं व्यक्ति-व्यक्तिमे मानवताक ह्रास भ' रहल अछि।

समाज सभ व्यक्ति अपन सुख भोगक लेल एक-दोसरक लहास सं गुजरि जायबाक आकांक्षा रखैत छथि, जाहि भावकें प्रयोगवादी कवि राजकमल चौधरी जीक कविताक एहि पांतिमे देखल जा सकैत अछि-

संत्रास आ कुण्ठा समकालीन कविताक मुख्य स्वर थिक। संत्रासक कारण अछि कवि लोकनिक संवेदनशीलता, मर्मस्पर्सी भाव आ मानवीय दृष्टि। आजुक समाज आ कवि लोकनि पूर्व कालक अपेक्षा बेसी संवेदनशील भ' गेल छथि। तें कवि लोकनि पर दूर समाज प्रभाव पड़ैत छैन्हि आ मानव जीवनक विश्वक सभ घटना सं प्रभावित होइत अछि।

सभ पुरुष शिखंडी
सभ स्त्री रासक राधा
सभक मनमे धनुष तानिक' बैसल
रक्त पियासल व्याधा।

रूढ़िवादिताक विरोध : समकालीन कविता स्वयंक परिवेश सं क्षुब्ध-विक्षुब्ध अछि। आजुक कवितामे क्षणवादक एवं बौद्धिक चिन्तनक प्रधानता थिक। यदि आजुक समकालीन कवि लोकनि एक क्षणक हेतु नारी सौंदर्यक प्रति आकृष्टो होइत छथि तं ओतहु नारीक धंसल आंखिमे दुधायल आंचरमे, धीयापूताक दुबरैल अंगमे अपन जिनगीक लहास पबैत छथि। तें आजुक कवितामे नारीक नोरायल आंखि, दुधाएल आंचर, औनाइत निरीह प्राणी, कर्मसंकल्प जीवनक मर्मस्पर्शी टीस आ वेदनाक चित्रांकन भेल अछि। ई कविता सभ नारी मुक्ति हेतु छटपटाए रहल अछि। संगहि जाति-पांति, सामन्तशाही प्रवृत्ति एवं पंडा-पुरोहित वर्गक कुकृत्यक बखिया सेहो उधेसैत छथि, जकरा मायानन्द मिश्र जीक कविता स्वरमे देखल जा सकैत अछि-

हम छी जनैत
जड़ताक जोंक युग-युग सं
चिहुटल अछि तन मे
प्रेरणा लडुकें चुसि रहल
अछि निराशाक अन्हरिया
पसरल दिग-दिगंत।

परंपरा भंजक : समकालीन युगक कविता विद्रोहात्मक कविता थिक। एहि कविताक परंपरासं कोनो संबंध नहि अछि कारण जे आजुक कवि लोकनि सामाजिक परंपराकें बाधक आ दमघोंटु मानैत छथि, जे विकासक छाती पर बैसिक' प्रगतिशीलताकें दबौने अछि, जाहि मे लोक सभ कुहरि आ चिकिया रहल छथि, तें हिनक कविता परंपराकें भंजन कयनिहार कविता थिक। ई समाज, देश आ राष्ट्रमे विद्रोह क' प्राचीन समाजक जर्जरताकें, प्राचीन व्यवस्थाकें, वीभत्सताकें, कुरूपताकें तथा पाखंडता कें समूल नष्ट करि नव समाजक, नव देश आ राष्ट्रक सृजन हेतु उताहुल अछि। एहि कवितामे जीवन अछि आ जीवनक प्रति स्पंदन अछि, आशा आ आस्था अछि, जकरा कोनो तरहें विस्मृत नहि कयल जा सकैत अछि। ओ लोकनि शहर-बाजार आ पाश्चात्य सांस्कृतिक नवीनता सं प्रभावित अछि आ ओहिसं बदलि रहल सामाजक समर्थक छथि। जकरा मंत्रेश्वर झाक स्वरमे देखल जा सकैत अछि-

शहर बाजारक सभ ढाठी सीखि
गेलाह अछि गामक पंडित जी
ब्रह्म मुहूर्तमे उठि एकटंगा दय
सहस्र गायत्रीक जाप करबाक
कोनो टाटक नहि रचैत छथि।

आशा-उमंग : समकालीन कवितामे आशा उमंग सेहो हिलकोर मारि रहल अछि। हुनका सभकें विश्वास छनि जे कटुता समाजसं अवश्य जाएत आ एक दिन नव सुरजक किरण सं हमर समाज आ हम प्रकाशित होयब, जकरा यात्री जीक स्वरमे देखल जा सकैत अछि-

भरि-भरि दिन भीजत लोक
भरि-भरि दिन धान रोपत लोक
आशाक मचकी पर झुलत लोक
कल्पनाक स्वर्गमे बूलत लोक।

युगबोधक कविता : समकालीन कविता परंपरा, प्रयोग आ आधुनिक युग बोधक कविता थिक। प्रक्रिया, परंपरा, प्रयोग तथा रचनात्मक प्रवृत्ति ओ विरोधात्मक प्रवृत्ति मे सदा प्रतिद्वंद्विता चलैत अछि। यैह विरोधात्मक दृष्टि ओकरा नवीन गति प्रदान करैत अछि। साहित्यमे कोनो प्रवृत्ति स्थानीय नहि होइत अछि। नवीनता, मौलिकता एवं परिवर्तनक तृष्णा नव काव्यक प्रेरक शक्ति होइत थिक। एहि शक्ति, कवि लोकनि कें युग बोधक प्रेरणा प्रदान करैत अछि, जकरा आधार बनाक' कवि लोकनि काव्यक रचना करैत छथि। जेना-

सुमन जी 'पूजन उपादान' मे दलित भावनाक व्यथित हृदयक स्पंदन करैत छथि, 'भिक्षा पात्र' मे विनोवा भावेक भूदान आंदोलनकें आधार बनबैत छथि तथा 'जा रहल छी' मे युवा वर्गक मार्गदर्शक बनैत छथि। यात्री जी 'कंकाले कंकाल'मे अकालीक समस्यासं अवगत करबैत छथि। अमर जी 'युद्ध एक समाधान' मे बंगला देशक आजादीक प्रति उदगार व्यक्त करैत छथि त' 'अभियान'मे भारत-चीनक युद्धक बादक वर्णन करैत छथि। एहिना अन्य कवि लोकनिक कवितामे समकालीन समयक समस्या, विकास, संघर्ष आ मानवीय अन्तरद्वंद्व कें स्थान देलनि।

एहि प्रकारें समकालीन मैथिली कविता विषय-वस्तु टा नहि शिल्पक स्तर पर सहो रूढ़िक भंजन करैत अछि। एहि युगक कविता छंदक बंधनके अस्वीकार करैत अछि एवं भोगल यथार्थ कें नव-विम्ब, नव प्रतीक एवं गुढ़ व्यंग्यार्थक माध्यमसं व्यक्त करैत अछि। ई कविता राग, ताल, लय, गति, छंद आदिक बंधन कें अस्वीकार करैत अछि तथा आमजनक हुंकार एवं शब्दकें कविताक आवश्यक प्रतिमान रूपमे अंगीकार करैत छथि।

समकालीन कवितामे पौराणिक प्रतीक कें आजुक संदर्भमे राखिक' उत्तम रूपें चित्रित कयल गेल अछि, जे साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान प्राप्त करैत अछि। पौराणिक प्रतीकक प्रयोग आजुक कवि लोकनि युगीन जीवन पर व्यंग्य, यथार्थतः मानसिक स्थितिक अभिव्यक्ति हेतु करैत छथि। जे सुमन जीक एहि पांतिमे देखल जा सकैत अछि-

समकालीन कविता परंपरा, प्रयोग आ आधुनिक युग बोधक कविता थिक। प्रक्रिया, परंपरा, प्रयोग तथा रचनात्मक प्रवृत्ति ओ विरोधात्मक प्रवृत्ति मे सदा प्रतिद्वंद्विता चलैत अछि। यैह विरोधात्मक दृष्टि ओकरा नवीन गति प्रदान करैत अछि।

पार्थ छथि ठकुऐल ठाढ़े
कुरुक्षेत्रक ब्यूह गाढ़े
सारथी मुखें समुख
गीता सुनाबय जा रहल छी।

एहिना समकालीन घनेरो कवितामे व्यंग्यक प्रयोग उत्कृष्ट रीतिएं भेल अछि। जे व्यंजना शब्द शक्ति कें स्पष्ट करैत अछि। एहि कवितामे श्रृंगार रसक पूर्ण अभाव अछि। एहिमे करुण, रौद्र, वीर, वीभत्स आदि रसक प्रधानता अछि। कवितामे वक्रोक्ति एवं प्रतीकक संयोग उत्कृष्ट रीतिएं भेल अछि। संगहि शब्दालंकार एवं अर्थालंकारक प्रयोग वर्णनाशैली मे उत्कृष्ट रीतिएं कयल गेल अछि। मुदा एहि कवितामे छंद, यति, राग, दंड, पिंगल आदि काव्यात्मक बान्ह कमजोर पड़ि गेल अछि।

फलस्वरूप समकालीन कविता गद्यात्मक भेल जा रहल अछि। एहि रूपक कवितामे अस्पष्टता, ओझराहटि गत्यावरोध संग-संग दुरूहता आबि गेल अछि। जाहिसं आई गद्य कविताक शैली बनल जा रहल अछि। फलतः कविता स्वच्छंदता'क दिसि बढ़ि रहल अछि, जाहिसं काव्यक मर्यादाक लोप भेल जा रहल अछि। मुदा, प्रत्येक स्थितिमे कविताक आत्माक रक्षा आवश्यक अछि। आधुनिक प्रगतिक युग मे कविताक स्वरूप बदलय मुदा-आत्मा सुरक्षित रहय, ई एकटा गंभीर चिंताक विषय बनि गेल अछि। तथापि, कविता सभ स्थितिमे जिबैत रहत, ताहिमे संदेह नहि। जीवनक प्रति स्वागत भाव आधुनिक कविताक स्थायी भाव थिक। यैह कारण अछि जे संघर्ष करबाक, बदलबाक, गढ़बाक आ जीबाक अदम्य इच्छा आधुनिक कविताक मौलिक स्वर बनि गेल अछि। जीवनक गाढ़ ममतासं उपजल आशावादी कविता वास्तविक कविता थिक आ मैथिलीक समकालीन कविता एहि बाट पर अग्रसर अछि। जाहिसं समकालीन कवि लोकनि मानव मनक हुंकार अंतरद्वंद्व, बौद्धिकता, चिंतन, प्रगतिशीलता आदिकें स्पष्टता सं निखरबामे सफल रहलाह। संगही ओ लोकनि अपन रचना शैली सं काव्यमे एक गोट नव रूप स्थापित कयलनि आ स्रोता एवं पाठकमे रुचि जगौलनि, जाहिसं समाजमे नवीन चेतनाक प्रसार भेल आ कवि लोकनि कें अपन उद्देश्यमे सफलता प्राप्त भेलनि।

निष्कर्षतः ई कहल जा सकैत अछि जे समकालीन कवि लोकनि युग वाहक कवि छथि, जे समाजमे पसरल रूढ़िवादिता आ भ्रष्टाचारक स्वर कें स्पष्ट क' समाजमे नवचेतना लाबय चाहैत छथि। एहि उद्देश्यमे कवि लोकनिकें सफलता भेटि रहल छैन्हि आ मिथिला समाज रूढ़िवादी समाजसं प्रगतिशील समाज दिसि डेग बढ़ा रहल अछि। ■

समसामयिक मैथिली कथा

✍ डॉ. शेखर झा

लेखक सिविल सेवाक तैयारी लेल प्रसिद्ध मेंटर छथि। मंथन आईएएस विषयक अध्यापन। पटना विश्वविद्यालय सं समाजशास्त्र विषय मे एम.ए. आ पीएचडी केर संग माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय (भोपाल) सं पत्रकारिता मे एम.ए. सेहो केने छथि।

"जिनगी कतेक सस्त वा महग छथि, संघर्ष कतेक कठिन आ विकराल छथि, जिजीविषा कतेक कमजोर आ सशक्त छथि, संबंध केहन सच्चा आ मतलबी छथि, मनुष्य कतेक ढोसगर आ ढोसगर छथि, प्रेम आ मोहक जाल केहन छथि, दुनिया कतेक उदार आ अन्हेर छथि, तकरे बानगी अछि समसामयिक कथा वा एकैसम शताब्दीक कथा।"

समानान्तर भाषा साहित्य आ मैथिलीक कथा कैनवास एहि लीक पर चलि रहल अछि। एकैसम शताब्दीक अर्थात् आर्थिक उदारवादक युग, दुनिया कें मुट्ठी मे राख'बला युग, तेज रफ्तारमे भाग'बला युग जत' गाम-घर, माय-बाप, भाय-बहीन सभ पाछू छुटि जाएत अछि, बचि जाएत अछि एकटा असगर लड़ैत-जुझैत, हार-मांसक, सांस लैत व्यक्ति आ एहि परिवेशमे साहित्यकार सेहो यथार्थ पर कलम घसैत चलि जा रहल छथि। मैथिली कथाक समसामयिक अवस्थिति कें एहि बिन्दु पर परखल जायब आवश्यक अछि।

कहल जाएत अछि जे कथा मनुष्य जीवनक कोनो घटनाक अंश अछि। जखन एहि घटनाक आन्तरिक अनुभूतिसंग कलात्मक ढंगसं वर्णन कयल जाएत अछि तं ओ कथा कहाबैत अछि। कथा अंग्रेजीक 'स्टोरी', बांग्लाक 'गल्प', हिन्दीक 'कहानी' शब्दक समानार्थक अछि। कथामे पात्रक परिस्थितिक विरुद्ध संघर्ष, संघर्षक विकरालता, जटिलता आ ओहि जटिलताक विघटनमे कथाक विकास रेखा देखाओल जाएत अछि। कथा व्यापक स्तर पर मानवीय सत्यक अन्वेषण वा उद्घाटन करबाक माध्यम थिक, मात्र तथ्यपरक अभिधामूलक सत्यक नहि। कारण कथा द्वारा कोनो एक विषय-वस्तु वा तथ्यक वर्णनटा नहि अपितु ओ लोक जीवनक व्याख्या सेहो करैत अछि। कथा लोक जीवनक मे सार्थकता प्रदान करैत दिशा-निर्देश सेहो दैत अछि। वस्तुत: उत्कृष्ट कथा ओ होएत अछि आहिसं पाठक अपना आपकें कनेक्ट करि पावै आ बेर-बेर पढ़ि एके तरहक भाव, रस वा आनन्दक अनुभूति करय।

मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि मैथिली कथाक वास्तविक जन्म बीसम शताब्दीक दोसर दशकमे मानैत छथि। मैथिलीमे जखन पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन भेल, मिथिलाक विद्वान साहित्यकार लोकनि राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय भाषा साहित्यक कथासं परिचित भेलाह तखन कविता आ गीते टाकें साहित्य मानबाक परंपरा टूटल आ तखन कथा, उपन्यास, निबंध सब आधुनिक विधाक जन्म भेल।

मैथिल महासभाक आलोकमे समाज सुधारकें साहित्यमे प्राथमिकता देबाक निमित्त वैवाहिक कुरीतिकें प्राथमिक कथा सभमे स्थान भेटल। किन्तु चारिम दशक आबैत-आबैत कथाक विषय-वस्तु आ आवरण बदलैत विवाहेत्तर सामाजिक समस्या दिस सेहो ध्यान देल गेल। पांचम दशक धरि आबैत-आबैत कथानक सं शिल्प-शैली-भाषा मैथिली कथा

संपर्क : *मूल ग्राम-धमदाहा, जिला-पूर्णिमा (बिहार), वर्तमान : मंथन आईएएस (दिल्ली)*
मो.: *9968548859*

समानान्तर भाषा साहित्यक समकक्ष ठाढ़ भ' गेल।

प्रो. हरिमोहन झा, कुमार गंगानन्द सिंह, किरणजी, व्यासजी, अमरनाथ झा, मनमोहन झा आदि अनेको कथाकार एहि काल खंड मे एहन कथासभक रचना कयलनि, जे आइयो ऐतिहासिक महत्व राखैत अछि। ई कथाकार लोकनि मैथिली कथाकें एकटा व्यापक आधार प्रदान कयलनि, मुदा एहि कालमे समाज बहुत तेजी सं करवट ल' रहल छल जाहिसं एकटा नव कथा कैनवासक पृष्ठभूमि बनल मणिपद्म, सुधांशु शेखर चौधरी, पंडित गोविन्द झा, राधाकृष्ण बहेड़ आदिक कथामे एकटा नव दिशाक संकेत भेटैत अछि जकर पल्लवन अग्रिम पीढ़ीक कथाकार सभ मे भेल। ललित, राजकमल आ मायानन्द मिश्रक तिकड़ी एहि नव कथाक तारनहार भेलाह संगहि धुमकेतु, साकेतानन्द, सोमदेव, धीरेन्द्र, गंगेश गुंजन, हंसराज, रामदेव झा, प्रभाष कुमार चौधरी, राजमोहन झा, सुभाष चन्द्र यादव आदि मैथिली कथाकें व्यापक स्वरूप प्रदान कयलनि।

मार्क्सक अतिवादी प्रभाव आ फ्रायडक यौनधारा मैथिली कथाके अन्तर्मुखी बनौलक। सामाजिक आ राष्ट्रीय समस्याकें उद्घाटित करि ओकर समाधान मे जुटल एहि कथा धारामे मैथिली कथाक एकटा नव युगक सृजन भेल, जे अछि एकैसम शताब्दीक कथा, समसामयिक कथा, वर्तमान युगक कथा।

बीसम शताब्दीक अपेक्षा एकैसम शताब्दीक कथाक विशेष महत्व अछि। कारण एकर रचनाक पृष्ठभूमिए व्यापक अछि त' एकर प्रभाव बहुत गंहीर अछि। समाजमे दिनानुदिन बढ़ैत संकुलता, ऋजुता, संघर्ष, संवेदना शून्यता, स्वार्थपरकता आदि यथार्थकें कथ्य ओ शिल्पक समुचित सामंजस्यक आधार पर ग्रहणशील बनेबामे आजुक कथाकार लोकनि पूर्ण सक्षम भेलथिन। दोसर दिस महिला कथाकार सभक रचनाशीलता कथाकें एकटा नव आयाम देने अछि। तेसर भाषाक स्तर पर सेहो बहुत उदारता आयल अछि जत' मानक मैथिलीक संग-संग अंगिका, बज्जिका, ठेठी भाषामे कथोपकथन कथासभकें आर जीवंत करि रहल अछि। पूर्वसं मैथिली साहित्य पर जातिनिष्ठ होयबाक आरोप लागैत छल आ संगहि समाजक विशाल वर्गक उपेक्षाक आरोप सेहो। ताहि आरोपसं मुक्त करयबामे एकैसम शताब्दीक कथा विशेष सक्षम भेल अछि।

ई तथ्य उल्लेखनीय जे बीसम शताब्दीक अनेक कथाकार जेना गंगेश गुंजन, प्रदीप बिहारी, रामानन्द रेणु, विभूति आनन्द, पं. गोविन्द झा आदि एखनो धरि सक्रिय छथि। एकैसम शताब्दीक लेखिकासभमे उषा किरण खानक 'अजनास', नीरजा रेणुक 'अनचिन्हार' विभारानीक 'कौआ हंकनी', ज्योत्सना चन्द्रमक, स्वप्न गर्भा', आशा मिश्रक थाहैत स्वप्न, कमला चौधरी 'समय संकेत', नीता झाक 'पृथा', 'देशकाल', 'एकटा शीतल देश' आदि कथासभ स्त्री-विमर्श, संस्कृति विमर्शक संगहि लेखिका लोकनि मानवीय जीवनक विविध पक्षक चर्चा अपन कथा आ कथा संग्रहसभमे कयने छथिन।

मार्क्सक अतिवादी प्रभाव आ फ्रायडक यौनधारा मैथिली कथाके अन्तर्मुखी बनौलक। सामाजिक आ राष्ट्रीय समस्याकें उद्घाटित करि ओकर समाधान मे जूटल एहि कथा धारामे मैथिली कथाक एकटा नव युगक सृजन भेल जे अछि एकैसम शताब्दीक कथा, समसामयिक कथा, वर्तमान युगक कथा।

एम्हर पंडित श्यामानन्द ठाकुरक सत्ताइस गोट कथाक संग्रह 'हमहुं जेबै पंजाब' आ बाइस गोट कथाक संग्रह 'हथौड़ी वाली भौजी' बेस ख्याति पऔलक। जगदीश प्रसाद मण्डलक उन्नैस गोट कथाक संग्रह 'गामक जिनगीके' 2012 ई. मे टैगोर पुरस्कार भेटलनि। श्याम दड़िहरे सेहो एकैसम शताब्दीमे 'बड़की काकी डॉट कॉम' उपन्याससं युवा पीढ़ीक बीच लोकप्रिय छथि। हिनक कथा 'सरिसो मे भूत' विशेष आशा जगऔने अछि। मिथिलेश कुमार झाक टीस, ऋषि बशिष्ठक 'माटिपरक लोक' आ 'सुफारि जतरा', डॉ. सुधाकर चौधरीक 'तीन रंग तेरह चित्र', डॉ. यशोदानन्दक 'जुआन चित्कार', रमेशक 'हखल', सुभाष चन्द्र यादवक 'बनैत बिगड़ैत', धीरेन्द्र नाथ मिश्रक 'समाचार कथा' आदि एहन कथा आ कथा संग्रह सभ अछि जे मैथिली कथाक उज्ज्वल भविष्यक संकेत करैत अछि।

समसामयिक कथाक सभसं नम्हर चुनौती अछि पठ्यताक अभाव। आहि तरहें दूरदर्शन, इलेक्ट्रॉनिक मीडियाक प्रसार भेल अछि ओहिमे प्रिंट मीडिया हाशिया पर आबि गेल अछि। नीक-नीक कथाकें प्रकाशनक अभावक दंश झेल' पड़ि रहल अछि। कहल जाइत अछि जे मैथिलीकें अष्टम अनुसूचीमे त' शामिल करि लेल गेल, राष्ट्रीय स्तर पर नव-नव प्रयास सेहो भ' रहल अछि, मुदा मैथिली साहित्य आ भाषा अपने घर-आंगन मे उपेक्षित अछि। साहित्य पढ़निहारे नहि त' रचनिहार की करथिन। 'कापर करू सिंगार पिआ मोर आन्हर रे...।' तैयो पाठक जामातेक आइ जोहल जा रहल अछि आ विश्वास अछि जे मैथिली भाषाक पाठक एहि दिस उन्मुख होयथिन।

निष्कर्षतः मैथिली कथाकार हारल नहि छथि, हुनकर कथाक प्रवृत्ति व्यष्टिसं समष्टि दिस बढ़ि रहल अछि। सामाजिक समस्यासं व्यापक राष्ट्रीय समस्या पर कथामे विचार करब, व्यक्तिगत सुख-दुःखक आधार पर ओहि स्थान पर संपूर्ण मानव समाजक पीड़ाकें अभिव्यक्त करब वा तकर निदानक संकेत करबा मे आजुक कथा आ कथाकार लागल छथि। ■

केहन भुलक्कड़ समाज थिकहुं हम

✍ रमण कुमार सिंह

एकटा समाजक रूप मे हम मैथिल जन बहुत भुलक्कड़ समाज थिकहुं। एहन बिसरभोर थिकहुं, जे नै ते अपन संस्कृति पुरुषक जन्मतिथि मोन रहैत अछि आ ने एकर कोनो ज्ञान रहैत अछि, जे हमर ज्ञान-परंपरा कतेक समृद्ध रहल अछि। आइ हम सभ एकटा उपभोक्तावादी समाजक अंग बनि गेल छी आ अवसरवादी जकां जतय दही, ओतै सही कहय लागैत छी। एम्हर किछु एहन घटना भेल, जाहि कारणें हमरा एहि स्मृति लोप पर विचार करय लेल बाध्य हुअए पड़ल। बाबा वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' मैथिली आ हिंदी साहित्याकाशक शिखर पुरुष छलाह। हुनक जन्म 1911 ईस्वी मे ज्येष्ठ पूर्णिमा के भेल छलनि। वर्ष 1911 मे ज्येष्ठ पूर्णिमा 11 जून के पड़ल रहय। ओ स्वयं अपन जन्मदिन ज्येष्ठ पूर्णिमा के मनाबैत छलाह। मुदा एहि बेर संभवतः विकिपीडिया पर अंकित गलत जन्मतिथि के कारणें लोक सभ सोशल मीडिया पर 30 जून के हुनका स्मरण करय लागल। कतेक नेता लोकनि सेहो ओहि दिन हुनका स्मरण करि श्रद्धांजलि अर्पित कयलनि। जाहि नेता कें मिथिला के गौरव पुरुषक जन्मतिथि मोन नहि छनि, जिनका मिथिलाक संस्कृतिक ज्ञान नहि छनि, ओ मिथिलाक कल्याण कतेक करि सकत, ई सोचल जा सकैए! एहि नकली जन्मतिथि के प्रभाव एहन भेलै, जे हुनक पुत्र सुकान्त नागार्जुन के स्वयं सोशल मीडिया पर लिखय पड़लनि, जे यात्री जी के जन्मतिथि 30 जून नहि थिक। हुनक कोनो पोथियो पर एकर जिक्र नहि अछि। एहिना होइत छथि, जखन हम अपन स्मरण शक्ति के बिसरि गूगल गुरु पर निर्भर भ' जाइत छी, ते स्वाभाविके स्मरण क्षमता खतम भ' जाइत अछि। ई हाल तखन अछि, जखन कि यात्री जी के गत भेला बहुत बरिस नहि बीतल अछि।

हुनक स्मृति एखनो बहुत रास लोकक मोन मे जीवंत अछि। भलहि यात्री जी एक बेर अहिबातक पातिल फोड़ि फाड़ि/पहिलुक परिचय सब तोड़ि ताड़ि/पुरजन-परिजन सब छोड़ि छाड़ि मिथिला के अपन अंतिम प्रणाम कहि सूतल सृष्टि के जागरण हेतु आन ठाम चलि गेल छलाह, मुदा आन ठामक यायावरी करितौ सुख-दुख, हर्ष-विषाद आ रोग-शोक मे हुनका सबसं पहिने मोन पड़ैत छलन्हि अपने भूमिक लोक। यात्री जी आम लोकक संघर्ष आ आकांक्षा केर जनकवि छलाह। राजनीतिक छल-छद्म आ भ्रष्टाचार पर हुनक लेखनी जतेक करगर प्रहार केलक, से विरल अछि। तात्कालिक घटना पर ओ जेहन कविताक सृजन कयलनि, ओहि अपन सरोकारक कारणें हुनका जनकवि केर दर्जा भेटलनि। स्वभाव सं अक्खड़ आ फक्कड़ कवि यात्री जी मिथिला के लेल गौरव पुरुष थिका, मुदा अफसोस के गप ई थिक, जे ई समाज हुनक जन्मतिथियो के यादि नहि राखि सकैत अछि। आइ समाज मे जेहन तरहेंक मूल्यक क्षरण भेल अछि आ लोक राजनीति के पीछु-पीछु जेना नांगरि डोला रहल अछि, एहना मे यात्री जी नित्य स्मरणीय कवि छथि। यात्री जी कें मोन पाड़ैत जतेक साहित्यिक आयोजन, संगोष्ठी आ परिचय हुअय, ततेक नीक, मुदा हुनक गलत जन्मतिथि प्रचारित करि उत्सव मनेनाइ कोनो नीक गप नहि थिक।

आ यात्री जी कें देवता बनेबाक जरूरत सेहो नहि छथि, ओ गरीब-गुरबा लोकक कवि छलाह, मानवीयता आ मानव मूल्यक संरक्षक छलाह, तें हुनका जनकविक रूप मे स्मरण करब बेस समीचीन होयत। विद्यापति कें देवता बनेबाक हश्र हम सब देखि रहल छी। आइ घरे-घर विद्यापति पर्व मनाओल जा रहल अछि, मुदा जाहि देसिल बयना के ओ गप केने छलाह, तेकर अवहेलना हम सब रोज करैत छी। विद्यापति पर्व समारोह मे जेहन तरहक अश्लील आ फूहड़ गीत-गान के आयोजन होइत अछि, विद्यापति रहितथि, ते ओकरा देखि अपन माथ फोड़ि लेने रहितथि।

आइ-कालिह मिथिलांचल भीषण बाढ़ि के चपेट मे फंसल अछि। एक सं एक हृदय विदारक दृश्य आ समाचार पढ़ै-सुनै लेल भेटैत अछि। आ ई हाल मात्र एहि बेरक नहि थिक, बरू आनो साल कम-बेस बाढ़ि अपन तांडव मचबैत अछि। किछु दिन पूर्व मिथिलांचल मे भूजल संकट आ रौदी के खबर राष्ट्रीय मीडिया के सुर्खी बन छल। मुदा हम सब एहन बिसरभोर छी, जे जखन चुनावक समय मिथिलांचलक नेता लोकनि सं एहि बाढ़ि आ रौदी के संकट दूर करबा लेल सवाल पूछबाक समय छल, ते हम सब अपन एहि समस्या कें बिसरि गेल रही। तखन स्वयं के मिथिला आ मैथिली सेवी कहनिहार लोक एहन कोनो प्रश्न पूछनिहार के मात्र एतबे कहैत छलाह, एखन मात्र राष्ट्रवाद। आइ देखू जे छद्म राष्ट्रवादक बिहाड़ि मे हमरा सभक वास्तविक समस्याक समाधान केना उड़िया गेल आ मिथिलांचलक एकटा पैघ आबादी फेर अछैत घर बेघर बनल अपन अस्तित्वक लेल संघर्ष करि रहल अछि। की एखनहुं हम सभ अपन तंद्रा तोड़ि स्मृति लोप केर कुहेस सं बहिरायब? ■

मोबाइल-9711261789

ईमेल : kumarramansingh@gmail.com

कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास

✍ अशोक कुमार झा

बिहार सहकारिता सेवाक पदाधिकारी रूपमे सेवाक उपरान्त वर्ष 2013मे सेवानिवृत्त। प्रकाशित कृति-कथा-संग्रह-ओहि रातिक भोर (1991), मातबर (2001), डैडीगाम (2017), सहयोगी कथा-संग्रह-शैलेन्द्र आनन्द आ शिवशंकर श्रीनिवासक संग-त्रिकोण (1986), मैथिल आँखि (निवन्ध सँग्रह) 2007 कथाक उपन्यास: उपन्यासक कथा (मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक अध्ययन) 2012 बात-विचार (आलोचना) 2015। आँखिमे बसल (यात्रा-कथा) 2013, चक्रव्यूह (कविता-सँग्रह) 1986, नीक दिनक बाइस्कोप (व्यंग) 2018, सम्पादन: संवाद (वार्ता) 2007, प्रतिमान (विचारगोष्ठीक आलेख ओ विमर्शक सँग्रह) 2013, सन्धान (अनियतकालीन पत्रिका) 1997 सँ 2000 धरि।

शिवशंकर श्रीनिवास हमर मित्र छथि। हमरा सभक मित्रता किशोरावस्था सं आइ धरि कायम अछि। से एहि दुआरे नहि कि हम सभ एक्के गाममे धरि गाम सं दू मील दूर कालेज मे पठबा लेल, हम सभ संगे-संग जाइत छलहु आ अबैतो छलहुं। बात किछु दोसर है। हम दुनू गोटे कथा लिखैत छी। कथाकार छी। साहित्य हमर सभक मित्रताक आधार अछि। कहल जाइत छथि जे साहित्य जोड़ैत छथि। तोड़ैत नहि छथि। त' साहित्ये अछि जे एहि तमाम वर्ष मे हमरा दुनू के जोड़ने रहल अछि।

शिवशंकर गाम मे रहैत छथि। ओ मैथिली तथा हिन्दी भाषा मे एम.ए. केने छथि। पी.एच.डी. केने छथि। पी.एच.डी. मे हिनक विषय रहनि 'कथा साहित्य मे समाजक चित्रण'। ओ कल्याणी मिथिला संस्कृत महाविद्यालय, दीप (मधुवनीमे) उपाचार्य पद पर काज केलनि। आब सेवानिवृत्त भ' गेल छथि। सेवानिवृत्तिक समय मे कालेजक प्रधानाचार्य रहथि। हुनका अपन जीविका लेल गाम नहि छोड़' पड़लनि। प्रोफेसर बनला सं पूर्व सकरी मे पब्लिक स्कूल मे सेहो बहुत दिन शिक्षकक काज केलनि। हम नेनपनेसं शहरे मे पढ़लहुं-लिखलहुं। नौकरी केलहुं। सभ मिलाक' पायो बरा, गाम मे नहि रहल होयब। तैयो शहरी नहि भ' सकलहुं। गाम लगातार हमर मोन मे जीवित रहल। गाम के हमर मोन मे जीवित रखबा मे शिवशंकर आ हुनकर कथा सभक हाथ सेहो रहल अछि। शिवशंकरक कथा गाम के बिसर' नहि दैत अछि। गाम के अस्तित्व, विकास आ प्रतिष्ठा लेल संघर्षरत शिवशंकरक कथा मन-मस्तिष्क के छेकने रहैत अछि। अपनामे लेपटा लैत अछि। अनबरत टोकैत रहैत अछि। कहैत रहैत अछि जे गाम लेल किछु सोचु, विचारु। किछु करू।

शिवशंकर श्रीनिवासक एक कथा छनि 'चिंता'। कथा मे मेहीं कामति एक लघु कृषक छथि। बैसल रहला पर जन मे सेहो खटि लैत छथि। खेती करबाक इलम लेल सभ हुनकर प्रशंसा करैत अछि। वस्तुत: ओ खेतसं प्रेम करैत छथि। एही खेतियाहा मोन के कारण हुनका भीतर सामुदायिक सोच उपजल छथि। जकरे पृष्ठभूमिमे कृषक-संस्कृति अछि। कृषि कर्म सं उपजल जीवनशैली अछि। ओ एहि बात सं चिंतित छथि जे लोक गाम सं भागि रहल अछि। खेती-पथारी बंद भ' रहल अछि। मेहींक बेटा झगड़ा क' क' शहर चल गेल अछि। मेहीं सोचैत रहैत छथि जे हुनकर बेटा चूमि क' फेर अपन गाम आओत आ गाम मे खेती करत। श्रीनिवासक ई कथा कृषि-कर्म से लोकक पलायन के रेखांकित करैत अछि। रेखांकिते नहि करैत अछि आजुक स्थिति के प्रश्नांकित सेहो करैत अछि। वस्तुत: मेहीक बेटा के फेर सं गाम आयब आइ सभसं पैघ चुनौती बनि गेल अछि। जं ओ घूमि क' आबियो जाइत अछि त' की खेती सं ओकर गुजर-बसर भ' सकतैक? मेही सन हजारों-लाखों मिथिलाक बेटा सभक

__संपर्क :__ बी-102, श्रीरामचन्द्र एन्कलेव, रोड नं.-1ए, शिवपुरी, पटना-23
__मोबाईल :__ 8986269001

बोझ की एहिठामक खेती सम्हारि सकैत अछि? वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे त' एहि प्रश्नक जवाब नकारात्मक अछि। वस्तुत: खेती आइ उद्योग भ' गेल अछि। उद्योगे जकां, ओकरा चलब' पड़ैत छथि। एना मे केवल हुनर आ खेत सं प्रेमक बल पर उद्योग कोना चलाओल जा सकैत अछि। ओहि लेल पूंजी, लाभकर जोत, बजारमे टिकबाक सामर्थ्य चाही। मुदा मेहीं तु' एक लघु कृषक छथि, खाली समय मे मजदूरी सेहो क' लैत छथि। जीवन निर्वाह कहुना भ' जाइत छनि। खेतीक नक्का चलनि मे मेहीं सन कृषक पूर्णत: मजदूर भ' जायत। मजदूरिए टा हुनकर हाथ मे रहि जेतनि। गाम मे बाप मजदूर आ शहर मे बेटा मजदूर। से लगातार भ' सेहो रहल अछि। त' एहि तरहें मेहींक चिंता एक व्यापक चिंताक घटाटोप मे अहां के समेटि लैत अछि। श्रीनिवासक कथा एहिना अहांके भीतर उतरैत अछि अहांके आकुल-व्याकुल करैत अछि।

श्रीनिवासक पहिल स्वतंत्र कथा-संग्रह 'अदरुन' वर्ष 1991 मे प्रकाशत भेल। ओहि सं पहिने एके गामक तीन कथाकार मित्र-अशोक आ शैलेन्द्र आनन्दक संग पांच-पांच टा कथाक सहयोगी कथा-संग्रह 'त्रिकोण' नाम सं 1986 मे प्रकाशित भेलनि। हुनकर दोसर कथा-संग्रह 'गामक लोक' 2005 मे आयल आ तेसर 'गुण-कथा' वर्ष 2014 मे। ओकर वादो ओ लगातार कथा लीखि रहल छथि जे पत्रिका सभ मे प्रकाशित होइत रहैत छनि। 'अदहन' कथा-संग्रहक भूमिका मे प्रसिद्ध कवि-कथाकार जीवकान्त कहने छथि जे, 'हिनक कथा सभ मे कहबाक जे ढंग, से उत्सुकता जगबैत अछि। पढ़बा काल मोन अकछाइत नहि अछि। एहि दृष्टिएं ओ बंगलाक कथाकार सभ जकां पाठक पर अपन 'पकड़' बनओने रखबामे सिद्धहस्त छथि। किछु कथाकार अपन कथाकं शिल्प एहन बिछैत छथि जे कथाकारक कथ्य एखन धरि ई नहि विकसित कयलनि अछि। ई संतोषक बात छी। कमला आ बागमती कछेरक मैथिली ई खूब सुन्नर लिखैत छथि। सामान्य लोकक दैनन्दिन भाषाक किछु अद्‌भुत शब्द सभ ई जीवनसं सोझे उठा क' देलनि अछि। एहू तरहें ओ भाषा आ साहित्य कें सम्पन्न क' रहलाह अछि।' 'गामक लोक' कथा संग्रहक भूमिका मे हम कहने रही जे श्रीनिवास हमर प्रिय कथाकार छथि। ई बात मुदा बहुतो लोक कहि सकैत छथि। हमरा बूझल अछि जे मैथिलीक पाठक हुनका बहुत प्रेम करैत छनि। हुनकर कथाक प्रतीक्षा करैत अछि।

कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक ई एक एहन तागति छी जे हुनका श्रेष्ठ बनबैत अछि। वर्ष 1983 मे अपन कथा 'अपन बुत्ता' सं कथा-यात्राक आरंभ कयनिहार श्रीनिवास आइयो पाठक लोकनिक प्रिय कथाकार छथि। ओ एहन तागति कत' सं उपलब्ध केलनि अछि? कोना ओ एत्ते वर्ष से अपना आप के तरोताजा बना क' रखने छथि? एकर की रहस्य अछि? एकर रहस्य अछि शिवशंकरक लोक-मन के जनबाक, बुझबाक सतत चेष्टा।

जखन कोनो पत्रिका मे हुनकर कथा छपैत अछि त' पाठक के खुशी होइत छथि। चलू, एक नीक कथा पढ़बा लेल भेटत। एहन अवसर भरिसके आयल हो जखन शिवशंकर अपन कथासं पाठक के निराश केने होथि। ओ छत्तीस वर्ष सं लगातार कथा कहि रहल छथि, तैयो ई नहि लगैत छथि जे ओ बासि भ' रहल छथिं वा अपना के दोहरा रहल छथि। कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक ई एक एहन तागति छी जे हुनका श्रेष्ठ बनबैत अछि। वर्ष 1983 मे अपन कथा 'अपन बुत्ता' सं कथा-यात्राक आरंभ कयनिहार श्रीनिवास आइयो पाठक लोकनिक प्रिय कथाकार छथि। ओ एहन तागति कत' सं उपलब्ध केलनि अछि? कोना ओ एत्ते वर्ष से अपना आप के तरोताजा बना क' रखने छथि? एकर की रहस्य अछि? एकर रहस्य अछि शिवशंकरक लोक-मन के जनबाक, बुझबाक सतत चेष्टा। लोक-मन पर हुनकर गहींर पकड़ ओ शुरु सं एक आम लोक रहल छथि। आम लोक सन सोचैत छथि। आम लोकक तागति पर हुनका अटूट आस्था छनि। एही संग अपन जमीन, अपन माटि ओ कहियो नहि छोड़लनि अछि। हुनकर मन-मस्तिष्क माटिक तागति आ माटिक सुगंधि सं भरल पुरल अछि। ओहि मे रचल-बसल अछि। ई माटि मिथिलाक माटि थिक। एहि मे मिथिलाक माटिक सौरभ के अनुभव कयल जा सकैत अछि। चिन्हल जा सकैत अछि। ओ 'अदहन' कथा-संग्रह मे अपनो कहने छथि जे, 'एकटा बात लेल हम कथामे सतत् प्रयत्नशील रहलहुं अछि जे कथा मैथिली कथा रहय। माय वाक्य संरचना मे क्रियापद मैथिली रहने ओ मैथिली कथा नहि लागय अपितु मिथिलाक माटिक सौरभ कथामे रहैक। कखनो-कखनो कथाकार अपन भूमि सं पूरक कथा कहैत छथि, ताहिठाम तें कथा मे मिथिलाक जन-जीवनक बात नहि रहत परन्तु एहन लागय जे कोनो मैथिल मैथिली मे मिथलाक बाहरके कथा कहलनि अछि। ई भेनहि मैथिली कथा अपन फूट चिन्हास बनौने रहत। ओकर एहन चिन्हार हैबे कथा के मौलिक रूप सं विशिष्ट बनाओत।'

त' माटिक तागति आ ओकर, सौरभक महत्ता बुझैबला कथाकारक मन स्वाभाविक रूप सं आम लोकक मन, गाम-ग्रामीणक मन, खेतिहरक मन होयत। सैह कारण अछि जे शिवशंकरक कथामे प्रेम-मनौअलि हो, राग-विराग हो, चिन्ता बेगरता हो, द्वेष-घृणा हो, रूप

वर्णन हो, संघर्ष वा श्रृंगार हो, यैह मन बेर-बेर झलकि जाइत अछि। हुनकर एक सुंदर कथा अछि 'जमुनियां धार'। कथा कहैत अछि जे भिन्न-भिन्न रीति-रिबाज के मनौबला लोक सभ जं एक समाज मे रहैत अछि त' ओकर संवेदना सेहो एक होइत छथि। कथामे एक मुस्लिम युवती अछि। गामक ओहि युवतीक बएसक संबंध मे जखन कथाकार कह' चाहैत छथि त' देखू की कहैत छथि, 'आसिन मास मे खेतक आरि पर ठाढ़ भ' गरजैत धानक फसिल के जरूर हियौने हैब, आब फूटत तखन फूटत। ओहने सन लगैत बएसक युवती छलि।' ओकर रूप 'छांटर चाउर आ महमह तेहने ओकर रूप आ ठंढ लागि रहल छल।' ओहिना 'चिड़ै नहि मनुक्ख थिक' कथाक नायक वामदेव के कद-काठीक वर्णन करैत कहने छथि, 'से त' अद्‌भुत मनुख अर। ओकरा देखैत छिऐ तें ठीके होइए जे लोरिक ताड़क गाछक छड़ी बना क' चरवाही करैत छल होयत।' हुनकर कथा सभ के पढ़ैत अहां महसूस करब जे श्रीनिवासक सौंदर्य-बोध लाक-मन, खेतिहर-मन के रस मे पागल अछि। ई बहुत महत्वपूर्ण बात थिक। सामान्यत: कथाकार सभ पर पारम्परिक सौंदर्य-बोध जे संस्कृत-साहित्यक धार मे मजरल रहैत अछि से कोनो नारी- पुरुषक सौंदर्यक वर्णन करैत काल संस्कृते साहित्य मे आयल उपमा सभ द' क' अपना के व्यक्त करैत अछि। मैथिलीक विद्रोही कथाकार राजकमल चौधरी पर्यन्त अपन नायिकाक रूपवर्णन मे बाणभट्‌ट के मोन पाड़ैत छथि। एहनामे शिवशंकर श्रीनिवासक कथाकार एक कृष्णकक सौंदर्य-बोध सं अपन कथामे स्त्री-पुरुषक रूपक वर्णन करैत अछि से मैथिली कथामे श्रीनिवासक विशिष्ट योगदान मानल जा सकैत अछि। हुनकर कथा सभ के पढ़ैत कोनो पाठक के लागि सकैत छनि जे ओ गाममे कृषि-कर्म सं जुड़ल लोक छथि। कृषक छथि।

शिवशंकरक कथा-संसार मे बहुते जीवन्त, दीन-दुनियां से प्रेम कर' बला लोक सभ बसैत अछि। ई लोक सभ खाली मनुक्खे सं प्रेम नहि करैत अछि। पशु-पक्षी सं, गाछ-पात सं, वनस्पति सभ सं, खेत-पथार सभ सं सेहो प्रेम करैत अछि। एहि सभ लोक के श्रीनिवासक कथाकार बहुत प्रतिष्ठा दैत अछि। प्रतिष्ठित करैत अछि। एहने लोक सभ सं ओ अपन कथा-संसार रचलनि अछि। कथाकारक काज होइत छै जे ओ वास्तविक संसार सं पृथक अपन मनोरथक अनुकूल एक फराक कथा-संसार रचय। जन-जीवन सं उठा क' एहन चित्र

शिवशंकरक कथा-संसार मे बहुते जीवन्त, दीन-दुनियां से प्रेम कर' बला लोक सभ बसैत अछि। ई लोक सभ खाली मनुक्खे सं प्रेम नहि करैत अछि। पशु-पक्षी सं, गाछ-पात सं, वनस्पति सभ सं, खेत-पथार सभ सं सेहो प्रेम करैत अछि। एहि सभ लोक के श्रीनिवासक कथाकार बहुत प्रतिष्ठा दैत अछि। प्रतिष्ठित करैत अछि। एहने लोक सभ सं ओ अपन कथा-संसार रचलनि अछि।

सभ उपस्थित करय जे एक फूट संसार रचबाक विन्यास सं सुसज्जित हो। ओकर आंखि मे बसल हो। से मनोरथक संसार के श्रीनिवासक कथा-संसार मे देखल जा सकैत अछि। स्वत: से लौकि उठैत छथि। एही संग हुनक कथा-संसार मे आत्मकेन्द्रित, संकुचित, धन-पशु, शुभ-लाभक मानसिकतामे जीव' बला, जाति-संप्रदाय के महत्ता देब' बला अहंकारी आ भ्रष्टाचारी के हनुकर धिक्कार आ फटकार सेहो देखैत बनैत छथि। एहन लोकक मानसिकता के ओ पियाजुक एक-एक छिलका जकां उतारैत चलैत छथि। देखू, एहने एक लोकक संबंध मे 'चिड़ै नहि मनुक्ख थिक' कथामे ओ की कहि रहल छथि, 'से इन्दुनाथ के ककरो खिधाश मे बड़ रस आबनि। गाममे वेरोजगारी बढ़ि रहलैए, पढ़ब-लिखब दिससं लोक भागि रहलए। जकर हालत नीक छलै ओकर बिगड़ि गेलै... से सुनि हुनका आनंद होइन आ यैह आनंद लेबाक लेल, पूरा गाम मे अपन पैघत्व देखाबय इन्दुनाथ गाम आबथि। ओ जखन अपन दलान पर बैसल दरबारी सभ सं घेरल रहैत छलाह, तें, हुनका होइत छलनि जे ओ जेना रामबहादुर झा भ' गेल होथि। वैह रामबहादुर झा जे प्रत्येक दिन चिड़ै-भोज करैत रहथि। रामबहादुर झा जेखन चाउर के आंजुर मे ल' ऊपर उछालि छिंटथि तें, ऊपर चिड़ै सभ चाउर के ओकर दपदपी सं लोकि लेब' चाहय, ओहि समय कएक बेर ओ भीतरे-भीतर जेना चिड़ै भ' जाथि। ... वैह इन्द्रनाथ आब भीतरे-भीतर राम बहादुर झा भ' रहल छलाह।' शिवशंकर अपन कथा के लोकोक्ति, छोट-छोट खिस्सा, सुक्ति सभ, गप सभ सं रचैत छथि। हुनकर कथाक ई शिल्प नहि केवल हुनक कथन-शैली के लोकधर्मी बनबैत अछि, कथ्य के सेहो ओरिया क' हृदय मे उतारि दैत अछि। सम्पूर्ण कथा मोनमे घुलैत रहै छथि।

श्रीनिवासक कथा-संग्रह 'गामक लोक' के भूमिका मे हम लिखने रही जे, 'ओ ओहि लोक सभक पक्ष मे छथि जे काजुल अछि, परिश्रमी अछि। अपन बुत्ता पर भरोस केनिहार अछि। कोनो बसात मे उड़िया जाइ बला लोक नहि अछि। जागल-जागल लोक अछि। जकर क्रियाकलाप सं धरती ऊपर उठैत अछि। जे सामान्यतया कृषि-कर्म सं जुड़ल अछि। यदि सोझे-सोझ नहियो जुड़ल अछि त' आत्मसम्मान सं अपन पैर पर ठाढ़ भ' जिनगी जीब' चाहैत अछि। जकर घाम चोटी सं एेंड़ी धरि बहैत रहैत छथि। एहने लोक अपन

परिवेश सं विछिन्न नहि हुअ' चाहैत अछि। हाड़-मांसक यंत्र नहि बन' चाहैत अछि। तर्कपरायण, रूढ़िवादी, कठमुल्ला ओ नहि बनि सकैत अछि। वस्तुत: एहम लोक क्रियाशील जीवन जीब' चाहैत अछि। ओ जनैत अछि जे क्रियाशीलते जीवनक उद्‍देश्य थिक। क्रियाशीलता के छोड़ि जीवनक सौंदर्य कतहु ठहरि नहि सकैत अछि। मुदा ई 'ग्लोवल भिलेज' बला सभ एहि सुंदर के फालतू चीज बनेबा पर बिर्त्त अछि। ओकरा से जरूरी बुझाइ छथि, किएक त' ओ महाजन थिक, व्यापारी थिक ओकरा कोनो सुरति मे अपन माल बेचबाक छथि। ताहि लेल गामक गुण के गामक लोकक क्रियाशील सुंदर जीवन कें फालतू घोषित करब जरूरी छथि। तखनहि ओकर मुक्त व्यापार ओत' प्रवेश क' सकत। 'भिलेज ग्लोबल' बनि सकत।' शिवशंकरक कथामे गामक यैह काज कर' बला परिश्रमी, श्रमजीवी, आत्मसम्मानी लोक 'ग्लोवल भिलेज' के व्यापारी सभक प्रतिपक्ष मे चुनौती देबाक मुद्रामे अहांके ठाढ़ भेल भेटि सकैत अछि। हुनकर कथामे एहने क्रियाशील जीवन जीव' बला कतेको स्त्री-पुरुषक आत्मसम्मानी व्यक्तित्वक सौंदर्य अहांके मोहित क' सकैत अछि। शिवशंकरक कथा 'साहुकारी' के लिअ'। गाममे रहनिहार मास्टर गोपीनाथ ठाकुर कथाकार छथि। अपन काजक प्रति, अपन कथा-लेखनक प्रति हुनका हृदयमे सम्मानक भाव छनि। ओ एहन काज नहि करैत छथि। अथवा नहि कर' चाहैत छथि जाहि काजक प्रति हुनका सम्मानक भाव नहि छनि। जाहि काजमे हुनका रूचि छनि ओहि काजमे हुनका तृप्ति भेटैत छनि। मास्टरी हुनकर पसिन्न के काज छनि। ओहि काजक प्रति जखन लोक के असम्मान प्रदर्शित करैत देखैत छथि त' क्रोधित होइत छथि। मुदा लोक सभ अछ जे जुनका चोट पहुंचबैत रहैत अछि। सभ पाइ के महत्व दिअ' लागल अछि आइ-काल्हि। पाइ चाहे जेना आबय। जत' सं आबय। एहि क्रममे ओ बेटाक संग पत्नी सं सेहो असहमत होइत छथि। पत्नी पर हुनका भरोस छलनि। मुदा ओहो बदलैत समय संग बदलि गेली अछि। पाइक महत्व दिअ' लगली अछि। ताहू मे जहिया सं राजसत्ताक समर्थन भेटि गेलैक अछि तहिया सं समाज पर संकट आर बढ़ि गेल अछि। एहन विकट समय मे गोपीनाथ ठाकुर ओहि बनिया के मोन पाड़ि हसि पड़ैत छथि जे,

शिवशंकरक लोक-मन, खेतिहर- मनक व्याप्ति खाली मिथिलाक गाम धरि सीमित नहि अछि। ओ एहि मन सं सम्पूर्ण देश आ विश्व के हियबैत छथि। ओ बहुतो कथा कथा शहर मे रहै बला गामक लोक के कथा सेहो कहलनि अछि। 'गण-कथा', 'रूमाल', 'पितामही', 'मनुक्ख नदी थिक' आदि कथा के एहि दृष्टि से देखल जा सकैत अछि। हुनकर कथा के गाम आ शहर मे विभाजित क' कय नहि देखल जा सकैत अछि।

आमदनीए के सभ किछु बुझैत छल। अपन स्त्री तक सं तखने बात करैत छल जखन किछु आमदनीक संभावना बनैत हो। कथाकार प्रतीकात्मक ढंग सं एहि व्यापारी मानसिकता पर व्यंगक चोट करैत छथि। एहि कथाक माध्यमसं शिवशंकर इहो बात कहलनि अछि जे जाहि विचार-व्यवहार के, जाहि काज के समाज मे घृणाक दृष्टि सं देखबाक परंपरा विद्यमान रहल अछि, ओ सामाजिक मानदण्ड आब एहि बाजारबादक समय मे बदलि रहल अछि। आब एके घर-परिवार मे फराक-फराक सोच आ आस्थाक लोक रह' लागल अछि। एना मे, घर-परिवार, समाज सभ चुनौतीक दायरामे आबि गेल अछि।

शिवशंकरक लोक-मन, खेतिहर-मनक व्याप्ति खाली मिथिलाक गाम धरि सीमित नहि अछि। ओ एहि मन सं सम्पूर्ण देश आ विश्व के हियबैत छथि। ओ बहुतो कथा कथा शहर मे रहै बला गामक लोक के कथा सेहो कहलनि अछि। 'गण-कथा', 'रूमाल', 'पितामही', 'मनुक्ख नदी थिक' आदि कथा के एहि दृष्टि से देखल जा सकैत अछि। हुनकर कथा के गाम आ शहर मे विभाजित क' कय नहि देखल जा सकैत अछि। हुनकर कथा ग्राम्य-बोधक कथा नहि छी। ओ गामक सदरजमीन पर ठाढ़ भ' सामाजिक-आर्थिक सभ प्रश्न सभ सं टकराइत छथि आ सम्पूर्ण समाज लेल जे श्रेयस्कर अछि, ओहि बात के अपन कथामे कहैत छथि। हुनकर आस्था समाजक कल्याणकारी विकास मे अछि।

शिवशंकर के कथा लिखब बहुत पसिन्न छनि। हम चाहैत छी जे ओ अपन पसिन्नक हरेक एहन सभ काज जे लोक के जोड़य। समाज के, लोक के उच्च स्तर पर ले' जाय। ककरो अहंकारक विरोध करय। जे आम-रस्ता पर बेढ़ लगबैए, ओहेन बेढ़ के ओहन बेढ़ लगौनिहार व्यवस्थाक विरूद्ध संघर्ष लेल तैयार हुअय। शिवशंकर अपन कथाक माध्यम सं सुंदर जीवनक कतेको चित्र प्रस्तुत केलनि अछि। ओ जनैत छथि जे जीवन मे संघर्ष सेहो बंह क' सकैत अछि जे सुंदर आ व्यापक रूप सं जीवन जीअ' चाहैत अछि। लोक मे संघर्ष-चेतना बनल रहय से आवश्यक अछि। मुदा संघर्ष-चेतना बनल रहबाक लेल सौंदर्य-चेतना बनल रहब सेहो जरूरी थिक। कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास अपन कथाक माध्यम सं सैह बात कहबाक लेल बेर-बेर लगातार कथा लिखैत रहला अछि। ■

रहबौ हम उद्दाम

हम की रहियौ कतौ सान्हि मे
रहबौ हम उद्दाम।
हमरा रखब' छेकि बान्हि के
कात बसेबह गाम।
हम बेटी छी अही गाम केर
पैर मे हमरा छान।
भ' उतान जे घरनी घूमओ
तकरा भेटओ मान।।
सातो बहिन रही हिलमिलके
बूझी सभ केर हाल।
कोन एहन हम छैत क' देलिय'
बान्ह बनेल' काल।।
एके घर मे बैसल बैसल
मोन जखन अकुलाय।
चली बहिन सं भेंट करैले
बान्ह छान भसिआय।।
हम सब यदि रहब' सोतंत्र
भेटतौ सदिखन लाभ।
आकुल हिय जौं उग्र भेलौ
नहि मानब' कोनो दबाव।।
छोडि दैह स्वच्छन्द त' हमरा
सतत हीत बनि रहबौ।
नैहर केर सब तीत मीठ के
पाबि मगन सब सहबौ।।

– शम्भुनाथ मिश्र
गाम-आसी, पो.-बिरौल, दरभंगा-847203
मो.: 9801138348

लागौ नै माया

भासि गेलै चास वास, रहलै कोनो ने आस
करबै कोने प्रयास, बाट नै सूझय।
बढय पानि दिन दिन, बीति गेलै तीन दिन
ताकि रहल वसन हीन, कियो ने पूछय।।
द' गेलै गच्चा, जे छीन लेलक बच्चा
बनि गेलै चभच्चा, से डीह कोन काजक।
उड़ि रहल ऊपर, ओ ताकय ने भूपर
साहस कथी पर, लानत एहि राजक।।
माता कहाबय, ई सब दिन सहाबय
नोर आंखिक बहाबय कोशी आ कमला।
हीया ने आब थीर, बढ़लै जन मनक पीड़
आब की छातीक चीर देखायत अभगला।।
कएलहुं गोहारि तोर, सूखि गेल आंखि नोर
कानलहुं पकड़ि गोर अएलहु नै दाया।
कह तोहर कोन आश, जीविते बनल लाश
भेलौ सब क्यो हताश लागौ नै माया?

कृत्रिम अन्हार

सरिपहुं संसार बनि गेल
आब एकटा गाम
एहि ग्लोबल गामकेर
एकटा कोनचरमे छथि
बड्ड पुरान खोपड़ी
खोपड़ीमे बैसल छथि
एकटा अमा माय
पछिला सहस्त्रो बरखक
स्मृतिकें जोगओने।

स्मरण अबैत रहैत छन्हि
अपनहि आंगनक धी-बेटी
जे सभदिन बनले रहल
एहि ग्लोबल गामकेर
चारित्रक आदर्श।

मोन पड़ैत छन्हि
अपन संतान सभक पैरुख
जे झरकाक' मारि देने छल
मेटा' देने छल
विदेह राजवंश,
एकटा अबलाक 'शील' लेल
रोपल गेल छल
राजतंत्रक पुरान डीहपर
प्रजातंत्रक नबका गाछ!

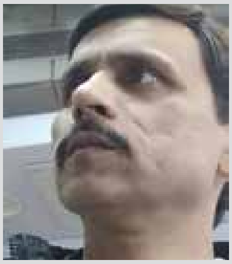

– नीरज कुमार 'नीरज'

जखन जखन पसरलैक
ग्लोबल गाममे अन्हार
अमा माइयक आंगनसं
बहराइते रहलैक
नव नव इजोत मुदा...
आब मिझा गेलैक
मिझा देल गेलैक
प्रगतिक सभ स्रोत।

अमा माइयक
अपनहि आंगनकेर लोक
भ' गेलैक अछि बौक
तें हुनकर आंगनक
समस्त ऊंच-नीचमे
सभटा आफत-विपैतमे
चलैत छथि पछवरिया
साहेबक, साहेबी निधोख।

साले-साल
अबैत छन्हि उजाड़य
अमा माइयक आंगन
कहियो कमला कहियो कोसी
धिया-पूता सभटा
बनि गेलैन परदेशी
परदेशी केर चललैक अछि
कहियो ठेसी?

अमा माइक पूता-धिया
तकतै खोपड़ी दिस जहिया
नहि बनल रहतै बहिया
घर ई पुबरिया
नहि बहतै एहि आंगनमे
कमला कोसीक धार
कथी लेल फेर अऔतै
चमकी बोखार
जिबिते जरायल जेता
शेल्टर होम बला सरकार
तखन फेरसं भ्रष्ट प्रजातंत्रक
उज्जर डीह पर लहलहाएत
लोकतंत्रक नवीन संसार!!

संपर्क : डब्ल्यूजेड-434, ग्राउण्ड फ्लोर,
नरायणा गांव, नई दिल्ली-110028
मो.. 995335747

सहरजमीन पर सहसह सांखर

– मैथिल प्रशान्त

कोसी आ कमला मैया
फेर नांघि देलीह अछि लछुमन रेखा
मुदा, एहन विकट परिस्थितिमे
के आएल अछि
माछ मारबाक लेल,
भासैत छहरिक छातीपर
के लगौने अछि घनी
के बिछबापर बिर्त्त अछि
जीवनक चेन्हासी सभ

ई की उड़ि रहल अछि
चारक उपरसं
हेलिकॉप्टर कि गिद्ध

आकि
कोनो राजाक पुष्पक विमान
राजनीतिक पर्यटनपर निकलल अछि
जानि ने के अछि
जे डारिसं खसल
पानिमे छताइत खोंताकें
हथोरबाक लेल अपस्यांत अछि

डूमि रहल अछि
हमर गाम, हमर खेत, हमर खरिहान
हमर आंगन-असोरा-चिनबार
डूमि रहल अछि
हर लदहा खुरपी कोदारि
आ
के खेला रहल अछि फू
जानि ने ओ के अछि
जकरा चानि पर हमरा करबाक अछि थू
के रभसि रहल अछि
के क' रहल अछि कन्नारोहटिक माझ कीर्तन
के छेकने अछि चुकरैत पररु
के बाढ़ि आ रौदीकें छान्ह लगा, दूहि
रहल अछि लाल बून्न दूध
के तकैत अछि आफदमे अवसरि
अछि के ओ अफ्फद

टहलि रहल अछि हमरे अहांमे सन्हिएल
कैकटा दुदुसिआ
भग्गल कछने दुखियाक
मोनमे रखने बिसानि स्वार्थक माहुर

सावधान
बिहरिमे ढुकि गेलैक अछि पानि
सहर जमीन पर
सहसह करैत अछि "करैत" सांखर।

संपर्क : दुर्गौली, बेनीपट्टी,
मधुबनी (बिहार), मो. 9473071008

रोकलह किएक प्रवाह

– अमरनाथ झा

धारा छल प्रच्छन्न
बहैत रही उन्मुक्त
तैं कहाबी धार, धारै छलहुं जगती
अपना संगे आनै छलहुं
किसिम किसिम के खनिज, पोषक तत्व
तैं उपजाउ धरती।

मानलहुं कने दिक्कत
बाढ़िसं दहार सं
रास्ता पएराक धोखार सं
मुदा, फैदा कतेक!
भरै छल पोखरि-झांखड़ि
रंग-विरंगक माछ-काछु सं
विहरै छल गोहि, सोंस, नकार
जलचर अनेक
धरती होथि उर्वरा, रौदीक डरो नहिं
आ बाढ़ि, आएल पानि गेल पानि
जहिना आबय तहिना बिलाय।

मुदा, दुर्मतिया घेरलकह तोरा
आ, छेकि देलह धारा
छ'हर आ बैरेज सं बन्हलह हमरा
हौ! 'कमला' कतहु बान्हल रहथि!
'कौशिकी' जहल मे टांगल रहथि!
'वागमती' कोना घेराथि?
'नारायणी' कतौ डेराथि?
एक घर त' डाइनियों बकसैये
पतितपावनियों के त' छोड़ितह
स्वर्ग स' धरापर आएल भागीरथी
ओकरो जान त' बकसितह।

हौ, अपने मर्यादा मे रहह ने
तखन सिखबिहह हमरा
मर्यादा केर पाठ, सोझ चलैक बाट
बलमोक्कनि करबहक, टुटतै मर्यादा
छिड़ियेतै बाट, होयतै प्रलय
देखलहक ने रौद्ररूप
कुसहाक स्वरूप।

हौ! हम सभ हिमालयक बेटी
ओकरो सम्मान त' दैतह
डोलै छह हिमगिरि कतेक
आबहु त' चेतह।
आब लएह अगबे बालु
भर' ल जाइये हम्मर तालु
भेल जाइये बान्ह स' खत्ते ऊंच
धारक पेट ऊपर आ
गामक बाध नींच।

(बाढ़िक विभीषिका पर 4/9/15 के
लिखल कविता अकानल, डेग सं)

आत्मसंतुष्टि हेतु लिखैत छी

✍ आभा झा

आचार्य वामन अपन ग्रंथ काव्यालंकार सूत्रवृति मे कवित्व प्रतिभा कें जन्मजात गुण मानि कहैत छथि- ''कवित्वं बीजं प्रतिभानां कवित्वस्य बीजम्।''

हुनकर कहब छन्हि जे प्रतिभा कवित्वक बीया (बीज) थिक, जे जन्म-जन्मांतर के संस्कार सं शक्ति के रूप मे कोनो कवि मे विद्यमान होइत अछि।

जहां धरि अपना विषय मे कही त' सफल होइ, विफल होइ, हर्ष होअए, विषाद होअए, जखन-जखन अन्तर्हृदय मे भावनाक प्रवाह उद्वेलित होइत अछि, हम रचैत छी कविता। कखनौ हास्य व्यंग्यक कविता रचि मनोविनोद करैत सामाजिक कुरीति पर तीक्ष्ण प्रहार करैत छी कखनौ कोनो दु:खियाक करूण वेदना जानि आहत होइत अपन संवेदना प्रकट क' ओकर नोर पोछबाक प्रयास करैत छी। कखनौ कोनो गरीब-गुरबाक अन्तर्व्यथा कें मर्मस्पर्शी काव्य के रूप मे व्यक्त क' समाज मे जागरूकता अनबाक प्रयास करैत छी, कौखन कोनो आततायी प्रवृत्तिक लोक द्वारा कएल गेल अत्याचार पर धिक-धिक्कार करैत वीभत्स रसक रचना करैत लिखैत छी-

अधमो सं अछि अधम जीव
ई चाम मनुक्खक ओढ़य,
गिद्ध नोचै अछि मृतक...
नीच ई जीविते कन्या नोचए।

धिक-धिक्कार! एकर जिनगी,
धरती परहक अछि भार
घोर अधर्मी रे पापी!
छौ चूकि रहल संसार!

हे विधना! की रचल एहन
अत्याचारी दानव कें...
भ्रष्ट, घृणित, निकृष्ट...
करय लज्जित मानव कें।

एहि तरहें समाज मे व्याप्त कतेक तरहक समस्या पर नजरि दैत ओकर निदान तकबाक प्रयास सेहो करैत छी, संगहि ककरो पीठ ठोकि सफलताक उच्चतम शिखर पर चढ़वाक हेतु अभिप्रेरित सेहो करैत छी। कखनो काल व्यर्थक 'अहं' कें भष्मीभूत करबा हेतु वास्तविकताक ऐना सेहो देखबैत छी।

कहल गेल छथि जे साहित्य समाजक ऐना थिक, प्रतिबिंब थिक आ समाजक मार्गदर्शक सेहो थिक। कोनो राष्ट्र आ सभ्यताक जानकारी ओकर साहित्य सं प्राप्त होइत अछि। परिवर्तन प्रकृतिक नियम थिक। साहित्यकार समाज मे व्याप्त कुरीति, विसंगति, विकृति असमानता, अभाव आदि के विषय मे लिखि जनमानस कें जागरूक बना ओकर विचारधारा मे परिवर्तन अनबाक कार्य करैत अछि। कोनो लेखक देखैत छथि, अनुभव करैत छथि तथा चिंतन आ विश्लेषण करैत अपन भाव प्रकट करैत छथि। आइ सं एक सय वर्ष पूर्व मे जाइ त' बुझबा मे आओत जे मात्र किछु सम्भ्रांत परिवारक स्त्री शिक्षित होइत छलीह। स्त्री कें चुलहा बर्तन आ भनसाघरक स्वामिनी मात्र मानल जाइत छलनि। आजुक परिदृश्य मे देखी त' सबहक बेटी पुतोहु पढ़ि-लिखी, पैघ पद पर आसीन छथि। एकमात्र शिक्षा क्षेत्र मे नहि अपितु, खेल-कूद, गीत-संगीत, नृत्य-नाटक, पर्वतारोहण इत्यादि अनेकानेक विधा मे अपन वर्चस्व स्थापित क' चुकल छथि। कोनो समाज मे लेखकक सशक्त लेखनीक प्रभाव ओहिठामक किछु बुद्धिजीवी वर्ग पर पड़ैत छन्हि। हुनका लोकनिक व्यवहार मे परिवर्तन के देखि अनुकरण करैत साधारण लोकक विचार मे शनैः शनैः बदलाव होएब स्वाभाविक होइछ।

वर्तमान समाजक परिप्रेक्ष्य मे देखी त' लिंग भेद एकटा विकट समस्या थिक। हमरा लोकनि एक्खनहुं संकीर्णताक जाल मे ओझराएल थिकहुं। एक दिस बेटी वायुयान उड़बैत अछि, दोसर दिस कोखि मे ओकर हत्या। कहैत छी जे हमरा लोकनिक हृदय विशाल अछि, मुदा आइयो बेटाक प्रति व्यामोह घेरने अछि। एहन स्थिति मे हमर कलम कहि उठैत

मूल रूपसं साहित्यसेवी। समाजशास्त्रमे प्रतिष्ठा, हिंदी आ मैथिलीमे समान लेखन, मैथिली-भोजपुरी अकादमी द्वारा आयोजित गणतंत्र दिवस कवि सम्मेलनमे कविता पाठ, मैथिली पत्रिका 'कलश' केर संपादक।

संपर्क : *मकान नं. 186, गोल्डन जुबली अपार्टमेंट, एसएफएस फ्लैट, सेक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली-110085*
मो.: *7982349106,* ***ईमेल:*** *abha.jha186@gmail.com*

अछि–

''कुलकेर मान बढ़ौती कन्या जेना जनक नंदिनी सिया

अभियंता, अभिनेत्री, विदुषी बनती वैद्य अहींक धिया

युद्ध विमानक चालक बनती, चंद्रलोक सं चढ़ि औतीह

बंदित अनुरंजित भ' सहजहिं नवल सृजन जग मे करतीह

जीर्ण–शीर्ण दुर्भाव दूर क' सींचू नव संस्कार कें

लिंग भेद कें दोष मेटा क' देखा दियौ संसार कें''

दोसर दिस देखैत छी त' दहेज रूपी दानव एखन धरि समाज कें अस्त व्यस्त कएने अछि।

दहेज प्रथाक दुष्परिणाम देखि आकुल भ' आजुक युवक गण सं निवेदन करैत हम लिखबा लेल विवश होइत छी–

''अपने स्वतंत्रताक तोड़लहुं अछि बेड़ी
कन्याक दुर्दशा देखि करी देरी,
कोना झहरि रहल ललनाक नैना
ई नोरक धार देखू!
हे मिथिलाक नव निर्माता!
ई उजड़ल समाज देखू!'

समाज मे पसरल असंतोष, अव्यवस्था, अराजकता देखि अन्तर्मन मे हिलकोर उठय लगैत अछि, जकरा अभिव्यक्त करबा लेल हम उद्यत होइत छी।

देखल गेल अछि जे लेखक अपन लेखन कौशल सं समाजक वर्तमान परिस्थिति कें सोझा राखि ओकर भविष्यक रूपरेखा तय करैत छथि। जखन–जखन राष्ट्र कठिन समस्या सं घेरल रहैत अछि तखन तखन लेखक अपन सशक्त लेखन सं समाज आ राष्ट्रक पुनरुत्थान करैत छथि। कनेक पाछू मुड़ि क' देखी त' सनातन धर्म मे सदा से शैव आ वैष्णव सम्प्रदायक मध्य संघर्ष होइत आबि रहल छल। ओहि समय मे तुलसी दास सन महान लेखकक प्रादुर्भाव भेल आ 'रामचरितमानस' नामक ग्रंथक निर्माण क' दुनू सम्प्रदायक बीच एकटा मजगूत चचरी बना देलन्हि, तत्पश्चात् दुहुक मध्यक वैर भाव निर्मूल नष्ट भ' गेल। एकताक सूत्र मे बान्हल शैव आ वैष्णव शिव तथा विष्णुक प्रति समानभाव रखैत श्रद्धा आ विश्वासक संग पूजन–ध्यान करय लगलाह। तुलसीदास जी अनेक तरहक ग्रंथक रचना क' सफल गारहस्थ्य जीवनक पाठ पढ़बैत। भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, त्याग आ सदाचारक शिक्षा दैत बालक सं बृद्ध धरिक प्रेरणास्रोत बनल रहलाह।

भारतक स्वतंत्रता आन्दोलन मे प्रेमचंद, निराला, दिनकर, भारतेंदु हरिश्चन्द्र सनक महान लेखक अपन ओजपूर्ण लेखन सं जन–जन मे देशभक्तिक भाव प्रदान करैत नित नवल ऊर्जा भरैत छलाह। जतय मुंशी प्रेमचंदक हंस नामक पत्रिका अंग्रेजक विरुद्ध विद्रोह करबा लेल प्रोत्साहित करैत सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा साहित्यिक क्षेत्रक रूढ़िगत संस्कार के तोड़ि कुंठित मर्यादाक विरोध करैत रहलाह ओतहि राष्ट्रकवि दिनकर स्वतंत्रताक पूर्व विद्रोही कवि के रूप मे जानल गेलाह हुनक कविता मे ओज, विद्रोह आक्रोश आ क्रांतिक हेतु ललकार रहैत छल। साहित्यक पितामह भारतेंदु हरिश्चन्द्र देशक समस्या के अपन नाटक, प्रहसन आ निबंधक विषय बनबैत पुरान प्रवृति के परिष्कार क' नवीनताक समावेश कयने रहथि।

समाज मे पसरल असंतोष, अव्यवस्था, अराजकता देखि अन्तर्मन मे हिलकोर उठय लगैत अछि, जकरा अभिव्यक्त करबा लेल हम उद्यत होइत छी। देखल गेल अछि जे लेखक अपन लेखन कौशल सं समाजक वर्तमान परिस्थिति कें सोझा राखि ओकर भविष्यक रूपरेखा तय करैत छथि। जखन–जखन राष्ट्र कठिन समस्या सं घेरल रहैत अछि तखन तखन लेखक अपन सशक्त लेखन सं समाज आ राष्ट्रक पुनरुत्थान करैत छथि।

आब कनेक मैथिली साहित्यक लेखन दिस नजरि दी त' समस्त मैथिल के ''देसिल बयना सब जन मिट्ठा' के सूत्र देनिहार महाकवि विद्यापति अपन वैदुष्य एवं दूरदर्शिता सं ओइनवार राजवंशक राजा लोकनि कें मार्गदर्शन करैत रहलाह। हास्य सम्राट हरिमोहन झा अपन सहज विनोदवृति द्वारा हास्य व्यंग्यक सृष्टि क' समाजक विसंगति सभ पर तीक्ष्ण प्रहार करैत रहलाह। जे काज उपदेश आ निंदा, भर्त्सना सं नहि होइछ ओ हास्य व्यंग्यक माध्यम सं भ' जाइछ। जनकवि यात्री जीक कलम सतत मानवीय पीड़ा आ करुणा सं भीजल रहल।

एकटा आदर्श समाजक निर्माण मे अपन आदर्श लेखक लोकनिक भूमिका देखि अभिप्रेरित होइत किछु लिखबा हेतु हमरो मन आतुर होइत अछि मुदा मोन पड़ैत अछि एकटा खिस्सा – लंका पर विजय प्राप्ति हेतु रामक बानरी सेना समुद्र पर विशाल सेतुक निर्माण करैत रहए, ताहि क्षण एकटा लुक्खी (गिलहरी) अपन मुंह मे छोट–छोट आंकर–पाथर उठा–उठा क' ओहि समुद्र मे फेकि रामक काज मे सहयोग क' रहल छल। भगवान रामक नजरि ओहि लुक्खीक सेवा भाव पर पड़लन्हिं आ भावुक होइत ओकर पीठ ठोकि अपन आगुरक छाप छोड़ि देलथिन्ह। कहबाक तात्पर्य ई जे हमरो भूमिका वैह लुक्खीक समान मानल जाय। अपन शब्द रूपी मोती के भावनाक ताग मे गाँथि कविता रूपी माला बनबैत छी आ तकरा अपन प्रिय पाठक आ श्रोताक मध्य अर्पित करैत आह्लादित होइत छी। संगहिं लिखबा मे आत्मसंतुष्टि सेहो भेटैत अछि। ईश्वर सं एतेक प्रार्थना अछि जे सतत् साहित्यानुरागी बनल जीवनक अंतिम क्षण धरि अपन लेखनीक प्रवाह सं समाज के सींचैत रही।

जय मिथिला। जय मैथिली। ■

प्राथमिक शिक्षामे मैथिली : दिल्ली सरकारक घोषणा

प्राथमिक शिक्षा मे मैथिली के जोड़बक मांग बिहार सरकार सं कतेक दशक सं लगातार भ' रहल अछि। इम्हर बड रास युवा के ध्यान मैथिली भाषा पढ़ब दिस गेल अछि। एही विषय कें राखि के भारतीय संघ लोकसेवा आयोग (यूपीएससी) द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा द' रहल अछि आ सफल सेहो भ' रहल अछि। मुदा एही दिस बिहार सरकार के बजाय दिल्ली सरकार ध्यान देलक आ जुलाई के मध्य मे घोषणा केलक जे दिल्ली सरकार के स्कूल मे मैथिली के पढाय होयत आ सिविल सेवा के तैयारी करैक लेल मैथिली एकेडमीक स्थापना केल जायत। एही फैसला के जबरदस्त स्वागत संपूर्ण मिथिला संग दिल्ली मे रहय बला मिथिला भाषी केलक। अहां नीक काज करू वा बेजाय, प्रश्न ते उठबे करत। तहिना दिल्ली मे ई विधानसभा के चुनावी वर्ष अछि, तें लोक प्रश्न सरकार के मंशा पर ते उठैबे केलक, संगे एकर कार्यान्वन दिस सेहो चिंतित भेल। किछु लोक बिहार सरकार से सेहो मांग केलक आ कहलक जे काज बिहार सरकार नै क' सकल से काज दिल्ली सरकार क' देलक। सोशल मीडिया पर दिल्ली सरकार के बधाई संग उलाहनो देल गेल। मैथिली, हिन्दी आ अंगरेजी भाषा मे फेसबुक पर भेल विमर्शक अंश बिन संपादित केने हुबहू प्रकाशित क' रहल छी।

-संपादक

विमर्श-एक

मनीष सिसोदिया

July 15 / 3:42 PM

Delhi Govt's Maithili Bhojpuri academy takes several decisions in a meeting chaired by Dy CM Manish Sisodia

1) Maithili & Bhojpuri in Delhi's schools for 8th to 12th class as an optional language subject, just like Punjabi & Urdu.

2) Delhi govt's Maithili and Bhojpuri Academy will run Civil Services examination coaching centres for students who choose Maithili/Bhojpuri as a subject.

3) Delhi Govt will reach out to #CDAC for a computer font for Maithili language, which is not present at the moment.

4) There were no awards for those who contribute substantially to Maithili Bhojpuri culture as a journalist or as a literary artistA Delhi govt will honor these achievers with 12 awards, for a 'Lifetime Achievement Award' for both languages of INR 2.5 lakhs each.

5) A 5 day Cultural Heritage festival at Central Park in November, by Maithili & Bhojpuri artists.

टिप्पणी

विनीत उत्पलः आप बोलें या ना बोलें, मगर यह सच है कि मित्र नीरज पाठक, वरिष्ठ मित्र और दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया जी और दिल्ली सरकार ने ऐसा काम कर दिया, जो सराहनीय और प्रशंसनीय है। मैथिल समाज ऋणी रहेगा। हम सभी लोग मिलकर नीरज जी के कामों मे हर तरह से सहयोग करें।

प्रवीण कुमार चौधरीः निस्सन्देह जहिया सं नीरज पाठक मैथिली भोजपुरी अकादमीक नेतृत्व सम्हारलनि, ओ बहुत रास महत्वपूर्ण कार्य करेबाक दिशा मे डेग बढौलनि। काफी सक्रियता सं भारतक राजधानी क्षेत्र मे मैथिली आ भोजपुरी भाषाक गरिमा कें आगू लय गेलाह। एहि सं पहिने अकादमी एतेक सक्रिय आ स्फूरणा कहियो नहि देखेने छल।

सुमन ठाकुर बिहारीः सिर्फ घोषणा बन कर न रहे कागजी करवाई भी होनी चाहिए।

प्रवीण झाः 'मन के ईश' मनीष जी, सर्वप्रथम राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र मे वर्षो से उपेक्षित संविधान की आठवीं अनुसूची मे शामिल मैथिली विषय को शिक्षा की मुख्य धारा मे जोड़ने के लिए आपके द्वारा की गई घोषणाओं के लिए समस्त मिथिलावासी की ओर से हृदय से आभार।

अब कुछ काम की बातेंः

आपकी ब्रीफिंग सुनकर लगा मानो आप नेताओं को आपके सिपहसालारों द्वारा आधी-अधूरी या फिर कहें कि बिना

सिर-पैर की जानकारी प्रदान कर बरगला दिया जाता है। आपको याद होगा कि गलत सूचना के आधार पर पिछले दिनों केन्द्र सरकार के तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने मैथिली की अपनी लिपि नहीं होने की बात कह दी और असलियत सामने आने पर उनकी भद्द पिट गई।

अब आप गलत जानकारी के आधार पर अपनी ब्रीफिंग मे मिथिलाक्षर का कम्प्यूटर फॉन्ट नहीं होने का राग अलाप गये। मैं जानता हूं, इसमे आपका कोई दोष नहीं है। आपको जैसी सूचना अपने अधीनस्थ लोगों से मिलेगी आपका बयान उसी पर आधारित होगा।

मान्यवर,

आपकी जानकारी मे दे दूं कि मिथिलाक्षर साक्षरता अभियान के माध्यम से विलुप्तप्राय हो चुकी मिथिला की धरोहर लिपि मिथिलाक्षर की साक्षरता दर को बढाने के लिए सोशल मीडिया पर मिथिला विभूति पंडित अजय नाथ झा 'शास्त्री' के संरक्षण मे निःशुल्क पाठशाला लगाने से देश-विदेश के हजारों की तादाद मे लोग ना सिर्फ मिथिलाक्षर मे प्रवीण हुए हैं बल्कि मिथिलाक्षर मे साक्षर होकर आगे की कड़ी बनाकर इसकी साक्षरता दर को बढाने मे निःस्वार्थ भाव से लगे हुए हैं।

ठीक उसी प्रकार, मिथिलाक्षर का कम्प्यूटर फॉन्ट दरभंगा निवासी आदरणीय विनय झा जी द्वारा वर्ष 2003 मे ही बनाया जा चुका है और मौजूदा प्रतिस्पर्धा के युग मे अन्य भाषाओं के फॉन्ट्स के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए वे नित नै प्रयोग करने मे जुटे हैं। अच्छा हो कि विनय झाजी द्वारा तैयार मिथिलाक्षर कम्प्यूटर फॉन्ट का स्वयं के स्तर से अवलोकन कर इसे व्यवहार मे लाये जाने की दिशा मे यथोचित पहल करें।

पीताम्बर दत्त ढौंडियालः Dear Sir, My request to adopt International languages (French, German, etc.) A It will help the students for their jobs.

मुकेश झाः Yes you are right but do we have to teach foreign language on the death of our own culture and languageA International language padhaya jaye but apne personal language ke kimat par nahin.

पीताम्बर दत्त ढौंडियालः जिस देश की राष्ट्रभाषा आजतक हिन्दी नहीं, जिस देश मे हिंदी को सिर्फ राजभाषा का दर्जा प्राप्त हो, कम से कम उस देश मे यह बातें शोभा नहीं देती। अपने बच्चों को विदेशी भाषा सिखाने से उनके भविष्य के लिए रोजगार की संभावनाएं बनाई जा सकती हैं। रही बात सवबंस भाषाओं की तो लोग उनको घर पर भी सीख सकते हैं।

बसंत शर्माः I don't think regional languages should be promoted. Instead of regional language, teach English, Mandarin, Spanish so that people are ready to take the jobs in the future all around the world. Also teach some trade skills, entrepreneurship to get jobs in this changing world.

बसंत शर्माः वसुधैव कुटुंबकम्...। कूपमण्डूक बन के कुछ नहीं हासिल होने वाला। यहां यूएसए मे लोग अपने बच्चों को मंडारिन भाषा सीखा रहे हैं, क्योंकि लोग जानते हैं अगली उन्नति की दौड़ चीन मे है। मैंने मे रह के भी भारतीयों से अच्छी हिंदी बोलता, लिखता और पढ़ता हूं, मगही भी समझता हूं, और अपने बच्चों को हिंदी सिखाऊंगा, मगर विद्यालयों मे हिंदी सीखने के लिए नहीं बोलूंगा।

श्रीवास्तव शक्तिः श्रवामते। When we are talking about single election. Single pension etc to bring uniformity. Ease in life. These things will make life more complicated. We already have so many caste, colours, languages in our country to deal with. We should try n* make life of citizen & next gen simpler & easy to live. These jokers have ruined the country. Be it anyone. All are same.

राजू कुमार झाः Nice initiatives taken by Delhi government before few months remaining of assembly elections.

सीएमए तस्लीम अहमदः Education is most powerfull tool that can change world. Salute you sir moving forward towards nation development.

नवीन झाः Sir apne bahut bahut dhanyavad k patra chhi...bahut sarahniye aur samajik nirnay aichh... Thank you so much sir...Manish Sisodia ji aur agraj Neeraj pathak ji..

गणेश कुमार झाः This encouraging step by the Delhi Government merits all praise. Simultaneously, this is a slap on shameless cheeks of Kushashan Babu.

के.एम. शशिधरन नायरः It's just appeasement politics. AAP came into existence to be a party with a difference! But now it has become just another political party practicing petty appeasement politics. Delhi has many linguistic groups and it seems AAP is bothered about only one group and is not worried about the 'vote' of other linguistic groups.

संत सिंहः Make student to learn hindi and better english than wasting time on useless for nothing. Give facilities to learn foreign language chinese japanese french english Dutch. Better to find

job easily.

पी. राज सिंहः Maithili is written in devanagari font these days for which there are already many fonts and applications. Do you mean to develop mithilakshar font which is archaic now .

Jagannath Kanchan All targeted get vote bank...will not succeed.. Delhi is belongs to all Indian

Sharfe Alam Sir School m Urdu Techar Nahi h.

विमर्श – दू

पोस्ट : मनीष सिसोदिया

(दिल्लीक उपमुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदियाक मैथिली-भोजपुरी भाषा पर भेल फैसला पर जारी केल गेल विडियो पर आयल कमेंट्स)

July 15 / 9:00 PM

मनोज कुमारः French, German, Japanese etc. Ke liye effort lagate, u r* also doing politics.

रंजय सिंहः महोदय मैथिली से ज्यादे भोजपुरी बोली जाती है उसको भो तवज्जो दीजिये मैथिली अवधी मगही भोजपुरी हिंदी देवनागरी की उपभाषा है जो की भारत मे 15 करोड़ से ऊपर बोली जाती है और पूरे विश्व मे 25 करोड़ लगभग बोली जाती है दिल्ली मे भोजपुरी भाषी 35 से ऊपर है थोड़ा इस का भी संज्ञान लें।

मयंक गुप्ता : There is no future of maithili language, what is the use. Better u can avail them some foreign language.

गगन रिस्मः और ये मैथिलि पढ़ कर सारी उम्र ये बच्चे बतियाएंगे किस से? अपने ही सह-पाठियों को ढूंढते रहेंगे फेसबुक ट्विटर पर कि कोई तो हो जिस से मैथिलि मे बात कर सकें, कारण कि आपके इलावा और कही तो ये पढाई होती नहीं।

निलेश शर्माः Je baat....English is must for scientific career advancement, local language is useless in globalisation era.

गगन रिस्मः ts not being about 'useless' in the money & making sense. A local languages should be preserved but not at the cost of careers, there should be whole ecosystem for propagation and flourishing of any language. A eg. if government makes provision of teaching maithili/other local langauges in all schools of the country, take other non&upsc exams as well too in those languages, make provisions of scientific literature availalble in local langauges, then not only it will create job opportunities for teachers in those languages but also ensure that these languages will not fade in this globalization era, which is what is not happening. A all these efforts mentioned by Mr. Sisodia are isolated efforts only to preserve this langauge, which i am afraid may not succeed..

अमित गुप्ताः A long journey starts with a single step. At least a government has taken few steps to give the language some acceptance and relevanceA You are right that Sanskrit has not been of any use to us as a language but still it helps us to at least read the Sanskrit shlokas. Sanskrit has been our heritage and it's little understanding and ability to at least read it still is a good thing to go about. Like wise lots of people are really passionate about their local language and it's promotion should be welcomed. There is no harm in having more choices to avail.

स्वाति कुमारः English ki padhai hi sahi Kara lo. Har exam me English poochte hai, aur sarkaari school ki teachers Ko English nahi Aati. Bhugat bhogi... Still suffuring with zero basics.

टी. आर. हरीशः Tamil..telugu.. kannad... malayalam bhi honi chahiye....sirf maithli kyo

गोविन्द कुमार शर्माः 1/3 of India population speaks Maithili bhojpuri. Finally recognised.

आकाश यादवः Votebank to baki language ka b hi... Delhi to cosmopolitan h.

विमर्श – तीन

पोस्ट : नीरज पाठक

July 15 / 3:57 PM

दिल्ली के समस्त मैथिली और भोजपुरी भाषी के दिस सं अहांके आ दिल्ली सरकार के एहि ऐतिहासिक निर्णय लेल करेजक पोर पोर सं आभार।

Thank you sir,

I on my personal behalf and, also on the behalf of Maithili and Bhojpuri speaking people of Delhi and NCR thank you and Delhi Government for the inner core of heart. Thanks again.....

सबिता झा 'सोनी': बहुत बहुत रास बधाई। अहां सभहक एहि निस्सन कार्य हेतु ह्रदय संओ आभार व्यक्त करैत छी आदरणीय मनीष शिशोदिया जी व आदरणीय नीरजा पाठक।

भावेश नंदन झाः अहि अनुपम, महत्वपूर्ण आ प्रशंसनीय निर्णय लेल अहांके बड्ड रास बधाई, धन्यवाद आ शुभकामना।

किसलय कृष्णः मैथिली भाषाक लेल मित्र नीरज पाठकक ई योगदान अतुल्य अछि। मैथिली भाषी समाज दिससं आभार नीरज भाय सहित दिल्ली सरकारकें।

प्रभात झा: Great step toward conservation of our dissapearing aura, proud to be a mathillian.

रजनीश झा: ये केवल घोषणा है, अब जब कार्यकाल समाप्त होने लगा है, तो ऐसे घोषणा तो होता रहेगा।

मुख्तार आलम: अपनेक प्रयास सफल भेल। ई एकटा अद्वितीय उपलब्धि अछि मैथिली लेल। अपने ई साबित कयलिये जे बजे नहि करै छिये। बधाई संग शुभकामना।

निवेदिता मिश्र झा: हम सब माननीय सिसोदिया जी के संग संग अहांके ह्रदय से आभार व्यक्त करैत छी, अहांके कुशल नेतृत्व, मैंथिली के प्रति अगाध प्रेम, आ कुशल कार्यप्रणाली ई गौरवशाली फ़ैसला के नींव मे रहल।

विमर्श–चारि

पोस्ट : शेफालिका वर्मा

July 15 / 5:14 PM

आय हमर सभक मैथिली भोजपुरी अकादमी के संचालन समिति (गवर्निंग बडी) के मीटिंग दिल्ली सचिवालय मे उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया जी के संग भेल। कुछेक छोड़ि प्रायः सब मेम्बर उपस्थित रहैथ। नीरज पाठक जी मैथिली भोजपुरीक उत्कर्ष लेल जे विचार राखलथि, करीब सभक स्वीकृति मंत्री जी देलनि। आ जे सदस्य अपन विचार सुझौलनि हुनका सेहो आदर के साथ स्वीकृति देलनि। कहवाक तात्पर्य मैथिलीक प्रति मंत्री जीक सकारात्मक व्यवहार देखि मन खुश भ' गेल संगे नीरज जीक कार्यकुशलता। आब नीरज जी अकादमी परिवार संग जतेक जल्दी काज करवा लैत आ फेर नव नव बाट मैथिली भोजपुरी लेल। खुशी सं दिल्लीक आकास बरसि गेल। अशेष साधुवाद।

संजीव झा: बहुत खुशीक समाचार। आब मैथिली आ भोजपुरी के किताब सभ छपल कि नै सेहो ध्यान दिय पड़त।

हितनाथ झा: समस्त आदरणीय मैथिली सेवी गवर्निंग बॉडीक सदस्य, आयुष्मान यशस्वी उपाध्यक्ष मैथिली-भोजपुरी अकादमी श्री नीरज पाठकजी संग-संग दिल्ली सरकारकें हार्दिक साधुबाद।

गांधी मिश्र 'गगन': दिल्ली सरकार के लोकप्रिय मंत्री सिसोदिया जी के बहुत बहुत आभार संग अपने लोकनि के बधाई। एकर अनुसरण बिहार सरकार के सेहो करबाक चाही दीदी। काश इहो सरकार एहन करीते।

नवीन झा: E samachar samast pravasi maithil lokain k lel k subh chhiyainh...ma maithili ma janki k prati es bahut paigh samman chhainh...Jai mithila jai maithili.

निवेदिता मिश्र झा: दीदी गौरवान्वित छी, आह्लादित कि अहां के छत्रछाया मे मैथिली अपन ऊंचाई ल' रहल अछि।

विमर्श–पांचम

पोस्ट : कैलाश कुमार मिश्र

मैथिली आ भोजपुरी दिल्लीक स्कूल मे दिल्ली सरकार द्वारा मैथिली आ भोजपुरी दुनू भाषाक पढ़ाई ऐच्छिक विषयक रूप मे 8 वीं सं 12 वीं कक्षा धरि करबाक आधिकारिक घोषणा मैथिली भोजपुरी अकादमिक चेयरमैन आ दिल्लीक उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी द्वारा मिडियाक समक्ष श्री नीरज पाठकक उपस्थिति मे भेल। जय मैथिली, जय भोजपुरी।

निराला बिदेशिया: सबको शुभकामना। बधाई। बिहार मे कब होगा ऐसा। बिहार मे उठे बात अब।

अनिल मिश्र: बिहार की सरकार अंधी और गूंगी होने के साथ साथ बहरी भी है, जिसे न कुछ दिखाई देता है और न ही कुछ सुनाई देता है।

विजय चन्द्र झा: बहुत बहुत बधाई उप मुख्य मंत्री जी के आ प्रतिनिधि मंडल कें।

शशि भूषण झा नागदह: आशान्वित छी। बस चुनावी घोषणा नहि होय तं! जय मिथिला जय मैथिल जय मिथिलाक्षर लिपिण्णमिथिलाक्षर फाऊंट तं आदरणीय श्री विनय झा जी द्वारा सन २००३ सं बनल अछि तं कियैक ने अहि फाऊंट कें सभ मैथिल विद्वजन मान्यता दे सभ मैथिल एकर ऊपयोग करी। समय आ अर्थ दुनू केर बचत हैत!मिथिलाक्षर साक्षरता अभियान अहि फाऊंट कें अक्षरशः समर्थन करैत अछि। सादर...

अभय कुमार: आप सबो का भगीरथ प्रयास दृष्टिगोचर हो रहा है,इस प्रयास मे तुमहारी भागीदारी हम सभी को गौरवान्वित कर राही है।

ब्रहमानंद झा: एहि श्लोगन संगहिं काल्हि केंद्रीय सचिवालय मेट्रो स्टेशन 4 नम्बर गेट सामने रेल भवन पांछा पार्क मे मीटिंग केने छलहुं, यैह बेनर के तहत, बधाई आम आदमी पार्टी के दैत छी, संगहिं शुभकामना। श्री विनय झा जी के फ्रोन्ट सं बनल अछि।

अछिजल इंडिया: बधाई तमाम मैथिल भोजपुरी भाषी के आ आभार दिल्ली सरकार के आ नीरज पाठक जी के।

गणपति झा: Positive step by Delhi Govt., thanks....for including maithili & Bhojpuri as optional subject.

आदित्य प्रकाश अनोखा: दिल झूम उठल, उछाह अनघा प्रेम बा अकादमी खाति, अकादमी के अद्वितीय सदस्य लो खाति।

डॉ. पवन कुमार झा: मैथिल समाज लेल आजुक दिन अविस्मर्णीय मानल जायत। एहि एहि लेल दिल्ली सरकार के, उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी कें आ मैथिली - भोजपुरी अकादेमीक उपाध्यक्ष चि। नीरज पाठक कें बहुत बहुत आभार।

डॉ. श्रीपति सिंह: मैथिलीक पढौनी शुरू करबै लेल धन्यवाद।

आभा झा: बहुत बहुत बधाई। घोषणा शीघ्रातिशीघ्र क्रियान्वित भ' सकय ई कामना, संगहिं पाठ्यक्रम आ

पाठयपुस्तकादिक निर्धारण अवधानपूर्वक होमय आ विद्यार्थी पढ़बा लेल मैथिली चुनथि। ओना एखन त' निस्संदेह उल्लासक समय अछि,सभ गोटा कें बधाई पुनः।

मनोज कुमारः ये दिल्ली के विद्यार्थियों के साथ मजाक है, क्यों भोजपुरी या मैथिली? संस्कृत, पंजाबी होनी चाहिए जिनका बाहुल्य है दिल्ली में।

अमरनाथ मिश्रः प्रशंसनीय काज मुदा लागु कहिया सं आ पढ़ौनी कोना हेतैक।

रुनु भरद्वाजः मुदा एहि सं दिल्ली मे वापसी के उम्मीद जुनि करिहथि। मैथिल आ भोजपुरी पुरान कृतघ्न। आ जे कृतघ्न नहि से एहि बात के लेल अगिला 5 साल दिल्ली बेहाल कखनो नहि करताह। भाषा, संस्कृति, संस्कार इत्यादि विद्यालय वा विद्यालय के पाठ्यक्रम सं विकसित नहि होइत अछि ओहि के लेल समाज के जागरूक आ ईमानदार होमय पड़ैत छथि।

अजीत झाः वाह जे आई पचास साल मे नै भ' पेल ओ नीरज भाई के प्रयास आ दिल्ली के माननीय उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी के द्वारा हुआ जा रहल ऐ, लाखों लाख सुभकामना नीरज जी के।

रमण दत्त झाः देश की राजधानी दिल्ली मे हमने अपनी जोरदार उपस्थिति का एहसास दिलाया है।

अंजनी कुमार झाः एक साल बात समीक्षा करब।

आशीष झाः क्या स्कूलों मे भोजपुरी की भी पढाई होगीण्णमेरे पास जो प्रेस नोट आया है उसमे इसका जिक्र नहीं है। प्लीज मेरा संदेह दूर करने की कृपा करें।

मनीष आनंदः भोजपुरी अभी अष्टम सूचीबद्ध नहीं है। इसीलिए नहीं होगीण। ऐसा मैं समझता हूं।

कैलाश कुमार मिश्रः जब यह सूचित किया गया कि किसी भाषा को स्कूल मे पढ़ाने के लिए उस भाषा का अष्टम अनुसूची मे होना अनिवार्य नही है तो उन्होंने दोनों भाषाओं के लिए घोषणा कर दिया।

आशीष झाः मैथिली की पढाई तो 2004 से पहले होती रही है... उसका 8वीं अनुसूचि से कोई लेना देना नहीं है। यह बोर्ड और सीनेट का फैसला होता है।

राघव मिश्र सेवक मिसाअ : अगर निहित स्वार्थ के त्याग क' सब मैथिल निस्वार्थ भाव स एकजुट भ' क' सरकारक देल गेल अश्वासन पर एकजुटता स प्रयास करी त' अति उत्तम। श्री मनीष सिसोदिया आ श्री नीरज पाठक जी सुखद समाचार सुनी आशान्वित छी। बस चुनावी घोषणा नहि होय तं। जय मिथिला जय मैथिल जय मिथिलाक्षर लिपि... मिथिलाक्षर फाऊंट तं आदरणीय श्री विनय झा जी द्वारा सन 2003 सं बनल अछि तं कियैक ने अहि फाऊंट कें सभ मैथिल विद्वजन मान्यता दे सभ मैथिल एकर ऊपयोग करी। समय आ अर्थ दुनू केर बचत हैत। मिथिलाक्षर साक्षरता अभियान अहि फाऊंट कें अक्षरशः समर्थन करैत अछि!! सन 2003 सं बनल अछि मिथिलाक्षर फाऊंट http://vedicastrology.wikidot.com/mithilakshara&font...

जय मिथिलाक्षर साक्षरता अभियान। https://aksharamukha.appspot.com/#/converter

ई लिंक खोईल क' उपरका डब्बा मे देवनागरी सेलेक्ट क' कऽ देवनागरी मे लीखू। आओर नीचलका डब्बा मे ज्पतीनजं सेलेक्ट करू। उपरका लिखल देवनागरी स्वतः "मिथिलाक्षर" मे लिखा जायत। मोबाईल लेल ई विधि आसान व उपयोगी अछि।

हम मिथिलाक्षर के देवनागरी पर निर्भर नञि देखैत चाहैत छलहुं, एहि कारणें एकर प्रचार नञि क' कऽ हम विकल्प तकैत रहलहुं कियाक तंऽ हम मिथिलाक्षर के सम्पूर्ण स्वतंत्र देखऽ चाहैत छी। मुदा एखन विकल्पक आभाव मे सभ जन एकर प्रयोग क' कऽ समस्त सोशल मिडिया के मिथिलाक्षर संऽ छाईर दियऊ। कम्प्यूटर मे आचार्य श्री विनय झा जी द्वारा निर्मित लेखपट्ट सर्वोत्तम अछि व परांपरागत टाईपिंग विधि के बचेबाक सर्वोत्तम साधन अछि। सादर...

विमर्शः छठम

पोस्ट : सविता झा खान

July 15 / 10:55 PM

दिल्ली मे मैथिली आइ जहन मिथिला बाढ़ि के विभिषिका सं जुझि रहल अछि तहन दिल्ली मे मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा मैथिली भाषाक मादे किछु सकारात्मक घोषणा सब कैल गेल, सुखद अछि परन्तु ओकर क्रियान्वयन आवश्यक, आशा करैत छी जे इ मात्रे एक चुनावी स्टंट नै साबित भ' जाय। मैथिली मचान के दिस सं एक समर्पित मैथिली शोधकेंद्र के आवश्यकता पर ध्यानाकर्षण कराओल जैत, जाहि सं मैथिली आ मिथिला विषयक शोध पर गंभीरता सं काज संभव हैत। संगहि मैथिली के एक स्वतंत्र अकादमी बनेबाक दिशा मे सेहो प्रयास हेबा चाही जेकर क्रियाकलाप मैथिली भवन सं संचालित हो, मात्र टोकेनिज्म सं दिल्ली मे चतरल जाइत विशाल मैथिली समुदायक के किछु विशेष हित नै संभव थिक।

अभिषेक आनंद झाः जे बात आहां एही पोस्ट के माध्यम सं कह्लिये ओ छै सबके मौन मे लेकिन जिह्वा पर आनत कियो नै बस घोषणा के बाद पाटल धन्यवाद सं सबके वॉल।

सविता झा खानः हं हमरा गाढ़ि सुनबाक आब आदति भ' गेल अछि मुदा मांग आ दबाब बनल रहत आ अनुजवत नीरज पाठक बधाई आ मांग दुनू के संग ल' क' साकांक्ष रहता से आशा अछि, ओ बुझनुक लोक छथि। आ घोषणा केने जेता कत? बगले मे रांटी घर छन्हि, कुनु कि नीरव मोदी आ विजय माल्या छथि जे विदेशक बाट धरताह।

अभिषेक आनंदः एकदमे नीरज पाठक भैया एही काज के लेल निसन्देह बधाई के पात्र छैथ कियाक त' जं इ घोषणा सुनबाक मऔका भेटलैय त' ओ सिर्फ़ नीरज पाठक के प्रयास सं।

सविता झा खान: हं महती भार लेलैथ, अत्यंत महत्वपूर्ण अछि तें न आशीर्वाद संग मैसेज सेहो देलियैन जे बाउ बड्ड नीक खबरि सुनबाक मौका देलौं, संगीत लागल आब पाछु नै हैब, डटल रहु हम सब संग छी, स्वतंत्र मैथिली अकादमी संग मैथिली भवन आ शोध केंद्र आ बाकी जे कहल से सरकार सं पुरा कराबु।

अभिषेक आनंद: सबसं पैघ गप्प जे स्वतंत्र मैथिली अकादमी कहिया? कियाक साटल अछि भोजपुरी मैथिली संग। और एकटा गप्प संग करब किछु मैथिल बुद्धिजीवी अप्पन वाल सं लिखला जे "रिफुइजी मैथिल" सुरु करबेला मैथिली पढउनी दिल्ली मे बिहार मे कहिया कहू त' हम सब दिल्ली रहनीहार रिफुइजी छी दिल्ली मे हौ दैब।

गंगेश गुंजन: मैथिलीक राजनीति मे, एक टा नव विश्वासक उम्मेद छथि-नीरज पाठक। शुभकामना।

नीरज झा: अपनेक शंका जे ई मात्र चुनावी स्टंट नै बनि जाइ एकरा चुनावी स्टंट बनय सं रोकब हमरहि अहांक काज अछि।

सविता झा खान: सैह पुरा क' रहल छी, चुनावी राजनैतिक लोकलुभावन घोषणा पर झूमि-झूमि क' डोलय हमरो अबैत अछि, पोस्ट पर पोस्ट दकचि अपन आ अपन संस्था के निजी हित साधय हमरो अबैत अछि, अकादमी मे बैसल अपन मित्र सबसं मिठगर पारस्परिक सम्बन्ध फरियाबय हमरो अबैत अछि।

आशीष चौधरी: बड़ नीक लागल इ सरकार के प्रयास जे आब दिल्ली के स्कूल मे सेहो मैथिली पढाओल जायत। इ हमरा सब मैथिल लोक लेल काफी शराहनीय कार्य बस कने इ सोच के डर लागय कि कहि इहो चुनाबी घोषणा ने रहे।

गंगेश गुंजन: सविता खान जी, सही संकेत क' रहल छथि। कार्यान्वयनक उद्यम उपाय हो।

हमरा तं भरोस अछि, हयत। ■

बाढ़ि

– अशोक झा "भोलीबाबा"

झांपल मुनल जे छल सबदिन
तकरो देलकै तुरत उघारि
वीर पुत्र, स्टार, विभूति,
रत्न, विधायक, सुनता गाड़ि,

कत दिन फूसि बाजि परबोधव
ठकल ठकायल मैथिल नर-नारि
त्रस्त करै महगी बैसारी
कखनो रौदी, कखनो बाढ़ि

दहा गेलै नेना भुटका कत्ते
ध्वस्त भेलै सब घर दुवारि
हकन कनै छथि माय मैथिली
देखि दशा मैथिलक चुप्पी मारि

जक्कर संतति शेष भेलै कहु
कोना नै ओकरा उठै जुआरि?
माय बाप तकिते रहि गेलइ
डूमल कतेक अबोध सुकुमारि

हे मिथिलेश सकल गुण आगर
अछि आग्रह पुनि लेब विचारि
बांचत माथ पाग किन्नहु नहि
धोती खोलि लोक देत खिहारि

समय रहैत जॅं नहि चेतलौं त
लागत मुंह अहींक चुनकारि
गर्दनि गमछा बान्हि अहांके
लोक जखन देत पीठ ततारि।

संपर्कः पिनाइकेल इंटरप्राइजेज प्रा. लि., द्वितीय तल, कोलकाता-01
मो. : 9903110031
ईमेल : ashokjha519@gmail.com

एहि बरषक बाढ़ि

– गिरिजा नन्द मिश्र

कहु जायब कतय,
डूबल घर द्वार यौ।
कनि आबि के तं,
सुधि लिय सरकार यौ।।
बचल ने देखु ,
खेत खलिहान।
डूबि गेल देखु ,
अपनो दलान।
आफत मे जान,
डालि देलैन्ह देखु,
कमला कोशी धार यौ।
कहु कतय जायब,
डूबल घर द्वार यौ।।
मालो मवेशी सब,
देखु बहि गेल।
नेना भूटका के,
सांसत आबि गेल।
खान पानक नहि,
देखु ठेकान यौ।
जिनगी उपासल,
देखु ठाढ़ यौ।
कहु कतय जायब
डूबल घर द्वार यौ।।
ऊपर सं देखु,
बरखा रिमझिम।
बिजुरी चमकै,
दिन राति चमचम।
गर्जन तर्जन,
दिल धड़काबय,
लागय ये देखु,
जिनगी पहाड़ यौ।
कहु कतय जायब,
डूबल घर द्वार यौ।।

संपर्क : टीचर्स कॉलोनी, रजनी चौक, पूर्णिया बिहार-854301
मो : 8789040251

बथान (एनिमल फार्म)

जॉर्ज ऑर्वेल
अनुवाद : विनीत कुमार झा

एखन धरि अहां पढ़लहुं जे कोना बथान मे सं मनुख सभके भगा देल गेल आ माल-जालक राज भेल। नेपोलियन एकदम सं ओहि बथानक नेता भ' गेल। 'इंग्लैण्डक माल-जाल' नामक कविता सभ कियो गाबैत छल। पवनचक्की बनि गेल। जॉर्ज आर्वेलक प्रसिद्ध उपन्यास 'एनिमल फार्म' केर सातम खंडक धरि अनुवाद पछिला अंकमे प्रस्तुत छल। दशम खंडक अनुवाद प्रस्तुत अछि।

कतेक बरख बीत गेल। मौसम आयल आ गेल। अल्पजीवी मालजाल अपन जीवन-लीला ख़त्म क' देलक। एक बेर एहन समय आयल जे जखन क्लोवर, बैंजामिन, कारी कव्वा मोसेस आ किछु सुग्गैरक सिवाय केकरो पता नै छल जे बगावत के पहिने के दिन केहन छल।

मुरियलक देहांत भ' गेल छल, ब्लूबैल, जेस्सी, पिंचर तीनू नै रहल। ओ देशक कोनो दोसर भाग मे कोनो पियक्कड़क घरमे मरल छल। स्नोबॉल के लोक बिसुरि गेल छल। ओकरा बारे मे सिर्फ हुनके सभके ख्याल छल जे हुनका जानैत छल। क्लोवर आब बूढ़, मोट घोड़ी छल, जेकर जोड़मे दर्द उठैत छल, आ आंख हमेशा नम रहैत छल। ओ रिटायरमेंटक उम्र दू बरख पहिने पूरा क' लेने छल, मुदा स्थिति आब ई छल जे आय धरि कोनो माल-जाल के रिटायर नै कयल गेल छल। सेवानिवृति भ' चुकल माल-जालक लेल बथानक एक कोना अलग राखैक योजना कहिया सं अनठा देल गेल छल। नेपोलियन आब कोनो डेढ़ सौ पौंडक वयस्क बधिया नै कयल गेल सुग्गैर छल। स्क्वीलर एत्तेक मोट भ' गेल छल जे आंख खोलि के मोश्किल सं देख पाबैत छल। सिर्फ बूढ़ बैंजामिन पहिने जकां छल। थोबड़क लग ओकर रंग कनि उज्जर भ' गेल छल। बॉक्सरक मौतक बाद ओ पहिने सं बेसी उदास, चिड़चिड़ा आ चुप रहय लागल छल।

आब बथान पर कतेक नव प्राणी आबि गेल छल। हालांकि ई बढब एतेक बेसी नहि छल, जतेक शुरू के बरख मे उम्मीद कयल गेल छल। जन्मय बला कतेक प्राणीक लेल बगावत एकटा छाहीं सन परंपरा छल, जे मुंहजबानी एक-दोसर सं हुनका धरि चलल आयल छल। किछु एहन प्राणी सेहो छल जे कीन के आनल गेल छल, जे एतय आबय सं पहिने एहन कोनो घटना के जिक्र नै सुनने छल। आब बथान मे क्लोवरक अलावा तीन टा घोड़ा आउर छल। ओ हट्टा-कट्टा शानदार प्राणी छल, काज करहि के पुछैत लागैत छल आ नीक संगी छल, मुदा छल कामचोर। ओकरा बगावत के आउर पशुवादक सिद्धांत क' ल' क' किछु बताओल जायत छल, ते ओकरा ओ स्वीकार क' लैत छल। ओ क्लोवर के कोनो गप टालैत नै छल। ओ ओकरा परत माय जेहन आदर राखैत छल, मुदा एही गप मे शक छल जे ओकर सिर-पाइर किछु बुझैत छल की नै?

आब बथान बेसी संपन्न आ नीक सं संचालित छल। एही मे आब मिस्टर विलकिंगटन सं कीनल दू टा खेत जोड़ि के एकरा आउर पैग क' लेल गेल छल। पवनचक्की के, आखिरकार, नीक सं पूरा क' लेल गेल छल। बथान मे आब आपन एकटा थ्रेशिंग मशीन आ सूखल घास काटय के मशीन सेहो छल। कतेक नव मकान आब बथान सं जुड़ि चुकल छल। व्हिंपर अपना लेल एकटा टमटम कीन लेने छल। पवनचक्की के बिजली पैदा करैक लेल इस्तेमाल नै कयल गेल छल। ओकरा सं अनाज दररल जायत छल, लाभक रूप मे बड पैसा भेंट जायत छल। आब मालजाल एकटा आओर पवनचक्की बनाबैक लेल जुटल छल। ई बताओल गेल जे जखन ई पूर्ण भ' जायत ते एकरा मे डायनेमो लगायल जायत। मुदा ओ विलासिता जेकर कहियो स्नोबॉल पाठ पढाउने छल आ सभक थान मे बिजली, गरम आ ठार पानि सप्ताह मे तीन दिन आओत, के सपना देखाओल छल, आब ओकर चर्चा कियो नै करैत छल। नेपोलियन यैह कहि के एही विचार के त्यागि देने छल जे ई पशुवादक भावना के खिलाफ अछि। ओकर कहब छल जे असल खुशी काज करहि सं आ थोड़बे मे गुजारा करहि मे अछि।

संपर्क : ग्राम+पोस्ट: आनंदपुरा, भाया: ग्वालपाड़ा, जिला: मधेपुरा, बिहार-852115
मो. 9911364316

पता नै कियै, एहन लागल जे मालजाल के खुद अमीर बनाबैक बिना ई बथान पहिने अमीर भ' गेल अछि। हां, एही बीच सुग्गैर आ कुक्कुर जरूर अमीर भ' गेल छल। शायद एकर कारण आंशिक रूप सं इहो भ' सकैत छल जे ओतय बड़ रास कुकुर छल। एहन नै छल जे ओ प्राणी, अपन फैशन के बाद काज नै करैत छल। ओहो ठाम, जेहन की स्क्वीलर बाजय मे नै थाकैत छल, बथानक देख-रेख के आ संगठन के बेहिसाब काज छल। एही मे बेसी काज ते एहन छल जेकरा बुझि पायब माल-जालक बस के नै छल। उदाहरण के लेल, स्क्वीलर हुनका बताबैत छल जे सुग्गैर के हर दिन फाइल, रिपोर्ट, कार्यवृत्त, ज्ञापन मन कतेक रहस्य बला चीजक संग कतेक रास घंटा दिमाग खपाबय पड़ैत अछि। ई पैघ-पैघ कागज होयत अछि, जाहि मे ऊपर सं नीचां धरि लिखि के कारि करय पड़ैत अछि। जहिना कागज पूरा भरि जायत छल, ओकरा भट्टी मे जरा देल जायत छल। स्क्वीलर कहैत छल, ई बथानक कल्याणक लेल सबसं बेसी महत्वपूर्ण काज होयत अछि। मुदा एकर बादो नै ते सुग्गैर आ नै कुक्कुर अपन मेहनत सं अपना लेल किछु फसल उपजाबैत छल आ एहन जीव ओतय भरल पड़ल छल। हुकर खुराक सेहो हमेशा नीक रहैत छल।

जतय धरि आओर के सवाल छल, ओ जतेक जानैत छल, हुनकर जिनगी हमेशा एहने छल। ओ अक्सर भूखल रहैत छलाह, ओ पुआल पर सुतैत छलाह, खेत मे मेहनत करैत छलाह, सर्दी मे हुनका ठार सताबैत छलाह, गर्मी मे माछी तंग करैत छल। कखनो-कखनो किछु बूढ़ प्राणी अप्पन मिटायल याददाश्त के टटोलैत आ ई तय करैक कोशिश करैत छल जे तखौनका दिन, जखन बगावत भेल छल, जोन्स के निकालल बेसी समय नै भेल छल, चीज नीक भेल या अघलाह वा आब नीक अछि व ख़राब? हुनका किछु ख्याल नै आबैत छल। आइ हुनकर जिनगी मे किछु एहन नै छल जकर ओ तुलना क' सकैत छल, हुनका लग स्क्वीलर की अंतहीन सूची के अलावा भरोसा करहि के लेल किछु नै छल। सूची सभटा चीज के नीक बनाबैत चलैत छल। मालजाल के एही समस्या के कोनो समाधान नै भेटैत छल। ओहिनो, आब हुनका लग एही सभ चीज के गमाबैक समय नै छल। सिर्फ बूढ़ बैंजामिन दावा करैत छल जे हुनका अपन नम्हर सन जिन्दगीक छोट-छोट सन गप ख्याल अछि आ ओ बताबैत छल जे ओकरा पता अछि जे चीज नै कहियो नीक छल आ नै कहियो बेजाय। ओ नीक आ बेजाय नै भ' सकैत अछि। ओ कहैत छल-भूख, तकलीफ आ निराशा जीवन के नै बदलै बला नियम अछि।

एकर बावजूद मालजाल कहियो आस नै छोड़लक। इहे टा नै, ओ एक पलक लेल बथानक सदस्य हेबाक सम्मानक सुविधाक भावना नै बिसरलक। एखनो पूरा देश मे इंग्लैंड भरि मे हुनकर असगरे बथान छल, जेकर स्वामी आ संचालक मालजाल अपने छल। ओही मे कोनो भी छोट सं छोट प्राणी, एतय धरि जे दस-बीस मील दूर के बथान सं कीनल गेल ओरनी सेहो एही पर गर्व करब नै बिसरैत अछि। जखन ओ बंदूकक गर्जन सुनैत छल, ऊपर झंडा फहराबैत देखैत छल, ते छाती गर्व सं फूलि के कुप्पा भ' जायत छल। हुनकर गप हमेशा वीरता सं भरल ओही पुरना दिस घूरी जायत छल जखन जोंस के खदेड़ल गेल छल।

सात धर्मादेश लिखल गेल छल। ओ महान लड़ाय, जाहि मे हमला करय बला मनुख के हरायल गेल छल। कोनो भी पुरना सपना के त्यागल नै गेल छल। मालजालक गणतंत्र, जेकर भविष्यवाणी मेजर केने छल। जखन इंग्लैंडक हरियर खेत पर मनुखक पयर नै पड़त, तखने विश्वास कयल जा सकैत अछि। कोनो नै कोनो दिन ई आयत, इहो भ' सकैत अछि। एही समय जीबै बाला कोनो प्राणी के जीवनकाल मे नहियो आबय, मुदा ओ दिन आयत जरूर। एतय धरि जे 'इंग्लैंडक माल-जाल' गीतक धुन सेहो शायद एतय-ओतय चुपचाप सं गुनगुना देल जायत छल। किछु हुए, ई सच्चाई छल जे बथानक सभटा एही धुन के जानैत छल, भले ही केकरो मे एकरा जोर सं गाबैक हिम्मत नै छल। इहो भ' सकैत छल जे हुनकर जीवन कठिन छल आ हुनकर सभटा उम्मीद खरा नै उतरल छल, मुदा ओ नीक सं जानैत छल जे हुनकर जीवन आउर माल-जाल जेना नै अछि। जौं ओ भूखल सुतैत अछि ते ऐना कोनो तानाशाह मनुख के खुवाबैक कारण नै अछि। जौं ओ हाड़तोड़ मेहनत करैत अछि, ते हुनकर ई मेहनत कम सं कम हुनका अपना लेल होयत अछि। ओही मे सं कोनो भी प्राणी दू टांग पर नै चलैत अछि, कोनो भी प्राणी दोसर प्राणी के मालिक नै कहैत अछि। सभ माल-जाल बराबर अछि।

गर्मी के शुरू मे एक दिन स्क्वीलर भेड़ के अपन पाछां आबैक लेल कहलक। ओ हुनका सभ के बथानक फालतू जमीन दिस ल' गेल। ओतय सफेडाक बनल जंगल-झाड़ उगल छल। भेंड़ सभ ओतय, स्क्वीलरक देखरेख मे पूरा दिन पत्ता चरैत बितौलक। सांझ के स्क्वीलर असगरे फार्म हाउस घुरी आयल। ओ बताउलक जे चूंकि मौसम गरम अछि, ताहि सं ओ भेंड़ के ओतय रहि जाय लेल कहि देने अछि। आखिर भेल ये जे भेंड़ पूरा हफ्ता ओतय रहल आ एही काल हुनका सभ के कियो देखबो नै केलक। दिन के बेसी समय स्क्वीलर हुनके सभक संग गुजारैत छल। ओ बताउलक जे हुनका सभके एकटा नव गीत सिखायल जा रहल अछि, जेकरा लेल प्राइवेसीक जरूरत अछि। भेंड़ एखन घुरल छल। एकटा नीक सांझ जखन माल-जाल अपन काज खत्म केने छल आ घुरी के बथानक मकान दिस आबि रहल छल, ते अहाता दिस सं घोड़ा के जबरदस्त हिनहिनायब सुना देलक।

आश्चर्य सं माल-जाल बाट पर ठार भ' गेल। ई क्लोवरक हिनहिनाहट छल। ओ दोबारा हिनहिनैलक। सभटा माल-जाल सरपट दौड़ल आ अहाता मे जा पहुंचल। तखन हुनका पता चलल जे क्लोवर के देखि लेने छल।

एकटा सुग्गैर अपन पछुलका दू टांगक सहारा चलि रहल छल।

हां, ई स्क्वीलर छल। बेकार जेना, एही पोजीशन मे अपन भारी-भरकम देह के सम्हारि नै पाबैक कारण, मुदा एकदम सही संतुलन मे, ओ अहाता मे चहल-कदमी क' रहल छल। एकहि पल बीतल छल जे बथानक दरवाजा सं सुग्गैरक एकटा नम्हर पांति निकलल। सबके सब अपना पांछां टांग पर चलि रहल छल। किछु एक-दोसर सं नीक जकां चलि रहल छल, एक-दू हल्का-सं लड़खड़ा रहल छल, जेना ओकरा सभके लाठी के सहारा भेंटि जेतिये ते नीक हेतिये, मुदा ओकरा मे से सभ अहाता के चक्कर नीक जेना लगा लेने छल। तखने कुक्कुर के जोर-जोर सं भूकैक आवाज आ करिया मुर्गाक तेज कुकडू-कूं सुनाई देलक। आब बाहर आयल नेपोलियन, राजसी तरीके सं सीधा तानल, बाम-दहिन घमंड सं देखैत आ चारू कात सं कुक्कुर सं घिरल।

ओ अपन पयर मे एकटा कोड़ा लेने छल।

श्मशान जकां सन्नाटा पसरि गेल। आश्चर्य, डरल आ एक-दोसर सं सटैत माज-जाल सुग्गैर के नम्हर पांति के अहाता मे रकम-रकम टहलैत देखलक। एहन लागैत छल, जेना धरती उलटि-पलटि गेल अछि। तखने ओ पल आयल जखन ओ पहिलुक झटका सं उबरल आ कुक्कुर के आतंकक बावजूद कतेक बरख सं कहियो कोनो शिकायत नै करबाक, कहियो चाहे किछु भ' जाय, कहियो मीन-मेख नै निकालैक आदतक बावजूद जखन ओ विरोधक किछु शब्द कहैक चाहै होयत, तखने ठीक ओही काल कोनो संकेत देल गेल हुए, आ सबटा भेंड़ मिमियायब शुरू क' देलक।

चारि टांग नीक, दू टांग बेसी नीक
चारि टांग नीक, दू टांग बेसी नीक
चारि टांग नीक, दू टांग बेसी नीक
चारि टांग नीक, दू टांग बेसी नीक

ई राग पांच मिनट धरि बिना रुकल चलैत रहल। जा धरि भेंड़ गोनाय बंद केलक, विरोध मे किछु बाजबक मौका जा चुकल छल। सुग्गैर मार्च करैत बथान मे जा चुकल छल।

बैंजामिन के लागल जे ओकर कान्हा सं कियो अपन नाक छुअने अछि। ओ अगल-बगल देखलक। क्लोवर छली। ओकर बूढ़ आंखि पहिने सं बेसी धुंधला लागि रहल छल। एक शब्द बिना बाजल क्लोवर रकम सं ओकर अयाल के सहलैलक आ ओकरा पैघ बखार मे आखिर मे ल' गेल, जतय सात धर्मादेश लिखल छल। एक-दू मिनट के लेल ओ उज्जर रंगक शब्द वाली डामरक भीत के घुरैत ठार रहल।

"हमर नजरि कमजोर भ' गेल अछि, ओ आखिर बाजल, ओहिनो जखन हम जवान रहि, तखनो ऊपर लिखल शब्द के कहां पढि सकैत छलहुं। मुदा हमरा एहन लागि रहल छल जे भीत किछु फराक जेना लखाह द' रहल अछि? की सात धर्मादेशक अलावा किछु आओर लिखल नै अछि? ई एही तरहे छल:

''सभ मालजाल बराबर अछि
मुदा किछु मालजाल
दोसर मालजाल सं बेसी बराबर अछि।"

ओकर बाद ते अगिला दिन बथानक काज के निगरानी करहि बला सभ सुग्गैर अपन-अपन पयर मे कोड़ा थामने छल ते केकरो अजीब नै लागल। ई पता लागय के बाद केकरो आश्चर्य नै भेल जे सुग्गैर अपना लेल एकटा रेडियो कीन लेने अछि आ ओ टेलीफोन लगबाबैक व्यवस्था क' रहल अछि आ ओ 'जॉन बुल', 'टिट-बिट्स' आ 'डेली मिरर' मंगाबैक शुरू क' देने अछि। एकरो सं आश्चर्य नै भेल जेखन नेपोलियन अपन मुंह मे पाइप दबैने बथान मे चहलकदमी करैत लखाह देलक। तखनो आश्चर्य नै भेल जखन सुग्गैर मिस्टर जोन्सक आलमारी सं कपड़ा निकालि के पहिर लेलक। नेपोलियन खुद करिया कोट, चुस्त जांघिया आ चमड़ाक पैंट चुनने छल जखन कि ओकर पसंदीदा सूअरनी झिलमिल रेशमक ड्रेस पहिर के निकलल। ई कपड़ा मिसेज जोंस रवि दिन पहिरैत छल।

एक सप्ताह बाद, दुपहरक काल, बथानमे कतेक रास कुक्कुर गाड़ी आबि गेल। पड़ोसी किसानक एकटा प्रतिनिधि मंडल निरीक्षण दौरा करैक लेल बजाओल गेल छल। हुनका सभके पूरा बाड़ा मे घुमाओल गेल। ओ जे किछु देखलक ओकर खूब बड़ाई भेल। खासके पवनचक्की के खूब पसीन कयल गेल। माल-जाल शलजम के खेत मे घास-फूस साफ़ क' रहल छल। ओ पूरा मन सं काज करैत रहल। शायद कियो जमीन सं अपन माथ उठौलक। हुनका नै पता छल जे सुग्गैर सें बेसी डरबाक अछि वा मेहमान मनुख सं।

ओहि राति बथान सं सांझक काल जोर-जोर सं हंसैक आ गाबैक-बजाबैक आवाज आबैत रहल। आ अचानक मिलल-जुलल स्वरक आवाज सुनि के माल-जाल उत्सुकता सं ठगल गेल। आब चूंकि माल-जाल आ मनुख पहिलुक बेर समानताक स्तर पर मिल रहल अछि, ओतय भीतर की भ' रहल होयत। सभ एक्के राय सं एकदम दबल पांव चलैत बथानक बगीचा मे जा पहुंचल।

गेट पर ओ कनि देर के लेल रुकल। ओहि मे सं आध डरल छल-भीतर जाय की नै? मुदा क्लोवर हुनका सभके भीतर ल' गेल। पंजा के बल ओ घर धरि पहुंचल। जे माल-जाल कद-काठी मे उंच छल, ओ डाइनिंग रूमक खिड़की मे सं झांकलक। ओहि ठाम एकटा नम्हर टेबुलक चारू कात छह टा किसान आ बेसी सम्मान प्राप्त सुग्गैर बैसल छल। नेपोलियन अपने टेबुल पर सबसें बेसी

सम्मान बला सीट पर जमल छल। सुग्गैर अपन कुर्सी पर बिलकुल आराम सं बैसल छल। तो ताशक खेल मे आनंद ल' रहल छल। ओना कनि काल लेल खेल रुकल छल। ई शराबक जामक लेल रुकल छल। एकटा पैघ जग सभक बीच घुमायल जा रहल छल आ सभ अपन-अपन मग फेर सं भरि रहल छल। कियो ध्यान नै देलक जे आश्चर्यचकित माल-जाल सभ खिड़की सं घूरि रहल अछि।

फॉक्सवुडक मिस्टर विलकिंगट, हाथमे अपन मग ल' के ठार भेल। ओ बाजल जे किछु काल मे ओतय मौजूद लोक के जाम टकराबैक लेल, टोस्ट करैक लेल ओ अनुरोध करत। मुदा ऐना करैक पहिने ओ किछु शब्द कहैक जरूरत महसूस क' रहल अछि।

ओ बतौलक जे ओ विश्वास करैत अछि, जे एतय उपस्थित छथि, हुनका सभके ई महसूस करैत बड़ संतोष भ' रहल अछि जे आय आपसी अविश्वास आ गलतफहमीक एकटा नम्हर युग समाप्त भ' रहल अछि। एकटा समय छल, जखन नै केवल ओ खुद, आ एही सभामे मौजूद कतेक आओर महानुभाव एहि तरहक भावना राखैत छल, मुदा ओहि काल ते बथानक सम्मानीय स्वामी के, ओ ई ते नै कहत जे विद्वेष सं मुदा शायद हुनकर मनुख पड़ोसी द्वारा किछु हद धरि संदेहक नजरि सं देखल जायत छल। दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटैत रहल। गलतफहमी पसरैत रहल। ई महसूस केल जायत रहल जे सुग्गैरक स्वामित्व मे आओर ओकरा द्वारा संचालित बथान मे किछु अजीब गप अछि आ एकरा सं पास-पड़ोस पर बेचैन करय बला प्रभाव पड़त। बिना जांच-पड़ताल केने कतेक किसान ई मानि लेने अछि जे एही तरहक बथान पर लंपटता आ अस्त-व्यस्तक आलम होयत। हुनका एही गपक चिंता छल जे एकरा सं हुनका अपनेक माल-जाल आ एतय धरि जे मनुख कर्मचारी पर सेहो की असर होयत। मुदा आब ई सभटा शंका दूर भ' गेल अछि। आइ ओ आओर ओकर संगी बथान मे आयल अछि। ओ अपन आंखि सं एकर चप्पा-चप्पा के मुआयना केने अछि। आओर की पाओलक? नै केवल बेसी नव तरीका सं देखलक मुदा एतेक अनुशासन आ व्यवस्था सेहो पाओलक, जे कतेको रास किसानक लेल मिसाल भ' सकैत अछि। हुनका विश्वास अछि जे ओकर ई कहब सही होयत जे बथानमे निचला तबकाक मालजाल देश मे कोनो मालजालक तुलना मे बेसी काज करैत अछि आ कम खुराक पाबैत अछि। दरअसल, ओ आ ओकर संगी मेहमान एतय कतेक रास एहनो चीज देखलक जे ओ अपन बथान मे तत्काल अपनाबय चाहैत होयत।

ओ बाजलकि जे अपन गप मे एक बेर फेर एही बात पर जोर दैत समाप्त करैक चाहब जे बथान आ ओकर पड़ोसी के बीच जे मैत्रीभाव रहल, ओ बनल रहबाक चाही। सुग्गैर आ मनुखक बीच कोनो भी तरहक हितक टकराव नै कहियो रहल आ नै रहबाक चाही। हुनकर संघर्ष आ हुनकर तकलीफ के जेहन अछि। की श्रमिक समस्या सभ ठाम एक सन नै अछि? ओतय साफ-साफ लागल जे मिस्टर विलकिंगटन मालजाल समुदाय पर बड सावधानीपूर्वक तैयार करल गेल कोनो जुमला उछलाय चाहैत छल, मुदा एक पलक लेल ओ खुशी सं एतेक बेहाल भ' गेल छल जे कहि नै सकल। ओ हंसैत-हंसैत दोहरा भ' गेल, ओकर चिबुक पर सलवट पड़ि गेल। बड़ देर धरि हंसैत रहलाक बाद कोनो तरहे ओ बाजब शुरू केलक, 'जौं अहां लग निचला तबका के माल जाल अछि, ते हमरा लग अपन निचला वर्ग अछि। एही कटाक्ष सं टेबुल पर ठहाका लागल, आ मिस्टर विलकिंगटन एक बेर फेर सुग्गैर के कम राशन आ काजक नम्हर घंटा आ बथान मे एक दिस सं गायब लाड़-प्यार पर बधाई देलक।

आओर आब ओ अंत मे बाजल, 'ओ सबसं अनुरोध करैत अछि जे सभ अपन पयर पर ठार होऊ आ देखू के हुनकर गिलास भरल अछि। बंधुगण मिस्टर विलकिंगटन अपन गप ख़त्म केलक, हम अहांके टोस्ट दैत छी, बथानक समृद्धिक लेल।'

सभ उत्साह सें थोपड़ी बजैलक आ पयर सं जमीन थपथपैलक। नेपोलियन एत्ते अभिभूत भेल जे ओ अपन ठाम सं उठल आ टेबुल लग आबि के मग खाली करहि सं पहिने मिस्टर विलकिंगटनक मग सं टकरैलक। जखन थोपड़ीक गड़गड़ाहट कम भ' गेल, ते नेपोलियन, जे एखन धरि आपन पयर पर ठार छल, बतौलक जे ओकरा सेहो दू शब्द कहबाक अछि।

नेपोलियनक पिछला भाषणक तरहे इहो संक्षिप्त भाषण प्रासंगिक छल। ओ इहो बाजल जे ओकरा प्रसन्नता अछि जे गलतफहमीक युग समाप्त भ' गेल अछि। बहुत दिन धरि अफवाह पसारल जायत रहल। ओकरा लग ई मानबाक कारण अछि, ओ अफवाह कोनो शत्रु द्वारा पसारल गेल, खुद ओ आ ओकर संगीक दृष्टिकोण किछु विनाशकारी आ एतय धरि जे क्रांतिकारी भ' रहल अछि। हुनका पर आरोप लगाओल जा रहल छल जे ओ पड़ोसीक बथान पर माल-जालक बीच बगावत पसारैक कोशिश क' रहल अछि। किछु सत सं फराक नै भ' सकैत अछि। हुनकर एकटा इच्छा अछि जे ओ शांति सं रहय अ अपन पड़ोसीक संग सामान्य कारोबारी रवैया बनाके राखल जाय। ओ आगू बाजलक जे ई बथान, जेकरा नियंत्रणक लेल हुनका सम्मान भेटल अछि, एकटा सहकारी उद्यम अछि। एकर स्वामित्वक कागजात जे हुनकर कब्ज़ा मे अछि, सुग्गैरक सम्पति अछि।

ओ बाजल जे ओ ई नै मानैत अछि जे पुरना संदेह मे सं आब किछु बाकी अछि। बथानक रूटीन मे किछु दिन पहिने एकटा परिवर्तन कयल गेल अछि। एकरा सं आपसी विशवास के आओर बेसी बढाबय मे मदद करबाक चाही। आइ धरि बथान मे एकटा मूर्ख बला परंपरा चलल आबैत छल जे माल जाल एक-दोसर के 'कॉमरेड' कहि के संबोधित करैत छल।

एकरा समाप्त करबाक अछि। एकटा अजीब परंपरा चलल आबि रहल अछि, जेकरा बारे मे, पता नै ओ कोना शुरू भेल, जे सभ रवि दिन भोरे बगीचे मे एकटा मस्तूल पर कील सं ठुकल एकटा सुग्गैरक खोपड़ीक आगू सं मार्च करैत सभ जायत छल, एकरो ख़त्म कयल जा रहल अछि। खोपड़ी के पहिने जमीनमे गाड़ि देल जायत अछि। ओकर मेहमान एकटा चबूतरा पर लहराबैत झंडा देखने होयत। जों देखने होयत ते ओ शायद इहो नोट केने होयत जे पहिने एही पर जे उज्जर सुम आ सींग पेंट छल, ओकरा मेटा देल गेल अछि। आब ई सिर्फ सादा हरियर झंडा होयत।

ओ बाजल जे मिस्टर विलकिंगटनक शानदार आ पड़ोसी भाव सं देल गेल भाषणक' लेल एक्के टा एतराज अछि। मिस्टर विलकिंगटन लगातार 'बथान' या 'एनिमल फार्म' केर जिक्र केने अछि। ओ एही बात के नै जानैत छल, कियैकि ओ नेपोलियन, आब पहिलुक बेर घोषणा क' रहल छल जे नाम बथान- 'एनीमल फार्म' के ख़त्म क' देल जाय। अब बथान के 'मैनर फार्म' के नाम सं जानल जायत। ओकरा विश्वास अछि जे एकर सही आ मूल नाम यैह अछि।

'हे हौ लोक सभ,' नेपोलियन अपन गप ख़त्म केलक, 'हम पहिने जंका अहां सभके टोस्ट देब, मुदा फराक तरीका सं। अपना गिलास लबालब भरि लिअ। हे हौ लोक सभ, ई रहल हमर टोस्ट : मैनर फार्मक समृद्धिक लेल।"

पहुलक जकां दिल खोलि के थोपड़ी बजाओल गेल आ मगक आखिर बून धरि खाली क' देल गेल। मुदा जखन ओतय सं माल जाल एही दृश्य के देखि रहल छल, ते हुनका लागल जे कोनो आश्चर्यजनक घटना घटि रहल अछि। सुग्गैर के चेहरा पर किछु भ' रहल छल। क्लोवरक धुंधला नजरि एक-चेहरा सं दोसर पर टिकैत रहल। केकरो चेहरा पर पांच ठुड्डी छल ते केकरो चेहरा पर चारि आ केकरो के तीन। मुदा ई की जे पिघलल आ बदलल लागि रहल छल। जखन वाहवाही के शोर थमि गेल, ते सब अपन-अपन पात उठौलक आ जे खेल रुकि गेल छल, ओकरा फेर शुरू कयल गेल। मालजाल चुपचाप ससरि के चलि गेल।

मुदा ओ एखन बीस हाथ दूर नै गेल छल कि अचौके रुकि गेल। बथान सं चिकरैक आवाज आबि रहल छल। ओ घुरि के दौड़ल आ फेर सं खिड़की सं ताकय लागल। हां, भीतर बड़ भयंकर लड़ाइ चलि रहल छल। हल्ला-गुल्ला, टेबुल के थाप, तेज शक बला आंखि, मार-पीट बला मनाही चलि रहल छल। एही सबटा मोश्किलक जड़ि शायद ई छल जे नेपोलियन आ मिस्टर विलकिंगटन, दुनू एकहि संग हुकमक इक्का चलि देने छल।

बाहर चिकरब तामस मे छल आ सबटा चिकरब एक जकां छल। कोनो सवाल नहि जे सुग्गैरक चेहरा के आब की भ' गेल छल। बाहर ठाड़ प्राणी कखनो सुग्गैर के देखैत, कोनो लोक के, फेर लोक सं सुग्गैर के, मुदा आब ई कहब असंभव भ' चुकल छल जे कोन चेहरा केकर अछि। ■

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

पाठकगणसं अनुरोध

'तीरभुक्ति' मिथिला आओर अहि सं जुड़ल मुद्दा पर मैथिलीमे प्रकाशित हुअय बला जर्नल अछि। अहिमे मैथिली आओर मिथिला सं जुड़ल अकादमिक विशेषज्ञ, लेखक, पत्रकार आ विश्लेषक के शोध रचना पढ़ल जा सकैत अछि। 'तीरभुक्ति' के अहां के सहयोग आ समर्थन भेटैत रहय, अहिमे 'तीरभुक्ति' के सफलता अछि। हम चाहैत छी जे अहां अपन अहि जर्नल के आओर बेसी लोकप्रिय बनाबैक लेल मिथिला, मैथिली आ अहि सं जुड़ल विषय पर रूचि राखय बला पाठक के 'तीरभुक्ति' के वार्षिक सदस्यता लेबाक लेल प्रेरित करी। 'तीरभुक्ति' के सालमे चारि टा अंक प्रकाशित होयत।

मूल्यः एक प्रतिः 25 टाका,
नियमित सदस्यताः
पांच वर्ष (20 अंक): 500 टाका

*(पत्रिका डाक वा कूरियर माध्यमे वा रजिस्टर्ड एयरमेल सं पठाओल जायत, जेकर शुल्क अहि मूल्यक संग जुड़ल अछि) सदस्यता लेल अपन पूरा नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नंबर चेक/ ड्राफ्ट सहित **'अखिल भारतीय मिथिला संघ'** केर नामे कार्यालयक पता पर पठाबी वा*
teerbhuktimaithili@gmail.com
पर मेल करी।

पत्राचार पता :
तीरभुक्ति, 20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001

सदस्यता क्रमांक ....

दिनांक ....

(केवल कार्यालय प्रयोग हेतु)

हम तीरभुक्तिक नियमित सदस्य बनय चाहैत छी। हमर विवरण निम्नलिखित अछि–

नाम : ....

पता : ....

....

....

मोबाइल नं. ....

उम्र : .... पेशा: ....

शिक्षा : ....

शुल्क विवरण :

☐ पांच वर्ष (500 टाका मात्र)

भुगतान :

☐ नगद (विवरण) ....

....

☐ चेक/बैंक ड्राफ्ट (विवरण) ....

....

☐ नेफ्ट (NEFT) (विवरण) ....

....

नोट : चेक/ड्राफ्ट **अखिल भारतीय मिथिला संघ** केर नामे बनाबी। NEFT करबाक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि–

बैंक खाता विवरण

नाम : अखिल भारतीय मिथिला संघ

(A khil Bhartiya Mithila Sangh)

खाता संख्या : 11084229861,

आईएफएससी कोड : SBIN0000691

एमआईसीआर कोड : 110002087

बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

शाखा : पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

तीरभुक्ति प्राप्ति स्थल

दिल्ली	:	**विजय चन्द्र झा / विद्यानंद ठाकुर** 20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9650461788, 9717539000
	:	**प्रकाश झा** 'रंगप्रसंग', राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, भगवान दास रोड, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9811774106
	:	**भास्कर ज्योति** जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, मो. 9015753660
गाजियाबाद	:	डॉ. ममता ठाकुर, मो. 9717258787
गुवाहाटी	:	प्रेमकांत चौधरी, मो. 9435342658
हैदराबाद	:	मनोज शांडिल्य, मो. 9866077693
दरभंगा	:	प्रो. भीमनाथ झा, छपकी परड़ी, लक्ष्मीसागर, मो. 9430827936
झंझारपुर	:	आनंद कुमार झा, मो. 9939041881
मधुबनी	:	सुनील कुमार झा, जानकी मैथिली पुस्तक भंडार, मो. 9473115956
मुंबई	:	विभा रानी, मो. 887970891
पटना	:	शिव पुस्तक भंडार, विद्यापति भवन, पटना, मो. 9905281145
	:	किताब कोनचर, लगिचः सदाकत आश्रम, गोसाईं टोला मुंहपर, पटना- 800010 संपर्कः 9955995509
भागलपुर	:	प्रो. केष्कर ठाकुर, मो. 9430457204
सहरसा	:	मुख्तार आलम, मो. 7004955930, 9204216204
मधेपुरा	:	अरविन्द श्रीवास्तव, मो. 9431080862
कोलकाता	:	लक्ष्मण झा सागर, मो. 9903879117
सिलचर	:	स्वाती शाकम्भरी, मो. 9213152822
सुपौल	:	केदार कानन, मो. 7004917511
रायपुर	:	मनीष कुमार झा, मो. 9425517092

अखिल भारतीय मिथिला संघक प्रकाशन अब ऑनलाइन कीनू

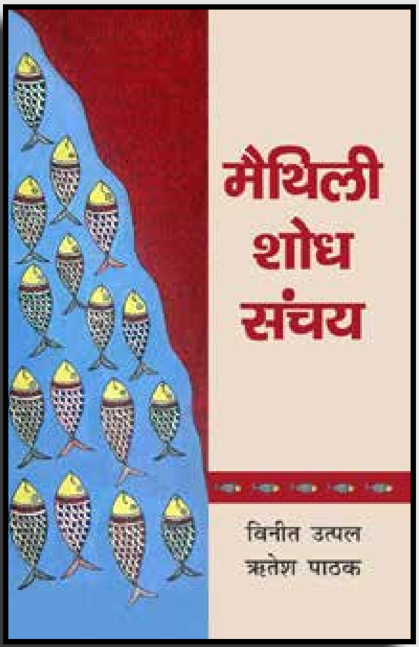

मैथिली शोध संचय

संपादन : विनीत उत्पल, ऋतेश पाठक

मूल्य : ₹ 200, पृष्ठ : 224

'मैथिली शोध संचय' पोथीमे एक दिस मिथिलाक अनमोल संस्कृतिक व्यापकता भेटत तं दोसर दिस मिथिलाक औद्योगिक विकास, मिथिलाक पृथक राज्यक अवधारणा पर सुचिन्तित विमर्श, एक दिस संविधान मे मैथिलीक प्रवेशक पछातिक दशा-दिशा तं दोसर दिस मिथिला विकास बोर्डक गतिविधिक संकेत, एक दिस मिथिलाक व्यापक लोक संस्कृतिक भव्य चित्र तं दोसर दिस मिथिलाक महान दार्शनिक उदयनाचार्यक अवदानक विस्तृत कथा, पाबनि-तिहारक विशिष्टताक संग सीता आ जनकपुरक गौरवशाली आख्यान। एहि सभक अतिरिक्त मैथिली साहित्यक अनेक विधा पर गंभीर आलेखक संग्रह सेहो पाठक-मन पर अपन गंहीर छाप छोड़बामे समर्थ होयत, से सहजहिं विश्वास कयल जा सकैत अछि। एहि शोध पोथीक स्वागत सभतरि होयत, से हमर अपन मोनक आशा थिक।

— केदार कानन

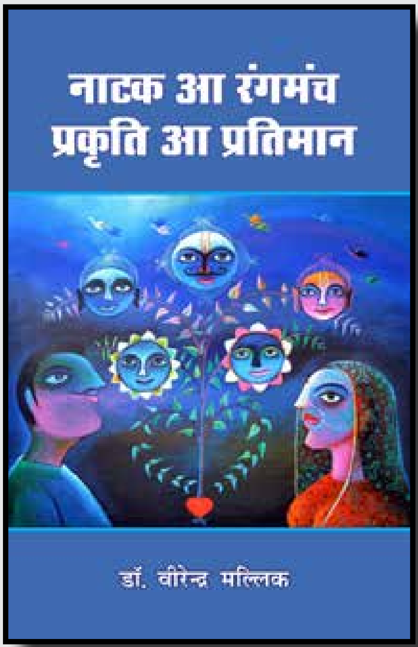

नाटक आ रंगमंच प्रकृति आ प्रतिमान

लेखक : डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक

मूल्य : ₹ 300, पृष्ठ : 260

'नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान' मैथिली नाटकक संपूर्ण परिचय दैत अछि। गामक नाटक सं ल' क' कोलकाता, दिल्ली मे होमय बला नाटकक समीक्षा सभ, नाटकक प्रकृति आ प्रतिमानक संपूर्ण दस्तावेज ई पोथी मे अछि।

— विनीत उत्पल

नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान
पोथी किनय लेल लॉन ऑन करू :
https://www.flipkart.com/natak-aa-rangmanch-prakriti-pratiman/p/itmfdpp748ztpyxx?pid=9788193952900

मैथिली शोध संचय
पोथी किनय लेल लॉन ऑन करू :
https://www.flipkart.com/maithili-shodh-sanchay/p/itmfdpqyhnytdgek?pid=9788193952917

मिथिलाक विभिन्न बाढ़िपीड़ित क्षेत्र सभमे अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा राहत सामग्रीक वितरण : किछु दृश्य

अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष पुनर्निवाचित भेला पर श्री विजय चन्द्र झा केर अभिनंदन करैत विभिन्न सदस्यगणक (ऊपर)

मिथिलाक विभिन्न बाढ़िपीड़ित क्षेत्र सभमे अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा राहत सामग्रीक वितरण : किछु दृश्य

प्रकाशक आ मुद्रक विजयचंद्र झा द्वारा अखिल भारतीय मिथिला संघक दिशसं मकान नंबर एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062 सं प्रकाशित आ जे.के. ऑफसेट, बी-278, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्लीसं मुद्रित।
संपादक : विनीत कुमार झा 'उत्पल'